समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जुलाई २००४ ♦ वर्ष ५४ ♦ अंक ७ ♦ एक प्रति १० रुपए ♦ वार्षिक १०० रुपए

असम व बिहार में बाढ़ का प्रकोप

असम में ब्रह्मपुत्र के दोनों किनारों पर बाढ़ का एक दृश्य - गौहाटी में भी पानी फैला

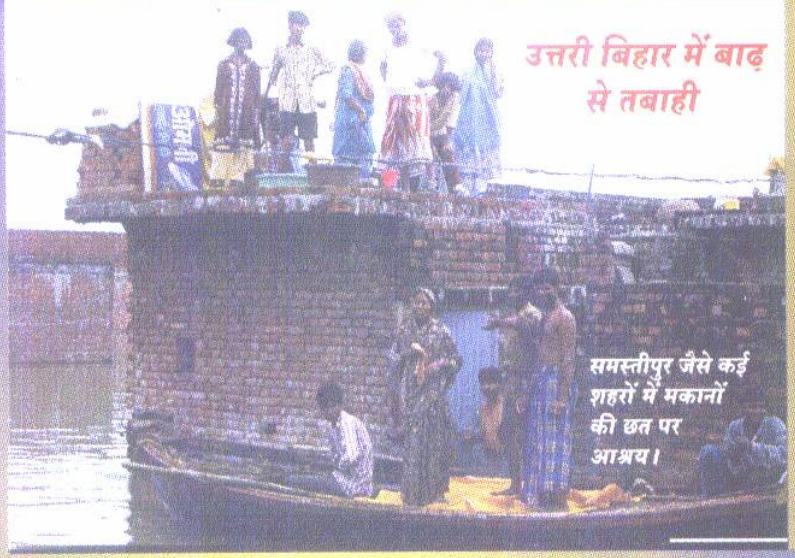

उत्तरी बिहार में बाढ़ से तबाही

समस्तीपुर जैसे कई शहरों में मकानों की छत पर आश्रय।

एक दिन अकाश गले सूं इन्द्र अर इन्द्राणी उड़ता जार्‌या हा। इंद्राणी पूछ्यो- स्वामी यो के हो रयो है ? इन्द्र जवाब दियो - जाणर के करेगी ?

दोनूं आगे चाल्या जणा एक किसान हल जोततो दीख्यो। इंद्राणी फेर पूछ्यो- स्वामी यो के होरयो है ? इंदर इन्द्राणी रे सवाल नै टालबारी कोशिश करी पण जद इन्द्राणी हठ कर लियो अर आगे कदम बढ़ाबा सूं मना कर दियो जद इन्दर कहयो के अच्छो भेष बदल के धरती पर चालबा सारूं त्यार होज्या। दोनूं उत्तर प्रदेश कानी धीरे से धरती पे उतर आया। अर किसान ने इन्दर पूछ्यो- क्यूं भाई, बरसात तो हुई नहीं, तू हल जोत रयो है, इण भांत व्यर्थ मींणत क्यूं कर रयो है ? किसान उत्तर दियो- भाई, आ बात मैं भी जाणू हूं के काल पड़गो अर म्हारे हल जोतण सूं धरती हरी-भरी होण सू रही। पण में मेरो काम भूल नहीं जाऊं ई वास्ते भीखे रे समय भी हल जोतर्‌यो है।

इन्द्र इन्द्राणी बड़े सू व्हीर हुआ और पूरब कानी चला। इन्दर सोची यो किसान आपरो काम न भूलणे खातर भीखे में भी हल जोतरेयो है। कदे में भी मेरो काम नई भूल जाऊं। वो झट बदलां ने बुला'र धरती पर घणी बरखा रो हुकम सुणायो। बादल भी उणर पीछे पीछे चला। बादल इतना बरसा कि उत्तर बिहार और असम में सार पाणी ही पाणी होगो और बाढ़ सं सवा डेढ़ करोड़ आदमी तकलीफ मं पड़गा तथा लाखां एकड़ जमीन मं फसल बरबाद हो गी। (आंशिक साभार - विणजारो)

दूसरी ओर आन्ध्र के रायलसीमा, मराठवाड़ा, विदर्भ राजस्थान व दक्षिणी उत्तर प्रदेश में अनावृष्टि से फसलें चौपट

अपना समाज अपने संस्कारों के अनुसार सभी जगह राहत कार्यों में जुटा जिसमें दिनोंदिन तीव्रता आ रही है

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक ता: २२ अगस्त को राऊरकेला (उड़ीसा) में आयोजित

If God is in the details,
you're pretty close to Heaven

MANZONI • Park Avenue • ColorPlus • parx

THE Raymond SHOP
PODDAR COURT
For the special occasion called life
18, Rabindra Sarani, Kolkata 700 001, Phone: 2225 3728/3630, Fax: 2225 3634

SURI2K4

इस अंक में

अनुक्रमणिका	३
जनवाणी	४
अ. भा. समिति की बैठक	६
अध्यक्ष की कलम से / *श्री मोहनलाल तुलस्यान*	७
उनको कोटी प्रणाम / *मुझे राह मिल गई (कविता)*	८
केन्द्रीय बजट / *श्री सीताराम शर्मा*	९
राजस्थानी संस्कृति / *डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'*	१२
सम्मेलन के इतिहास के पन्नों से / *श्री भंवरमलजी सिंघी*	१३
तलाक कोई समाधान नहीं / *श्री प्रकाश लूनावत*	१५
बिचारा मंत्री / *श्री नागराज शर्मा*	१७
धर्म और रिलीजन / *श्री नंदलाल सिंघानिया*	१९
जातिवाद की महाव्याधि / *श्री यशपाल जैन*	२०
वह तेज वह लावण्य... / *श्रीमती सरला अग्रवाल*	२१
रूपकुँवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला / *श्री देवी प्रसाद बागड़ोदिया*	२५
अनंत कृपामूर्ति गुरुदेव / *पं. रमेश मोरोलिया*	२८
मुरारीलाल डामिलया की कुछ कविताएं	२९

युग पथ चरण

★ अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन - मुरारीलाल डालमिया का अभिनन्दन

★ प.बंगाल, बिहार, पूर्वोत्तर प्रदेश प्रादेशिक सम्मेलन की रिपोर्ट

★ महिला सम्मेलन, युवा मंच एवं विविध

३०-३४

समाज विकास

जुलाई, २००४

वर्ष ५४ ● अंक ७

एक प्रति- १० रु.

वार्षिक- १०० रु.

समाज विकास

१. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।

२. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।

३. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।

४. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।

५. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।

६. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।

७. भारत के कोने-कोने में फैले हुए ९ करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।

८. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु

ग्राहक बनिये / बनाइये
लिखिये / लिखाइये

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७, फोन : २२६८-०३१९ के लिए श्री धानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा इलस्ट्रेटेड इंडिया प्रेस, ७४, लेनिन सरणी, कोलकाता-७०००१३ में मुद्रित।

संपादक-नंदकिशोर जालान

ज न वा णी

इस स्तम्भ के अंतर्गत सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विषयों पर पाठकों के मतों का स्वागत है। साथ ही समाज के आंतरिक एवं गहन विषयों तथा समाज विकास में प्रकाशित सामग्री पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव भी आमंत्रित है। *- सम्पादक*

श्री सीताराम शर्मा विशिष्ट व्यक्तित्व के धनी हैं। आपकी कार्यकुशलता एवं कर्मठता के लिए मारवाड़ी समाज को गर्व है। आपने अपने महामंत्रीत्व काल में समाज की समानता एवं विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। मुंबई अधिवेशन में आपके अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष पद पर चयन के लिए हमारी पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन शिवसागर शाखा आपका हार्दिक अभिनंदन व मंगल कामना करती है। आप अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा एवं कार्यकुशलता से मारवाड़ी समाज में आत्म गौरव का दीप प्रज्वलित करेंगे।

- श्री सत्यनाराण दाधीच
अध्यक्ष, शिवसागर शाखा

मैं पत्रिका आदि को अन्त तक पढ़ता हूं। विगत अंकों में 'धर्म में दिखावा' लेख मुझे अच्छा लगा। इसी प्रकार राजस्थानी कहानी भी अच्छी लगी।

- श्री शिवचरण मंत्री
किशनगढ़, अजमेर

श्री रमेशचंद्र लाहोटीजी, उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पद नियुक्ति का जून २००४, समाज विकास पत्रिका में समाचार पढ़े जो बहुत ही सराहनीय है। आपके उच्चत्तम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश पद प्राप्ति पर बलांगीर (उड़ीसा) वासियों के तरफ से हार्दिक बधाई। आप सफलता के उच्च शिखर तक पहुंचे और मां के पैर छूए इससे मारवाड़ी समाज अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता है। समाज को आपसे बहुत ही उम्मीदें हैं। आप इसी तरह देश की सेवा करते रहें और समाज का नाम रोशन करें।

- श्री शिवशंकर अग्रवाल
बलांगीर, उड़ीसा

समाज विकास के मई २००४ के अंक में छपा मारवाड़ी समाज के प्रथम महामंडलेश्वर का आशीष प्रवचन 'समाज विकास' से यह अपेक्षा नहीं थी। समाचार के अनुसार स्वामी बालकानंद गिरी जगदगुरु शंकराचार्य चुन लिए गए हैं। आपको पता ही है कि आदि शंकराचार्य ने भारत के चार कोनों में चार पीठ स्थापित किए थे। बाद में एक पीठ और मान्य हुआ। ये पांच पीठ हैं। पूर्व में पुरी पीठाधीश्वर जगदगुरु शंकराचार्य श्री स्वामी निश्चलानंद जी महाराज हैं इनके पूर्व जयपुर में राजस्थानी म. म. चंद्रशेखरजी थे। पश्चिम में द्वारकापीठ के वर्तमान शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंदजी हैं। उत्तरान्नाय ज्योतिषपीठ के दावेदार तीन शंकराचार्य हैं। तीनों अपने को असली बताते हैं। इनके अतिरिक्त कई नये पीठ खड़े हो गये हैं। भानपुरापीठ, प्रयासपीठ, काशीपीठ आदि। शंकराचार्य कहलाने वालों की संख्या १० से अधिक है लेकिन इतिहास सम्मत चार ही पीठ हैं। आपने ध्यान नहीं दिया कि ये किस पीठ पर पीठासीन हो रहे हैं। इन्होंने कब और किनसे संन्यास दीक्षा ली। इनका मूल नाम आदि क्या है। शंकराचार्य पीठों की ज्ञान परम्परा भी कम से कम १२ सौ वर्ष पुरानी है। लगता है समाचार में बहुत कुछ छिपाया गया है।

- श्री घनश्याम देवड़ा
सम्पादक, अमृत कुम्भ
दिल्ली

श्री मुरारीलालजी डालमिया रो बड़ो ही श्रेष्ठ सम्मान कार्यक्रम हुयो। कार्यक्रम देखण आयो थो। श्री नन्दकिशोरजी तिनसुकिये (असम) में सम्मेलन रै तृतीय अधिवेशन रो आयोजन (८,९,१० अक्टूबर १९५५ नै) बड़ो भव्य करयो थो। बृजलालजी बियाणी ने अध्यक्ष बणायो थो। वै उद्घाटण भाषण ही दो घंटा तक करायो। सेठ गोविन्ददासजी मालपानी भी पधारया था। कलकत्तै स्यूं आप, ईश्वरदासजी जालान, भंवरमलजी सिंघी, सुशीलाजी सिंघी, वेणीशंकरजी शर्मा नै भी ले गया था। अर्थात् इतनी छोटी आयु में भी आप इतना बड़ा कार्यक्रम कर लेता सो आज की तो बात ही कै। मोहनलालजी तुलस्यान और भानीरामजी सुरेका ने प्रणाम।

- श्री अम्बु शर्मा
सम्पादक, नैणसी, कोलकाता

यह देश की आत्मा को छूनेवाला बजट है। बहुत वर्षों से उपेक्षित ग्रामीण भारत को एक आशा की किरण इस बजट से मिली। अभी तक केवल शहरी विकास की ओर ही विशेष रूप से ध्यान रखा गया। लेकिन इस बार यूपीए सरकार के कामन मिनीमम प्रोग्राम को ध्यान में रखते हुए यह बजट पेश हुआ है, जो कि देश के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगा। ग्रामीण क्षेत्र का विकास होने से शहरों पर भी भार कम होगा। इसके अलावा इस बजट में सरकारी क्षेत्र की कंपनियों को सुधारने की दिशा में भी महत्वपूर्ण एवं सार्थक प्रयास करने का संकल्प किया गया है। इतना ही नहीं बहुत दिनों से बुजुर्गों की जमा धन पर ब्याज दर में बढ़ोत्तरी की गई है। आयकर सीमा को पचास हजार से एक लाख तक लिया जाना भी एक महत्वपूर्ण कदम है। वित्तमंत्री श्री. पी. चिदम्बरम् ने बजटीय घाटे पर अंकुश लगाने के साथ-साथ वर्ष २००८-२००९ तक बजटीय घाटे को खत्म करने का भी संकल्प दोहराया है। कारपोरेट जगत में भी इस बजट का

स्वागत किया है। हालांकि उन्होंने कुछ और सुधारों का सुझाव दिया है। लेकिन इतने कम समय में बजट को पेश करने के कारण पिछली एनडीए सरकार की उदासीनता की वजह से कुछ महत्वपूर्ण कार्य बाकी रह गये हैं।

- श्री ओमप्रकाश चौधरी
उपाध्यक्ष, मुंबई, राष्ट्रीय जनता दल

विषय : उलझनों में फंसा समाज

वस्तुत: अपना जीवन ही उलझनों में फंसा है। यह जीवन ईश्वर के द्वारा लिखित उत्कृष्ट उपन्यास है और यदि मनुष्य केवल बुद्धि से उसे समझना चाहे तो वह पागल हो जाएगा।

अपने समाज की शुरूआत ही उलझनों से हुई। हमारे पूर्वज जहां थे वहां जीविकोपार्जन का कोई साधन नहीं था। हमारे पूर्वज रोटी-रोजी के लिए देश-देशांतर का भ्रमण कर जहां-तहां बस गए और अपनी बुद्धि विवेक से जीने का रास्ता खोजा। कालांतर में समाज में आबादी बढ़ी, व्यापार बढ़ा। विचारों में उथल-पुथल हुआ एवं हम अपनी प्रगति के अनुसार अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाना शुरू किये। बुद्धि विवेक से इस कार्य में भी सफलता पायी। हमारे मार्गदर्शकों के लक्ष्य अपने समाज की प्रतिष्ठा को आसमान की ऊंचाई तक ले जाने का रहा और हम आंशिक रूप में सफल भी हुए। धीरे-धीरे आबादी के अनुसार हमारा समाज आर्थिक दृष्टिकोण से कई भागों में विभक्त हो गया। कुछ काफी धनाढ्य हो गये, कुछ बिल्कुल साधारण श्रेणी में रह गए। कुछ मध्यम श्रेणी में आ गए। आपसी विषमता बढ़ी। ऊंचे-नीचे की भावना से हमारा समाज बुरी तरह से ग्रसित होने लगा। हमलोगों ने इन विचारों की दूरी पाटने में सम्मेलन का सहयोग लेना शुरू किया। इस कार्य में सम्मेलन भरपूर प्रयास भी कर रहा है। परन्तु आपसी एकता सुदृढ़ हो इसमें हम आज भी प्राय: असफल हैं।

अत: आपलोगों के नेतृत्व से हमारा समाज भविष्य में आशा करता है कि जिन उलझनों में आज मकड़ी की जाल की तरह फंसता जा रहा है उससे मुक्त कराने का सतत् प्रयास में सफलता मिलेगी।

- श्री सत्यनारायण तुलस्यान
मुजफ्फरपुर, बिहार

'समाज विकास' मई अंक में प्रकाशित सामग्री काफी रूचिकर, पठनीय एवं मननीय लगी। लोकतंत्र के संदर्भ में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल तुलस्यान के विचार मस्तिष्क को आन्दोलित करने वाले हैं। श्री सीताराम शर्मा द्वारा किया गया चुनाव विश्लेषण तर्क संगत बन पड़ा है। उन्होंने नई सरकार के समक्ष आने वाली संभावित चुनौतियों को बहुत अच्छी तरह से रेखांकित किया है। श्री भानीराम सुरेका ने सामाजिक संगठन को मजबूत बनाने के लिए आपसी मतभेदों एवं मनभेदों को दूर करने का आह्वान किया है जो स्वागत योग्य है। प्रकाशित सभी आलेख स्तरीय एवं प्रभावोत्पादक है और उनके लेखक बधाई के पात्र हैं। सामाजिक जागरण में समाज विकास की उल्लेखनीय भूमिका देखकर अतीव प्रसन्नता होती है एवं नई ऊर्जा मिलती है। पत्र हमेशा प्रगति पथ पर बढ़ता रहे।

- श्री युगलकिशोर चौधरी
चनपटिया, बिहार

श्री भानीराम सुरेका के व्यक्तित्व व विचारों से पहले से ही अवगत हूं। आपके सदा से ही ऊंचे विचार हैं और आप मन से समाज की सेवा करना चाहते हैं। आपका लेख मई २००४ के अंक में पढ़कर दिल में एक ऐसा अहसास हुआ है कि वाकई मतभेद को मनभेद नहीं बनाना चाहिए। हम आप दोनों ही समाज के संगठन का भला चाहते हैं। विचार अलग-अलग हो सकते हैं उद्देश्य तो एक है फिर मन मुटाव किस बात का- टीका-टिप्पणी भी करनी पड़ सकती है लेकिन स्वस्थ टिप्पणी करें सकारात्मक सोंच रखें। आपने जो सभी अधिकारियों, कार्यकर्ताओं व सदस्यों को एक सलाह दी है वह नेक सलाह है। आशा करता हूं कि आपके महामंत्री काल में संगठन मजबूत होगा और शक्तिशाली होगा।

- श्री रामकिशन गोयल
सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

समाज विकास का अंक मिला जिसमें आपका लेख 'आन्दोलन का एक दिन' पढ़ने को मिला। अध्यक्ष व सचिव के लेख भी पढ़ने को मिले। समाज विभिन्न जातियों में विभाजित होना एक बड़ी बुराई है जिस पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। मगर समाज विकास खुद जातिवादी समाचार प्रकाशित करता रहता है चाहे वह माहेश्वरी समाज हो, अग्रवाल समाज हो या चाहे कोई अन्य।

नये लोग विशेषकर युवा वर्ग क्यों नहीं जुड़ रहा है इस बात पर गहराई से विचार करें। समाज विकास में आप लेख अच्छे निकाल रहे हैं जिसके लिए बधाई स्वीकार करें। मगर इसका कितना और किस पर तथा कैसा प्रभाव पड़ रहा है इस पर भी मनन चिन्तन करने की आवश्यकता है।

- रामकृष्ण बोहरा, जोधपुर

समाज में व्याप्त कुरीतियों को कौन ठीक करेगा ?

अखबार ठीक कर सकते हैं, लेकिन मुझे हैदराबाद के सारे अखबारों से शिकायत है कि वे ऐसा नहीं कर रहे हैं। कोलकाता में विश्वमित्र नामक अखबार ने कोलकाता के समाज की कई कुरीतियों को ठीक किया है। उसके दोनों संपादक मूलचंद अग्रवाल और कृष्णचंद्र अग्रवाल ने प्रभावशाली ढंग से संपादकीय लिखे और काफी काम किया। यहां के अखबारों को भी यह काम करना चाहिए।

- श्री रामगोपाल गोयनका
हैदराबाद

समाज विकास को गरिमा और स्वरूप प्रदान करने पर हार्दिक बधाई। आपका समर्पण और लगन ही मारवाड़ी समाज को गौरव प्रदान करने में सहायक रहा है। आपकी प्रतिभा से हम सब सम्मानित होते रहे हैं।

- रमेश मोरोलिया
कानपुर

Telegram : APAKASAMAJ　　Estd. 1935　　Phone : 2268-0319
Fax : 033-2282 8760

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
ALL INDIA MARWARI FEDERATION
152-B, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007

सूचना

दिनांक : २० जुलाई २००४

अखिल भारतीय समिति के सदस्यों की सेवा में,

नवगठित **अखिल भारतीय समिति** की प्रथम बैठक आगामी **रविवार, २२ अगस्त २००४ को प्रातः ११ बजे** निम्नलिखित स्थान पर होगी। आपसे सादर अनुरोध है कि इस महत्वपूर्ण बैठक में अवश्य उपस्थित रहने की कृपा करें।

स्थान : अमर भवन, मधुसुदन मार्ग, राउरकेला-७६९००१, उड़ीसा
दूरभाष : ०६६१-२५१०९३६ / २५१११६४

विचारार्थ विषय :

१. गत बैठक की कार्यवाही का अनुमोदन।
२. महामंत्री की रपट।
३. प्रादेशिक सम्मेलनों की सांगठनिक स्थिति पर विचार-विमर्श।
४. देश की वर्त्तमान राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति पर विचार एवं इस संदर्भ में समाज का दायित्व एवं भूमिका।
५. बैंक के खातों में नये पदाधिकारियों के सही संबंधी प्रस्ताव एवं अन्य बैंकों में खाते खोलने या जमा राशि देने संबंधी प्रस्ताव।
६. (क) जिन प्रादेशिक सम्मेलनों से अखिल भारतीय समिति के सदस्यों का नामांकन नहीं आया है वहां के लिए इस समिति के सदस्यों का मनोनयन धारा ९(५) (ख) के अनुसार।
   (ख) जिन प्रादेशिक सम्मेलनों का विघटन हो गया है या जिन प्रदेशों में सम्मेलन नहीं है उन प्रदेशों से अखिल भारतीय समिति के सदस्यों का मनोनयन धारा ९(६) (ख) के अनुसार।
७. सम्मेलन के भावी कार्यक्रम संबंधी प्रस्ताव व निर्देश।
८. सम्मेलन की नई कार्यकारिणी समिति का गठन।
९. उपसमितियों का गठन एवं उनके अध्यक्ष एवं मंत्री का निर्वाचन।
१०. अन्य विषय जो अध्यक्ष की अनुमति से बैठक के सम्मुख रखे जायें।

भवदीय
भानीराम सुरेका
भानीराम सुरेका
(मानद् महामंत्री)

नोट : *अपने आगमन एवं प्रस्थान, आवास की सूचना एवं अन्य स्थानीय जानकारी हेतु निम्न पदाधिकारियों से सम्पर्क किया जा सकता है।*

श्री विश्वनाथ मारोठिया
अध्यक्ष, उत्कल प्रा. मा. सम्मेलन
बिसरा रोड, राउरकेला-७६९००१
फोन : (का) ०६६१-२५११२७४ (नि) २५१०३१०
मो : ९४३७२ ०३३६६

श्री गोपाल कृष्ण जाखोटिया
महामंत्री, उत्कल प्रा. मा. सम्मेलन
मे. गोपाल एण्ड कम्पनी,
डब्ल्यू -२-७१८, एरिया सिविल टाउनशीप, राउरकेला-७६९००४
फोन : ०६६१-२४०००९८ /४३८
मो : ९४३७०४३०७७ / ९८६१० ४५५७७

समाज व्यक्ति से ऊपर होता है

✍ मोहन लाल तुलस्यान

यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हम उस समाज का हिस्सा हैं जिस समाज ने हर क्षेत्र में केवल सफलताएं अर्जित नहीं की हैं बल्कि उपलब्धियों के उच्चत्तम शिखर को छुआ है। और यह इसलिए संभव हुआ है कि हमारा समाज दूरदर्शी ही नहीं बल्कि परिश्रमी, लगनशील, कर्त्तव्यनिष्ठ, चिन्तनशील होने के साथ-साथ हर परिस्थिति में संघर्षरत रहने की असीम क्षमतावाला समाज है। **हमारा समाज हार का नहीं हर का उपासक है**। इसलिए इसमें सहयोग भावना व धर्मपरायणता की भावना जड़ों तक विद्यमान है।

देश में जब आजादी की जंग का बिगुल बज रहा था तब हमारे समाज ने जननायकों के कंधे से कंधा मिलाकर जहां अपनी सहभागिता दर्ज करा कर मारवाड़ी समुदाय के लिए यश अर्जित किया वहीं आज आधुनिकता की इस चकाचौंध में भी मानवता के उत्थान एवं जीवन-मूल्यों की परिरक्षा हेतु कई प्रकल्पों की स्थापना कर अपना अर्थ, समय और श्रेम देने में सतत् अग्रणी रहा है। मेरा तो यह मानना है कि भारतीय इतिहास में से मारवाड़ी को अलग कर दिया जाए तो सत्तर प्रतिशत इतिहास मिट जाएगा।

स्कूल, विश्वविद्यालय, पुस्तकालय, वाचनालय, धर्मशालाएं, मंदिर, अस्पताल आदि ही नहीं बल्कि अनाथालय, वृद्धाश्रम, दरिद्रालय तक स्थापित और संचालित कर मारवाड़ी समाज जनकल्याणकारी कार्यों में सदैव आगे रह रहा है। विश्व में जहां भी जनोपयोगी इकाइयां स्थापित हुई हैं उनके परिचालन में मारवाड़ी समाज का अकथनीय, अनुकरणीय योगदान रहा है।

बड़े दुख के साथ यह भी स्वीकार करना पड़ रहा है कि आज हमारे समाज की पहचान रही कल्याणकारी भावना का ह्रास हुआ है। आज इस समाज में वह ओज वह जोश वह समर्पण नहीं दिख पड़ रहा है जिसने हमारे समाज को श्रद्धेय स्थान पर स्थापित किया है। इसकी एक ही वजह मानता हूं कि आज हमारे समाज में परोपकार भावना की जगह अहम् भावना ज्यादा सन्निहित हो गई है। इसी कारण यह समाज मानवांचित्त भावना से विलग हो रहा है। फलतः जिस समाज को लोग पलकों पर रखते थे आज उसी समाज को हेय समझा जा रहा है। फिल्मों में भी जब किसी मारवाड़ी सेठ या मुनीम का किरदार दिखाया जाता है तो उसे धूर्त ही दिखाया जाता है। इसे क्या कहें ? उत्थान या पतन ?? यह समग्र समाज को सोचना होगा। मुझे किसी विद्वान की चार पंक्तियां इस सन्दर्भ में याद आ रही हैं-

हम चले थे कहां से कहां आ गए, राह की जगमगाहट से भरमा गए।
पार कितने समन्दर किए तैर कर, आज कश्ती में ही डुबकियां खा गए।।

कृतज्ञता का भाव जो मारवाड़ी बच्चे को जन्मघुट्टी में पिलया जाता था वह अब परिलक्षित ही नहीं हो रहा है। परिणामस्वरूप अपने समर्थ होने का श्रेय आज का युवा समाज अपने माता-पिता, अग्रजों-गुरुजनों, भाई-बंधुओं को न देकर अहम् भाव से ग्रसित अपने आपको ही देता है। जो किया मैंने किया, मैं ही हूं जिसने असाध्य को साध्य किया। अहम् की यह भावना ''एकोहम् द्वितीयो न अस्ति'' की पराकाष्ठा तक पहुंच रही है। पता नहीं यह भावना भविष्य में कैसे परिणाम समाज के सामने लाए।

हमारे समाज का इतिहास चाहे पांच हजार वर्ष पुराना रहा हो या पांच सौ वर्ष पुराना हम इस बहस में नहीं जाना चाहते पर यह जरूर कहना चाहूंगा कि हमारे समाज ने कभी भी किसी धर्म किसी सम्प्रदाय के प्रति आस्था और समर्पण ही हमारा मूल मंत्र रहा है इसी के चलते यह समाज देश ही नहीं विश्व के हर कोने में अपने आप को स्थापित करने में सफल हुआ है। अपनी क्षमताओं का लोहा मनवाने में सफल हुआ है। परन्तु आज पाश्चात्य सभ्यता की चमक-दमक में भटके-भरमाये हम इन भावनाओं को धत्ता बता कर अपने आप को स्वयंभु प्रमाणित करने में लगे हैं।

सनातन सत्य यह है कि जब तक हम समाज के निम्न वर्ग से सहृदयता सहित मेल-मुलाकात नहीं बढ़ाएंगे तब तक समाज का एकीकरण संभव हो ही नहीं सकता। तब तक यह समाज खण्डों में विभाजित रहेगा और विभाजित समाज को, असंगठित समाज को अनजान राहों की भूल-भुलैया में भटकते देर नहीं लगती। हमारा इष्ट भटकाव नहीं हमारा इष्ट संगठन है। हमारे समाज का इष्ट है समग्र जन-मानस का उन्नयन, ऊंच-नीच की भावना का परित्याग कर सबको एक मंच पर स्थापित करना क्यूंकि जन से समाज बड़ा होता है। यह तभी सम्भव है जब हम संगठित होकर एक मन से समाज की खामियों पर चर्चा कर उनमें सुधार लाने का निर्णय लें और इसके लिए सतत् प्रयास करें।

आज आवश्यकता यह है कि हम संगठित होकर एक स्वर में एक चित्त होकर एकजुट होकर समग्र जाति का विकास करें। हमारा एक ही ध्येय हो, एक ही नारा हो कि हम समाज के लिए हैं। हम समाज के लिए कितना उत्सर्ग करें कि समाज की पताका शीर्ष ऊंचाइयों का स्पर्श कर सके। जैसे हम राष्ट्र को समाज से ऊपर मानते हैं वैसे ही हमें समाज को व्यक्ति से ऊपर मानना पड़ेगा। समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने स्तर पर अपने सामाजिक दायित्व का सही-सही पालन करेगा तभी हम समाज की खोई हुई अस्मिता फिर से प्राप्त कर सकेंगे।

उनको मेरा कोटि प्रणाम

उनको मेरी कोटि प्रणाम।
जिनका स्मारक रहे देश के नर नारी का उर प्रत्येक।
जब तक जग में चन्द्र दिवाकर, रहे व्योम में उडु अनेक।।
बुझने पर भी जिस दीपक का अनुदिन बढ़े प्रकाश।
युगों युगों तक जिसकी आभा करे तिमिर का नाश।।
सदियों तक जिनके गुण गाते वाणी की वीणा ले न विराम।
उनको मेरा.....

अंगारे जिनके भोजन हों, कांटे हों जिनके शृंगार।
विष पीकर जो अमर हो गये, देने दिव्य सुधा की धार।
क्या कोई उनको मारेगा, जो मर मर कर अमर यही हैं।
उन्हें मारने वाली कोई बनी अभी तलवार नहीं है।।
इतिहास पूज्य नर हो जाता है गा करके जिनके गुणगान।
उनको मेरा...

विश्व सौख्य के उपवन का जो करते निज शोणित से सिंचन।
फूल नहीं निज शीश चढ़ा जो मातृभूमि का करते अर्चन।।
कुल पवित्र हो जाता जिनसे धरा धन्य हो जाती है।
खोकर के भी जिनको माँ निज पुत्रवती कहलाती है।।
जल थल अनल अनिल नभ जपते निशि दिन जिनके नाम।
उनको मेरा...

छोड़ सुमन शैय्या को जिनने कण्टक पथ अपनाया।
बुझते हुए दीप को जिनने जल कर स्वयं जलाया।।
जिनने जानी पीर परायी, किये असंख्यों के उपकार।
पर दुख भंज व्रत धारी वे, मूर्ति मन्त भगवत साकार।।
जो मूकों के वज्र घोष हों, जो अंधों के नयन ललाम।
उनको मेरा कोटि प्रणाम।

❊ घनश्याम देवड़ा
दिल्ली- ५१

मुझे राह मिल गयी

जब स्वामी विवेकानन्द भारत के एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा कर रहे थे, देश की हालत बहुत खराब थी। भारत तब स्वाधीन न था। वह अंग्रेजों के शासन में था। लोग बहुत गरीब हो गये थे। अधिकांश के पास भोजन तक न था। बहुत ही कम लड़के लड़कियां स्कूल जा पाते थे। लोगों में साहस न था। उनमें अपने पर भरोसा न था। वे असहाय और दलित थे। वे उत्साहहीन जीवन बिता रहे थे।

स्वामी जी यह सब देखकर भीतर से रो पड़े। वे सोचने लगे, भारत का अतीत कितना गौरवमय था। वे भारतवर्ष के पूज्य ऋषि-मुनियों और महापुरुषों के बारे में सोचने लगे। वही महान भारत आज कितना गिर गया है, यह देखकर उन्हें अतीव दुःख हुआ। कई रात उन्हें नींद नहीं आई। वे बराबर यही सोचते रहे कि हमारा देश कैसे फिर अपना खोया हुआ गौरव प्राप्त कर सकेगा।

अपनी यात्रा के अन्त में वे कुमारी अन्तरीप जा पहुंचे। यह भारत का दक्षिण छोर है। वहां कन्या कुमारी देवी का एक मंदिर है। देवी इसमें आठ वर्षीया कन्या के रूप में विराजमान है। हर रोज पुजारी प्रतिमा को सन्दल से सजाता है। कन्या कुमारी माँ की आँखें और मुस्कान अत्यंत सुन्दर है। उनके दर्शनों से बहुत सुख मिलता है।

यह मंदिर समुद्र तट पर है। आप हिंद महासागर की ओर देखें तो कुछ चट्टानें पानी से ऊपर दिखतीं हैं। उन चट्टानों पर बराबर लहरें पछाड़ खाती रहती है। उनके बाद मीलों केवल जल ही जल हैं।

एक दिन स्वामी जी उन लहरों पर तैर कर अन्तिम चट्टान तक जा पहुंचे। वे उस चट्टान पर चढ़ गये। वहां से घूमकर अपनी मातृभूमि को देखा। अपनी देशमाता के बच्चों के दुःख दर्द की बात सोचकर उनका दिल बिलख उठा। स्वामीजी को दो चीजों से बहुत प्यार था- एक, अपने गुरु श्री रामकृष्ण देव से और दूसरे, अपनी मातृभूमि भारत से। स्वामीजी उस चट्टान पर बैठ कर गहन ध्यान में लीन हो गये। इन्हीं क्षणों उन्हें यह प्रेरणा प्राप्त हुई कि भारत को फिर से महान बनाने की नितान्त आवश्यकता है और इसकी भी सूझ मिली कि इस महान कार्य की सिद्धि के लिए क्या करना चाहिए।

उस अन्तिम भारतीय चट्टान को अब विवेकानन्द शिला कहते हैं। उस शिला पर से उन्होंने यह घोषित किया था, 'मुझे राह मिल गयी है।'

❊ स्वामी विवेकानन्द

केन्द्रीय बजट २००४

कुछ नया नहीं

- दो नावों पर सवारी : एक 'समझौता बजट'
- सेवा कर : नया बढ़ता बोझ : महंगाई बढ़ेगी
- बजट पर वामपंथियों का दबाव
- गांवों ने भाजपा को हराया : कितना सच
- किसान आत्महत्या करते रहेंगे
- अच्छी अर्थनीति सदैव अच्छी राजनीति नहीं

सम्मेलन के उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा, जिनकी आर्थिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के विषय में गहरी समझ एवं पकड़ है, द्वारा प्रस्तुत है केन्द्रीय बजट २००४ का विश्लेषण एवं प्रभाव।

वित्तमंत्री पी. चिदंबरम का २००४-०५ का केन्द्रीय बजट आधा-अधूरा या अंतरिम बजट-सा है, ऐसा लगता है बहुत कुछ छह महीने बाद आने वाले बजट के लिए छोड़ दिया गया है। सामने कोई आम चुनाव नहीं है, फिर भी नजरें जनता को खुश करने पर रही है। एक लाख तक की आय पर कोई इनकम टैक्स नहीं के द्वारा मध्य वर्ग को लुभाया गया तो किसान एवं ग्रामीण विकास के लिए कई नये उपाय सुझाये गये हैं। अल्पसंख्यों की शिक्षा के लिए ५० करोड़ के प्रावधान द्वारा उनको भी खुश करने का प्रयास किया गया है। छात्रों एवं युवाओं को शिक्षा के लिए आसान शर्त पर कर्ज, कम से कम १०० दिन के रोजगार का वादा किया गया है तो साथ-साथ बुजुर्गों के लिए बचत योजना पर नौ प्रतिशत ब्याज वाली योजना की घोषणा कर उन्हें राहत पहुंचाने की कोशिश की गई है।

वामपंथियों का दबाव बजट पर साफ झलकता है। आर्थिक सुधार की रफ्तार को तेज करने के लिए बजट में कोई कदम नहीं उठाये गये हैं। सरकारी उपक्रमों में विनिवेश के कार्यक्रम को एक पीएसयू पुनर्गठन बोर्ड बनाने की बात कहकर ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है। कहा गया कि यह बोर्ड विनिवेश पर सुझाव देगा। पश्चिम बंगाल एवं केरल से निर्वाचित वामपंथियों के दबाव पर ही राज्य सरकारों को दिये जाने वाले कर्ज पर ब्याज की दर घटायी गयी है।

टेलीकॉम, नागरिक उड्डयन एवं बीमा क्षेत्र में विदेशी निवेश की सीमा में जो

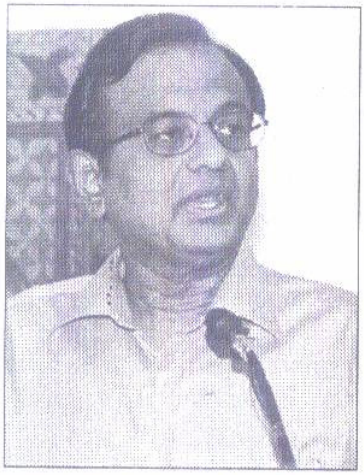

बढ़ोत्तरी की गई है, उसमें मनमोहन सिंह एवं चिदम्बरम की पहल साफ झलकती है, लेकिन बजट पर चर्चा के दौरान इस पर वामपंथी अपना विरोध प्रस्तुत करेंगे, जिसे सरकार कहां तक रोक पाती है, यह देखना है। इसमें रोलबैक की संभावना है। लघु उद्योग की जहां एक तरफ निवेश सीमा १०० करोड़ तक बढ़ायी गयी है वहीं सूची से ८५ चीजों को हटा लिया गया है। लघु उद्योग को बढ़ावा देने की बात कही गयी है, लेकिन उसके लिए कोई साफ कदम या दिशा निर्देश का बजट में उल्लेख नहीं है।

स्टील पर एक्साइज दर के बढ़ने से एवं सेवा कर में ८ से १० प्रतिशत की बढ़ोत्तरी के मुद्रास्फीति पर नियंत्रण करना कठिन होगा। बजट से महंगाई बढ़ेगी, टर्न-ओवर टैक्स ने शेयर बाजार को निराश किया है। आरम्भ में बाजार बढ़ने के बाद अंत में लुढ़क गया।

यूपीए सरकार का पहला बजट मिला-जुला कर एक सामान्य बजट है, जिसमें आर्थिक विकास की दर को तेज करने के लिए कोई साहसिक कदम नहीं उठाए गए हैं। औद्योगिक क्षेत्र में १० प्रतिशत की आवश्यक वृद्धि के लिए यह बजट कोई नया तरीका नहीं प्रस्तुत कर सका है। अभिनव कर प्रणाली, राजस्व घाटा समाप्त करने तथा बेहतर खर्च प्रबंधन पर बजट कोई संकेत नहीं देता।

निश्चित रूप से यह बजट न तो मनमोहन सिंह का है, न ही चिंदबरम का। यह उस संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यूपीए) सरकार का है, जिसकी नकेल वामपंथियों के हाथ में है और जिस पर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को सत्ता से बाहर रखने की राजनीतिक मजबूरी है।

सेवा कर : नया बढ़ता बोझ

बजट की परतें धीरे-धीरे खुलनी शुरू

हुई है। सेवा में ८ से १० की जो दो प्रतिशत की वृद्धि की गई है उसकी मार गरीब, मध्यम एवं उच्च वर्ग तक को प्रभावित करेगी। इनकम टैक्स, एक्साइज के साथ-साथ आने वाले वर्षों में सेवा कर राजस्व का एक बड़ा हिस्सा बनने वाला है। सरकार इसमें प्रत्येक वर्ष वृद्धि कर के दर को १६ प्रतिशत के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ले जाएगी। वित्त मंत्री इसके क्षेत्र में भी लगातार बढ़ोत्तरी करते रहेंगे। चेक, डिमांड ड्राफ्ट, लाकर्स सेवाओं पर ही नहीं, बैंक खाते के संचालन पर भी इस बजट में १० प्रतिशत का सेवा कर एवं केवल यही नहीं इस पर दो प्रतिशत का शिक्षा उप-कर भी लगेगा। सेवा कर भुगतान में देर होने पर फिलहाल उस पर १५ प्रतिशत का ब्याज का प्रावधान है उसके स्थान पर १० से लेकर ३६ प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज लगाने का बजट में प्रस्ताव है। सेवा कर एवं शिक्षा उपकर के चलते चीजें एवं सेवाएं महंगी होगी जिसका भार उपभोक्ताओं को उठाना होगा। याद रहे कि यह टैक्स टर्नओवर पर देय होगा न कि इनकम पर, यानी आपको लाभ हो या हानि प्रत्येक टर्न ओवर पर आपको सरकार को टैक्स देना है। डायरेक्ट टैक्स में बढ़ोत्तरी करना शायद राजनीति आत्महत्या जैसी हो सकती, ऐसे में बेहतर है कि सेवा कर (सर्विस टैक्स) के माध्यम से पिछले दरवाजे से पेश करना।

दो नावों की सवारी

चिदम्बरम के सामने दो प्रश्न थे, एक तरफ समझदारी भरी आर्थिक नीतियों को लागू करने का और दूसरी तरफ देश के एक अरब लोगों को खुश करने का। दो नावों पर सवारी के चलते वित्त मंत्री ने कुछ ऐसी घोषणाएं की है जो विपदा को आमंत्रित करती है। सत्तारूढ़ गठबंधन (यूपीए) की घोषित आर्थिक योजनाएं यथार्थ से परे है। हर परिवार के एक सक्षम सदस्य को साल में एक सौ दिन रोजगार देने का वादा राजनैतिक रूप से लुभावना एवं वोट समेत सकता है लेकिन संभव नहीं दिखता। अकेले इस वादे को निभाने में भारत की जीडीपी का तीन फीसदी खर्च हो जाएगा। स्वास्थ्य और शिक्षा पर खर्च करने का जो वादा सरकार कर रही है वह बजट में परिलक्षित नहीं होता। शिक्षा एवं स्वास्थ्य मंत्रालय को बजट में क्रमशः १००० एवं ८०० करोड़ की बढ़ोत्तरी की गई है जो वादे से बहुत कम है। ग्रामीण विकास विभाग के बजट में तो ३००० करोड़ रूपये की कमी की गई है। श्रम विभाग के बजट में सिर्फ ११ करोड़ का इजाफा किया गया है।

गांवों ने भाजपा को हराया - कितना सच

भाजपा की पराजय का सीधा कारण यह समझा जा रहा है कि अपने शासन काल में उसने आर्थिक सुधारों के दुष्परिणाम झेलने वाले तबकों पर ध्यान नहीं दिया। उसकी नीतियों ने गांव में रहने वाले करोड़ों भारतीयों की उपेक्षा की। यह तर्क दमदार है लेकिन सच नहीं।

यह बात गलत है कि भारत के आर्थिक सुधारों ने ग्रामीण गरीबों की परवाह नहीं की। पिछले १५ वर्षों में गांवों में गरीबी ३९.४ फीसदी से घटकर २६.४ फीसदी पर आ गई और शहरों में ३९.१ फीसदी से घटकर २४.१ फीसदी पर। पिछले चुनाव में हार-जीत बहुत कम अन्तर से हुई है इसलिए चुनाव परिणामों से एक राष्ट्रीय संदेश निकलना गलत होगा।

किसान आत्महत्या करते रहेंगे ?

देश के किसान आत्महत्या इसलिए कर रहे हैं कि उन्होंने कर्ज ले रखे हैं पर कर्ज अदायगी करने के लिए उनके पास पर्याप्त आय नहीं है। कृषि उत्पादों के मूल्य लगातार गिरते जा रहे हैं, जिससे कृषि घाटे का सौदा होकर रह गया है। इस परिस्थिति में किसानों का दिये जाने वाले कर्ज को दुगना करना उन्हें दुगने गहरे दलदल में फंसाने जैसा है। जिस कर्ज के जहर ने किसानों को आत्महत्या करने पर मजबूर किया है, उसी जहर को वित्त मंत्री चिदम्बरम ने अधिक मात्रा में किसानों को परोसने का बजट में संकल्प किया है।

किसान की समस्या कर्ज नहीं है। मुख्य समस्या गांव में अथवा कृषि में आय की कमी है। पैदावार बढ़ाने की समस्या का निदान नहीं है। पिछले वर्ष गेहूं एवं धान की बम्पर फसल हुई है। अन्न के भण्डार की व्यवस्था नहीं थी। परिणामस्वरूप कृषि उत्पादों के मूल्यों में गिरावट आई थी। वित्त मंत्री को कृषि उत्पादों के मूल्यों में वृद्धि हासिल करने के उपायों पर विचार करना चाहिए था। वर्तमान में किसानों के लिए समर्थन मूल्य की नीति प्राणदायी है। गेहूं धान का उत्पादन बढ़ता जा रहा है। कृषि मूल्यों की वृद्धि में डब्ल्यू.टी.ओ. आड़े आता है। वित्त मंत्री को कृषि उत्पादों के आयात पर प्रतिबंध या अधिक आयात-कर की बात करनी चाहिए थी, परन्तु इस प्रमुख मुद्दे पर वे चुप रहे। इसलिए आने वाले वर्षों में कृषि उत्पादों के मूल्यों में गिरावट जारी रहेगी, किसान आत्महत्या करते रहेंगे आरै कर्ज की उपलब्धता से बैंक के दलदल में और ज्यादा धसेंगे। बजट में सरकार ने बैंकों से किसानों को और कर्ज देने की बात कही है, सरकार ने सीधे कर्ज या राहत की कोई व्यवस्था नहीं की है।

किसानों की दृष्टि से इस बजट की मुख्य कमी यह है कि कृषि उत्पादों के गिरते मूल्य एवं सिंचाई में निवेश (२०००० करोड़ की जगह १०० करोड़) को अनदेखा किया गया है, किसान के लिए ये दो ही मुद्दे प्रभावी हैं।

समझौतावादी बजट

वित्त मंत्री चिदम्बरम को इस बार वह स्वतंत्रता नहीं थी जो उन्हें १९९७ में उनके 'ड्रीम बजट' के समय मिली थी। उन पर बहुत सारे दबाव थे- बजट लोकप्रिय हो, लेकिन आर्थिक संसाधन भी जुटाने हैं, आर्थिक सुधारों के साफ संकेत हों लेकिन वामपंथी एक सीमा से अधिक नाराज भी न हो, किसान आत्महत्या नहीं करे लेकिन कृषि उत्पादों के मूल्यों में वृद्धि भी न हो, गांव भी खुश हो एवं शहर के मध्य वर्ग को भी 'लॉलीपॉप' दिया जा सके, बम्बई के शेयर बाजार और ट्रेड यूनियनों दोनों को खुश रखना है। इस चक्कर में वित्त मंत्री ने जो बजट प्रस्तुत किया है वह समझौतों की एक ऐसी फेहरिस्त है जिसने सबको खुश करने की कोशिश की है। प्रायः देखा जाता है ऐसे प्रयास में कोई भी खुश नहीं रहता। अच्छी राजनीति सदैव अच्छी अर्थनीति नहीं होती।●

भीषण बाढ़ और सूखे के साथ जुड़ा आर्थिक प्रगति का प्रश्नचिन्ह

• अदृश्य •

मनुष्य व प्रकृति का संघर्ष आदिकाल से चला आ रहा है। प्रकृति की अपार शक्ति के सामने मनुष्य निरीह व आशक्त सा है। इस वर्ष देश के उत्तर पूर्वी हिस्से में भयंकर बाढ़ व दक्षिण व मध्य भारत के कई अंचलों में अनावृष्टि से करोड़ों की फसल नष्ट होने और करोड़ों व्यक्तियों के असहनीय कष्ट के सम्मुख होने के समाचार निरन्तर आ रहे हैं। बिहार के लगभग १८ जिले बाढ़ से बुरी तरह प्रभावित बताये जा रहे हैं। दरभंगा व अन्य अनेक शहर पानी में डूबे हुए से हैं जबकि सीतामढ़ी एक द्वीप में सी परिवर्तित हो गई बताई जाती है। खगड़िया, किसानगंज, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, सिवहर, मधेपुरा, सहरसा, कटिहार, चम्पारण, समस्तीपुर, मधुवनी जैसे कई शहर पानी से त्रस्त हैं। यह सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि इन जिलों के विस्तारित अंचल में छोटे-छोटे मकान व झोपड़ियों के वासिन्दों की क्या दशा होगी। प्रचलित खबरों के अनुसार लगभग दो करोड़ व्यक्तियों को ऊंचे स्थानों पर शरण लेनी पड़ी है। पानी से घिरे लाखों लोगों की सुरक्षा के लिए सेना की मदद चालू है, हेलीकाप्टरों का इस्तेमाल किया जा रहा है, मोटर वोट व लगभग तीन हजार नौकाएं ऐसे लोगों को निकाल कर ला रही है। स्थान-स्थान पर खाने के पैकेट हेलीकाप्टरों द्वारा गिराए जा रहे हैं, जो कि संतोष के परे बताए जा रहे हैं। केन्द्रीय सरकार द्वारा राहत-कोष से दी जा रही मदद स्थिति की विषमता के परिपेक्ष में कितनी प्रभावी होगी, अन्दाजा लगाना कठिन है।

यह सोचकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि इन जिलों के विस्तारित अंचल में छोटे-छोटे मकान व झोपड़ियों के वासिन्दों की क्या दशा होगी। प्रचलित खबरों के अनुसार लगभग दो करोड़ व्यक्तियों को ऊंचे स्थानों पर शरण लेनी पड़ी है। वहीं दूसरी ओर देश के कई भागों में अन्य प्रकार की समस्या से लोग जूझ रहे हैं। आन्ध्र प्रदेश के एक बड़े हिस्से, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा व विदर्भ अंचल में, पूर्वी राजस्थान, दक्षिणी उत्तर प्रदेश में प्राय: अकाल की स्थिति बनती जा रही है।

असम की स्थिति भी विशेष भिन्न नहीं है। उत्तरी असम प्रदेश के २६ जिले बाढ़ की चपेट में आ गये बताये जाते हैं। मौरीगांव जिला एवं बादरपुर शहर पूरी तरह पानी के अन्दर है। नवगांव जिले में राहा एवं कामपुर में बाढ़ से भारी नुकसान हुआ है। दक्षिण अंचल में रांगिया से नलवाड़ी तक भीषण तबाही का उल्लेख है। असम की राजधानी गुवाहाटी शहर में ब्रह्मपुत्र का पानी प्रवेश कर प्राय: सभी रास्तों को ढक लिया बताया गया है। रेल लाइन पानी से ढकी होने के कारण रेल यातायात बन्द है तथा रोड-यातायात भी बाधित है। असम के पश्चिम में करीमगंज जिला पूरी तरह बाढ़ की चपेट में है। सेना द्वारा उपलब्ध कराए गए हेलीकाप्टर उचित स्थान के अभाव में उतर नहीं पा रहे हैं। लगभग २३ लाख हेक्टर क्षेत्र पानी से ढका है जिसमें ८ लाख क्षेत्र से कहीं अधिक क्षेत्र की फसलें पूर्णत: नष्ट हो गई हैं। असम जैसे छोटे प्रदेश में यदि १ करोड़ १० लाख व्यक्ति बाढ़ से प्रभावित हैं तो स्थिति की विकटता स्वयंसिद्ध है। लगभग १८०० राहत शिविर में २५ से ३० लाख लोग शरण लिए हुए हैं जबकि अन्य की स्थिति चिन्ताजनक है।

अनावृष्टि

दूसरी ओर देश के कई भागों में अन्य प्रकार की समस्या से लोग जूझ रहे हैं। आन्ध्र प्रदेश के एक बड़े हिस्से, महाराष्ट्र के मराठवाड़ा व विदर्भ अंचल में, पूर्वी राजस्थान, दक्षिणी उत्तर प्रदेश में प्राय: अकाल की स्थिति बनती जा रही है। जुलाई महीने के शेष तक यदि इन अंचलों में अच्छी वर्षा नहीं हुई तो देश के अन्न उत्पादन में कितना और क्या अन्तर पड़ेगा उसका अन्दाजा लगाना कठिन है।

पानी और खाद्यान्य की ट्रेनों द्वारा आपूर्ति का प्रयत्न

दिनोदिन विभिन्न अंचलों में पानी तथा खाद्यान्य के लिए रेलवे की रैकों (स्पेशल ट्रेनें) की मांग बढ़ रही है। पानी की दो ट्रेनें नसीराबाद से फतेहनगर गत महीने से चलाई जा रही है। राजस्थान में पाली जिले के लिए दो ट्रेनों का प्रबंध अभी-अभी हुआ है। मराठवाड़ा की खाद्यान्य आपूर्ति के लिए स्पेशल ट्रेनों की मांग दिनोदिन बढ़ रही है। स्मरण नहीं आता इस प्रकार की दो तरफा चोट देश में पहले कभी उभरी थी क्या ? शहरों के वासिन्दों की तो बात ही क्या, गांवों में रहने वालों का सबकुछ पानी की चपेट चढ़ गया, उसका न जाने कितने करोड़ों का नुकसान कैसे समेटा जाएगा सोचनीय है। भारत सरकार के इस आर्थिक वर्ष की जो योजना घोषित की गई है, उस पर इन प्राकृतिक विपदाओं का कितना क्या प्रभाव व असर पड़ेगा और देश की जी.डी.पी. इस वर्ष क्या रहेगी, यह आज सोच के बाहर की बात दिखती है और उसके साथ जुड़ी है देश के आर्थिक विकास का महत प्रश्न।

प्राप्त सूचना के अनुसार मारवाड़ी सम्मेलन, युवा मंच एवं समाज बिहार व असम दोनों ही जगह राहत कार्य में संलग्न है जिसकी रिपोर्ट अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी।

राजस्थानी संस्कृति के चार अध्याय

✍ डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध', जयपुर

राजस्थान विविध कलाओं का आगार है और यहां की कलाएँ सैलानियों का विशेष आकर्षण रही हैं। भारतीय संस्कृति को भी राजस्थान की संस्कृतिक देन रही है विशेषत: प्रौगैतिहासिक और ऐतिहासिक युगों से भारतीय संस्कृति के सभी अंगों तथा रूपों में राजस्थानी संस्कृति का समावेश महत्वपूर्ण रहा है।

कभी रेगिस्तान में सांस्कृतिक चेतना के प्रादुर्भाव से राजस्थानी लोक जीवन रसपूर्ण था और बीकानेर इलाके में सरस्वती नदी पूरे वेग के साथ प्रवाहित थी। सरस्वती नदी के तट पर ऋग्वेद की ऋचाओं की सृष्टि हुई। मोहन जोदड़ों एवं हड़प्पा की प्राचीन सभ्यताएं नदी के तट पर विकसित हुई। तीर्थराज पुष्कर में जहां ब्रह्मा ने सृष्टि रचना के बाद यज्ञ किया, वह स्थल भी इसी नदी की घाटी में रहा। हमारे ऋषियों की तपोस्थली नैमिषारण्य भी इसी नदी के भूखण्ड में थी, जहां पुराणों की रचना हुई। महाभारतकालीन मत्स्य प्रदेश भी जयपुर और अलवर के मध्य रहा। इसलिए अनेक संस्कृतियां भी यहां सजीव रहीं, जिनसे यहां का लोक जीवन जीवंतता और लोकानुरंजन के लिए सब कहीं प्रसिद्ध रहा।

ललितकलाओं, लोकगीत एवं नृत्य, तीज त्यौहार और मेलों तथा साहित्य की दुर्लभ कृतियों में राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखा। यह राजस्थानी संस्कृति ही है, जिसने विदेशी आँखों को प्रभावित किया, रंग-रूप, रास-रसमय लोकजीवन को अनुशासित ढंग से सादगी की शिक्षा में दीक्षित किया।

भारतीय कलाओं के कई भेद रहे हैं, किन्तु उन ललित कलाओं में संगीत, नृत्य एवं चित्रकला को श्रेष्ठ माना गया है। राजस्थान में इन तीनों कलाओं का विकास-विस्तार द्रुतगति से हुआ। शास्त्रीय एवं सुगम संगीत को भी यहां समुचित संरक्षण दिया गया तो शास्त्रीय नृत्य में कत्थक नृत्य की जयपुर शैली अपने विकसित स्वरूप में प्रसिद्ध रही और लोक नृत्य में गणगौर, घूमर, गींदड़, घेर, धोरी तथा आदिवासियों के नृत्यों ने राजस्थान को नृत्यकला में समृद्ध बनाया। राजस्थान में संगीत शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान भी हुए और संगीत ग्रंथों के देश प्रसिद्ध प्रणेता भी। उन्होंने संगीत को राजघरानों से बाहर भी प्रचलित किया। डागर की ध्रुपद शैली की रक्षा का श्रेय राजस्थान को है।

'लोक ख्याल' या 'तमासा' की गायकी भी शेखावटी और राजस्थान में बनी रही। राजस्थान के भक्त कवियों एवं कवयित्रियों ने अपने पदों में राग-रागनियां को स्थान दिया और लोक जीवन के अनुरूप साहित्य सृजित किया।

राजस्थान में संगीत-नृत्य एवं चित्रकला के समावेश के साथ मूर्तिकला, स्थापत्य कला और हस्तकलाओं का कौशल भी जमीन पर बनाए रहा। चित्रकला के क्षेत्र में राजस्थान की अपनी पहल रही। राजपूत काल के चित्रों में राग-रागिनियों, मांगलिक संस्कारों, लोक जीवन और भक्ति प्रेम तथा कर्त्तव्य की सरस धारा निरंतर प्रवाहित रही। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, अलवर, बूंदी एवं किशनगढ़ शैली के चित्र विश्व के बाजारों के आकर्षण रहे और शेखावटी की भित्तिचित्र कला तथा विशाल भव्य स्थापत्य कलाओं को देखने फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका, इंग्लैंड, इटली, स्विट्जरलैंड आदि देशों के पर्यटक आ रहे हैं।

आधुनिक एवं नवीनतम चित्रकला की शैलियां भी राजस्थान में पनपीं और यहां के लोक चित्र हवेलियों के भीतर-बाहर टेम्परा टेक्नीक की तरह चित्रांकित रहे। यह प्रस्तर कला का ही कमाल रहा है कि राजस्थान में बाडौली, रणकपुर, देलवाड़ा, एकलिंगजी और अन्य मंदिरों की मूर्तिकला को देखकर पर्यटक आश्चर्यचकित रहे। ऐसी उत्कृष्टतम कलाएँ सभी को प्रभावित किए रहीं। जैसलमेर, बीकानेर एवं शेखावटी की विशाल हवेलियाँ अपनी कलात्मकता तथा पत्थर पर बारीकी से किए गए कार्यों के कारण दर्शक दृष्टियाँ बाँधती रहीं।

चित्तौड़, रणथम्भौर, जैसलमेर, जयपुर, जोधपुर आदि स्थलों के अजेय दुर्ग दर्शनीय रहे तो राजस्थानी शिल्पकला के मनोहरी स्थल भुलाए न गए। हस्तकलाओं के क्षेत्र में तो राजस्थान के क्या कहने। यहां जयपुर में संगमरमर की मूर्त्तियाँ, हाथी दाँत और चन्दन के खिलाने, जवाहरात का कार्य, पीतल आदि धातुओं पर रंग-बिरंगी मीनाकारी, नाथद्वारा में मीनाकारी, बीकानेर एवं जैसलमेर में ऊन की लोइयाँ, सिरोही की तलवारें और करौली की कटारें, राजस्थान में बंधेज की रंगाई-छपाई अलवर के सलीमशाही जूते, टोंक के कालीन एवं गलीचे, लकड़ी के खिलौने और सांगानेरी कागज तथा बगरू की रंगाई-छपाई ने राजस्थान की दस्तकारी को विश्व प्रसिद्ध कर दिया। जोधपुर की कलात्मक चूंदड़ी की बंधाई एवं रंगाई और बीकानेर के गलीचों की माँग भी निरंतर बनी रही। रंगाई-छपाई में सांगानेर एवं बगरू प्रिंट को विदेशी पहचानने लगे हैं।

राजस्थान की संस्कृति के क्षेत्र में यहाँ के परम्परागत संस्कारों, लोक रीति-रिवाजों और प्रचलित जीवन शैलियों ने भी जन जीवन को संस्कारित किया। तीज-त्यौहारों-मेलों, लोक गीतों और ग्रामीणों की भाव मुद्राओं में भी सांस्कृतिक पक्ष उभरे। यहाँ के पहनावे और प्रदर्शन ने भी संस्कृति की गरिमा बनाए रखने में निवासियों को प्रेरित-प्रोत्साहित किया।

राजस्थानी संस्कृति के चार अध्याय कला, लोक जीवन, तीज-त्यौहार, मेले और साहित्य इतने विस्तृत हैं कि अनेक बार लिखे जाने के बावजूद लगता है उन्हें अभी और लिखना है। लेखकीय दायित्व की यह निरंतरता यदि बनी रही तो ये अध्याय हर दिन, हर क्षण लिखे जाते रहेंगे।●

मणिपुर की हिंसा, गौहाटी प्रवास, हरिजनों के बीच सम्मेलन के प्राण प्रतिष्ठक ईश्वरदासजी जालान

✍ भंवरमलजी सिंघी

बन्धुगण,

लगभग छह महीना पहले मैंने सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री नन्दकिशोर जालान और पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष एवं प्रधानमंत्री क्रमशः श्री मोहनलाल जालान और श्री बिहारीलाल लोहिया के साथ असम, मेघालय और नगालैण्ड का दौरा किया था। उस समय पूरी इच्छा रहते हुए भी मणिपुर नहीं जा पाया था, यद्यपि वहां के भाइयों का काफी आग्रह था। वहां दो वर्ष पहले समाज के लोगों के विरुद्ध कुछेक मणिपुरी लोगों ने हिंसात्मक आक्रमण किया था और कई दुकानें जला दी थीं। उसी समय भाई दीपचन्दजी नाहटा के साथ मैं वहां गया था, किन्तु दुर्भाग्य से मौसम खराब होने की वजह से वायुयान गौहाटी तक भी नहीं पहुंच पाया और हमें वापस आ जाना पड़ा था।

धन योग के साथ-साथ जन योग भी

इस बार मैंने आसाम का कार्यक्रम बनाते समय सर्वप्रथम इम्फाल जाने का ही निश्चय किया। २० मार्च १९७५ को समाज सुधार समिति के अध्यक्ष भाई बजरंगलाल जाजू के साथ मैं वहां गया। दो दिनों के प्रवास में इम्फाल के बन्धुओं के साथ मिलकर ऐसा लगा कि उनमें काफी नयी चेतना आयी है और संगठन की भावना बढ़ी है। हमलोगों ने उन स्थानों का भी निरीक्षण किया, जहां-जहां उपद्रव हुए थे एवं जान-मान की क्षति हुई थी। समाज के कार्यकर्ताओं की जो सभा वहां हुई, उसमें हम लोगों ने पुनः इस बात को दोहराया कि जहां एक तरफ समाज के लोगों को अपने विचारों और दृष्टिकोण में समयानुसार परिवर्तन करना चाहिए और वहां के मूल निवासियों के साथ अधिक से अधिक समरस होना चाहिए, वहां दूसरी ओर किसी भी घटना के समय साहस एवं शक्ति के साथ काम करना चाहिए। केवल सरकारी हस्तक्षेप एवं सहायता पर ही अवलम्बित नहीं रहना चाहिए।

सम्मेलन के प्राण प्रतिष्ठाता श्री ईश्वरदासजी जालान

इम्फाल के लिए रवाना होने के पूर्व ही हमलोगों के समाज के वयोवृद्ध राष्ट्रकर्मी एवं समाजसेवी नेता श्री ईश्वरदासजी जालान का नाम और रूप सामने आ जाता है। वास्तव में सम्मेलन उन्हीं की अप्रतिम दूरदर्शिता एवं भविष्य गर्भित दृष्टि का परिणाम है। वे सम्मेलन के प्राण प्रतिष्ठाता हैं। मारवाड़ी सम्मेलन अर्थात ईश्वरदासजी जालान, यह कहा जाय तो भी अनुचित नहीं होगा। ६० वर्ष पूर्व कलकत्ता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. और कानून में बी.एल. की उच्च परीक्षाएं पास करके उन्होंने शिक्षा का सामाजिक दायित्व पूरा करने की दिशा में जिस मनोयोग और अथक परिश्रम से काम किया है, वह हमारे समाज के इतिहास में सदा अविस्मरणीय रहेगा। देश के सभी राज्यों में आज हम समान अधिकारों के साथ रह और कार्य कर सकते हैं, इस वैधानिक भूमिका को बनाने और बनवाने में उन्होंने जो कार्य ४० वर्ष पहले किया था, उसकी महत्ता आज हमारे सामने स्पष्ट है। सम्भव है नयी पीढ़ी के लोग इस ऐतिहासिक बात को पूरी तरह न जानते हों, पर इतिहासकार यह बात कभी नहीं भूलेगा कि मारवाड़ी सम्मेलन का संगठन करके श्री जालान जी और उनके मित्रों ने जो कार्य किया, उसका हमारे लिए कितना राष्ट्रीय महत्व है। आगामी ३० मार्च को वे ८० वर्ष पूरे कर इक्यासिवें वर्ष में प्रवेश करेंगे। उनका शरीर थक गया है, जो स्वाभाविक है परन्तु उनका मन एवं मस्तिष्क आज रोग शैय्या पर भी समाज के विषय में चिन्तन करता रहता है। ऐसे महान सेवाव्रती नेता के प्रति श्रद्धा सुमन समर्पित करने के लिए उनके सार्वजनिक अभिनन्दन की योजना बनायी गयी है, इम्फील के भाइयों ने भी इस योजना के बारे में अपनी हार्दिकता प्रकट की एवं सहयोग दिया।

गौहाटी प्रवास

वहां से हमलोग गौहाटी आये जहां इस बीच में सम्मेलन के प्रधानमंत्री श्री नन्दकिशोर जी जालान भी पहुंच गये थे। पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति और प्रधानमंत्री भी गौहाटी पहुंच गये थे। भाई बजरंगलालजी जाजू के इस सुझाव का सभी ने समर्थन किया कि जालानजी के अभिनन्दन के अवसर पर पूर्वोत्तर प्रदेशों के मारवाड़ी समाज की ओर से रु. ८१,०००/- की थैली उन्हें भेंट की जाए। हमलोग ढाई दिन गौहाटी में रहे और इसी बीच काफी लोगों ने बड़ी तत्परता और उत्साह के साथ इस थैली की रकम को पूरा करने की दिशा में योगदान किया। श्री जालान जी का नाम लेना भर ही काफी था। मुझे लगा कि समाज के लोग अपने निस्पृह हितैषी के प्रति सदा श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखते हैं। नाम चाहने वाले को कभी नाम नहीं

मिलता और नाम के बिना काम करने वाले को सदा नाम मिलता है। 'स जीवति,यस्य कीर्ति, जीवति'। श्री ईश्वरदास जी ने अपनी दीर्घकालीन सेवाओं के आधार पर जो स्नेह पाया है, वही उनका वास्तविक अभिनन्दन है। वे बराबर अभिनन्दनीय हैं और रहेंगे।

नयी प्रतिभा, नयी प्रेरणा

गौहाटी में समाज के बन्धुओं की दो सभाएं हुई- एक कामरूप चेम्बर आफ कामर्स के सभागार में और दूसरी हरिजन कालोनी में। पहली सभा समाज के जाने-माने कार्यकर्ताओं की थी, जिसमें मैंने और भाई नन्दकिशोरजी ने सम्मेलन के पुराने इतिहास और वर्तमान गतिविधि के बारे में चर्चा की। विगत ४० वर्षों में सम्मेलन के सतत प्रयासों के फलस्वरूप समाज के स्वरूप में अवश्य ही बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है, और विभिन्न दिशाओं में समाज की एक नयी प्रतिमा उजागर हो रही है। आज हम केवल व्यवसाय और उद्योग धन्धों के क्षेत्र में ही नहीं, ज्ञान-विज्ञान की महान उपलब्धियों के हर क्षेत्र में ससम्मान स्वाश्रयी हैं। अन्य लोगों की ही बात नहीं स्वयं हम भी कल्पना नहीं कर सकते कि समाज की वर्तमान प्रतिमा ५० वर्ष पहले की प्रतिमा से कितनी भिन्न है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हमने विगत अर्द्ध शताब्दी में जो प्रगति की है, वह बेजोड़ है। समाज की नयी पीढ़ी के विचारों में बहुत बड़ा विस्तार और विकास हुआ है। हां, अर्थ का व्यामोह आज भी दुर्भाग्य से हमारे इस विस्तार को पूरी तरह से अंगीकार नहीं कर पा रहा है। लोग कहते हैं कि हम अर्थ के मालिक हैं, परन्तु भीतर से हमें यह दुखद अनुभव हो रहा है कि अर्थ हमारा मालिक है और हम उसके गुलाम हैं। अर्थ की यह गुलामी हमारी जीवनी शक्ति की बुनियाद को काट रही है। अर्थ ने हमें विनाशकारिणी विपरीत बुद्धि की ओर ढकेल दिया है। आज हमारे व्यवसायी बन्धु केवल अपने व्यक्तिनित लाभ-हानी की ही बातें सोचते हैं, उनके सामने न समाज की बात है, न राष्ट्र की ओर न मानवता की। अधिक धन संचय की गति यही होती है। चेम्बर में होने वाली सभा में यह स्थिति ही हमारे चर्चा का विषय रही। जितनी जल्दी हम धन की इस कैद में से निकलेंगे उतना ही हमारा कल्याण होगा। हम धन से सम्पन्न होते हुए भी जीवन में अत्यंत विपन्न हैं।

संस्कार-क्रान्ति - हरिजनों के बीच

संस्कार-क्रान्ति के संदर्भ में मुझे हरिजन कालोनी की सभा में हुई सुखद अनुभूति की बात बहुत प्रिय लगती है। गौहाटी में लगभग ३००० मारवाड़ी हरिजन (पुरानी भाषा में भंगी) वर्षों से रहते हैं। एक ही जगह से आए हुए होने और एक ही भाषा बोलने पर भी कभी वैश्य और ब्राह्मण मारवाड़ी बन्धुओं ने इनके साथ कोई सम्पर्क नहीं रखा। गौहाटी में ही नहीं, अन्य किसी स्थान पर भी इस सम्पर्क की स्थिति नहीं दिखाई दी। सम्मेलन ने पिछले ४० वर्षों में २-४ अवसरों पर यह चर्चा हुई कि अगर सम्मेलन सारे मारवाड़ी समाज की प्रतिनिधि संस्था है तो उसमें वैश्य समुदाय के अलावा दूसरी जातियों और वर्गों के लोगों को सम्मिलित करने का प्रयास क्यों नहीं किया जाता। मुझे स्वर्गीय भाई मदन गोपाल जोशी की याद आ रही है जिन्होंने एक बार इस प्रश्न को सम्मेलन में बड़े जोश से उठाया था, परन्तु समय की बात थी कि अच्छे-अच्छे विचारशील कहे जाने वाले साथियों पर भी उनकी बात का कोई असर नहीं पड़ा। इस परिप्रेक्ष्य में मुझे यह देखकर बहुत ही आनन्दमिश्रित आश्चर्य हुआ कि पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के कार्यकर्त्ताओं ने गौहाटी में बसे हुए हरिजन मारवाड़ियों के बीच संगठन और सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्थान का कार्य प्रारम्भ किया है। इसे मैं एक तरफ पुराने पापों का प्रायश्चित मानता हूं और दूसरी ओर समाज की नयी नियति का निर्माण। सैकड़ों हरिजन भाइयों की इस सभा में जाकर उनके बीच बैठने में मुझे अद्‌भुत आनन्द मिला। उनके हाथ से जब मुझे गेंदे की माला पहनाई गई तो मैंने यह कहते हुए अपनी नव-विभोरता प्रकट की कि आजतक सैकड़ों-हजारों मालाएं मैंने पहनी हैं, लेकिन इस माला का रंग और सुगन्ध कुछ न्यारी ही है। इसमें एक ही समाज के दो अंगों की मिलन-भूमिका की नयी स्फूर्ति है। जब मैं यह कह रहा था तो मेरा हृदय पुलकित हो रहा था और सामने बैठे हुए हरिजन भाइयों और बहनों के हृदय भी पुलकित थे और उनकी आंखों में एक अद्‌भुत चमक थी। मेरा विश्वास है कि यह नयी भावना समाज के नये निर्माण की नयी नींव रखेगी और इस नींव पर पूर्वोत्तर प्रदेशीय सम्मेलन द्वारा गृहीत इनके लिए विकास केन्द्र के निर्माण की योजना शीघ्र सफल होगी। **हम सबों ने इनके द्वारा पकाये भोजन को रसास्वादन के साथ ग्रहण किया। अगले वर्ष इनके लिए एक भवन का निर्माण सम्मेलन द्वारा किया गया।**

समाज सुधार का नाट्य प्रदर्शन

मुझे इस समय मारवाड़ी युवा सम्मेलन, रानीगंज के द्वारा प्रस्तुत किये गये 'ढलती सांझ संभाले कुण' नाटक की याद आ रही है, जो उन्होंने सम्मेलन के आमंत्रण पर ता. ३ अप्रैल १९७५ को कलकत्ता में बड़ाबाजार के मध्य महाजाति सदन में प्रदर्शित किया और जिसको समाज के दो हजार से अधिक स्त्री-पुरुषों ने देखा। मैं इस नाटक को तीन बार पहले भी देख चुका था और मैंने ही उनसे यह आग्रह किया था कि इसे कलकत्ता में भी मारवाड़ियों की घनी बस्ती के बीच प्रदर्शित करें। मैं स्वयं नाटक में अभिनय कर चुका हूं और केवल हिन्दी की ही नाट्य-संस्थाओं से नहीं, बंगला की नाट्य-संस्थाओं से भी मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध है। वर्तमान में मैं बंगला नाटक की सुप्रसिद्ध संस्था 'थियेटर सेन्टर', कलकत्ता का अध्यक्ष हूं। इस नाटक का विषय समाज-सुधार का है। वह भी मारवाड़ी समाज में विवाहों के अवसर पर दहेज एवं दिखावे की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को लेकर है। दहेज के कारण और विवाह सम्बन्धी अन्यान्य रीति-रिवाजों में बढ़ते हुए खर्च के कारण जो स्थिति बन रही है और साधारण एवं मध्यवित्त श्रेणी के लोगों को जो पीड़ा भुगतनी पड़ रही है उसके विरुद्ध इस नाटक में बड़े प्रभावकारी सम्वाद हैं। नाटक का उद्देश्य ही इन बुराइयों के प्रति समाज की आंखें खोलना है। इस दृष्टि से हास्य और व्यंग्य से भरी यह कृति बड़ी सफल हुई है। लेखक श्री राधेश्याम मरेठिया बधाई के पात्र हैं। मारवाड़ी युवा सम्मेलन, रानीगंज के कार्यकर्ता जो कुछ कर रहे हैं और जिस उत्साह एवं लगन से कर रहे हैं, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। इन उदाहरणों को लेकर जगह-जगह समाज के युवकों को इस दिशा में अग्रसर होना चाहिए।●

तलाक कोई समाधान नहीं...

✍ श्री प्रकाश लूनावत, रायपुर

शादी हुए अभी ४ माह भी हुए नहीं कि बात तलाक पर पहुंच गई। कितनी धूमधाम से शादी की थी, दुनिया भर की व्यवस्था और उत्साह के बीच उन्होंने अपनी बेटी को विदा किया था। शादी के पूर्व दोनों परिवारों ने एक दूसरे को देखा परखा, लड़के ने लड़की को और लड़की ने लड़के को भलीभांति देखा और अपनी सहमति दी फिर ऐसा क्या हुआ कि ४ माह में ही बात तलाक पर आ गई।

यह कहानी किसी एक की ही नहीं बल्कि अभी-अभी अपने समाज में लगातार ही यह सुनने को आ रहा है। क्या हो रहा है ? कौन सी दिशा में जा रहा है अपना समाज ? सारे लोग स्तब्ध हैं, किसी के पास भी इस प्रश्न का जवाब नहीं है। अगर हम अपने आप से यह सवाल करें तो हम स्वयं ही निरूत्तर हो कर रह जाएंगे। एक साथ ही एक डर मन में ले बैठेंगे कि कहीं हम भी तो इस आग में नहीं जुलस जाएंगे।

अगर हम आंकड़ों पर जाए तो हमें पता चलेगा कि यह अभिशाप कम पढ़े लिखों से ज्यादा पढ़े लिखे में एवं कम समृद्धिशाली परिवार से ज्यादा समृद्धशाली परिवार में अधिक देखने को मिल रहा है। इन बातों को देखकर लगता है उनका अधिक पढ़ना और अधिक समृद्ध होना भी उनके वैवाहिक जीवन के लिए अभिशाप बन रहा है। आंकड़ों में यह भी देखा गया है कि तलाक के लगभग ५० प्रतिशत मामले शादी के पहले वर्ष में, २५ प्रतिशत मामले दूसरे वर्ष में, १५ प्रतिशत मामले तीसरे वर्ष में तथा १० प्रतिशत ही मामले अन्य वर्षों में आते हैं। इसका अर्थ है कि दम्पत्ति के प्रथम तीन वर्ष ही परीक्षा की घड़ी होते हैं। हम अगर इसके और मूल में जाएं तो हमारे सामने कुछ और भी बातें आती हैं जो कि तलाक का कारण बन रही है। आजकल के बच्चों में सहनशीलता का तो अभाव सा ही हो गया है उनमें सहनशीलता रह ही नहीं गई है। यह शायद हमारे ही लालन-पालन, लाड़-प्यार का नतीजा भी हो सकता है ? या टूटते परिवार का ? यह कहा नहीं जा सकता। सहनशीलता के अभाव में वे बगैर सोचे समझ, बिना परिणाम जाने, जोश में निर्णय तो ले बैठते हैं और जब तक बात उनके समझ में आती है तब तक उनके हाथों से निकल चुकी होती है।

तलाक का मामला पहले से अभी कुछ ज्यादा शायद इसलिए भी आ रहे हैं क्योंकि पहले शादियां कुछ कम उम्र में, कुछ सीखने की उम्र में हो जाती थी या हम कह सकते हैं कि ऐसी उम्र में हो जाती थी कि पति-पत्नी एक-दूसरे के अनुसार ढल जाते थे। किन्तु आजकल शादियां कुछ ज्यादा ही देर से होने लगी है जिसके कारण पति-पत्नी अपनी-अपनी सोंच और अपने-अपने विचारों में इतने परिपक्व हो जाते हैं कि उन्हें एक दूसरे के अनुरूप ढलना गवारा नहीं होता, यह भी एक बड़ा कारण है तलाक होने का। मनुष्य दिन-प्रतिदिन स्वार्थी होता चला जा रहा है और इसी स्वार्थ के अधीन वह अपने परिवार में बंटवारा कर अलग रहने लगता है जिससे हमारी संस्कृति में अलगाववादी बातें घुसती जा रही हैं और यही उनके अलग होने का भी एक कारण हो सकता है।

लड़की के माता-पिता की दखलअंदाजी भी उनके निजी जीवन में और उसके ससुराल में कुछ ज्यादा ही हो तो यह बात उसके ससुराल वालों को गवारा नहीं होती जिससे यह भी असन्तोष का कारण बनता है और इससे बात बिगड़ती जाती है। आजकल के माता-पिता अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा मुहैया कराते हैं। किसी के कहने पर वह तर्क देकर टाल जाते हैं कि अभी तो उन्हें यह सुख भोग लेने दो, क्या पता बाद में यह उपलब्ध हो न हो। और यही सुख उनके दु:खों का कारण बन जाता है क्योंकि अब उन्हें उन्हीं सुखों की आदत सी पड़ गई होती है। उसी खुले वातावरण, स्वच्छंद जिंदगी को वे ससुराल में ढूंढते हैं जो कि वहां उपलब्ध नहीं भी हो सकती है। यह भी एक बड़ा कारण होता है उनके असन्तोष का। इस अभिशाप को बढ़ाने में हमारे टी.वी. सीरियल भी कम रोल अदा नहीं कर रहे हैं। इनकी भी हमारी जिन्दगी में छाप पड़ने लगी है और आजकल की पीढ़ी इसकी अच्छी बातों को छोड़कर इसकी बुराईयां अपने जीवन पर उतारने लगी है। इसी कड़ी में हम पाश्चात्य संस्कृति की बुराइयों को भी सहर्ष अपना रहे हैं जो कि हमारे संस्कारों से बिल्कुल विपरीत है।

मैं आपका ध्यान एक ओर और दिलाना चाहूंगा कि पुराने ढर्रे की सोच के कारण सास-बहू और पति-पत्नी का रिश्ता भी इस अभिशाप का एक कारण है। सास चाहती है कि बहू आ गई तो मुफ्त की एक नौकरानी आ गई और उसका व्यवहार भी उसी तरह का होता है। कुछ पति भी इस मामले में कम नहीं, वे लोग अब भी अपनी पत्नी को पैरों की जूती समझते हैं और अपना व्यवहार उसी तरह करते हैं। परन्तु आज समय बदल गया है, यह बात नहीं समझना उनके रिश्तों में दरार पैदा करने के लिए काफी है।

कुछ तलाक तो इसलिए भी होते हैं कि शादी के पूर्व लड़के-लड़की को बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत किया जाता है अर्थात धोखे में रखा जाता है। चाहे वह लड़की के काम की बात हो या लड़के की कमाई की, कुछ ज्यादा ही बता कर शादी कर देते हैं जिसका भुगतान उन्हें तलाक के रूप में भुगतना पड़ता है। कुछ बात जैसे बीमारी, आंशिक रूप से

मानसिक विक्षिप्तता या और कोई बात भी छिपाकर रखा जाता है जो कि शादी के बाद खुलने पर परिणाम वही होता है, जिसका हमें अंदेशा था। दहेज का लोभ भी तलाक का एक कारण है, सोचा था बहू इतना रुपया व सामान दहेज में लेकर आयेगी किन्तु उसमें कमी होने से वे बहू को प्रताड़ित करना शुरू करते हैं और बात तलाक तक जा पहुंचती है।

आजकल की लड़कियों में इस बात का गुरूर भी देखा गया है कि वे बहुत अधिक पढ़ी-लिखी हैं, अच्छा व्यवसाय करती हैं या अच्छी नौकरी करती हैं तो उनमें कुछ अभिमान आ जाता है और इस अभिमान के चलते वे अपने सामने अपने पति, अपने सास-ससुर, ससुराल पक्ष को कुछ भी नहीं समझतीं और यह भी तलाक का एक कारण बन जाता है।

इन दिनों हम देख रहे हैं कि हमारे अन्दर अपने समाज का डर, उसका लिहाज, उसकी मर्यादा खत्म सी होती जा रही है। किसी को समाज का कोई डर नहीं रहा है। वह बिल्कुल स्वच्छंद सा हो गया है। क्या इसका कारण हमारी सामाजिक संरचना में तो दोष नहीं है या हमारे द्वारा कोई कड़ा कदम उठाने में हमारा अपना स्वार्थ आड़े आ जाता है ? हमारे देश की सामाजिक संरचना से भी हमारा समाज अछूता नहीं रह पाया है। यह आदमी और औरत को बराबर का हक, बराबर का दर्जा देता है। यह बात है तो उचित, बहुत अच्छी भी लगती है - मगर अपना देश पुरुष प्रधान होने के कारण उनका यह बराबर का हक और दर्जे वाली बात को हम पचा नहीं पाते हैं और यह भी एक कारण बन जाता है इस अभिशाप का।

इस तरह देखते हैं कि छोटे-छोटे बहुत से कारण है जो कि बात को तलाक तक ले जाते हैं जबकि अगर हम चाहें तो इन सबको बहुत ही आसानी से दूर कर सकते हैं :-

- हमें बच्चों में पढ़ाई के साथ संस्कारों की शिक्षा भी देनी चाहिए। जिससे हमारे बच्चे सुसंस्कारी बनकर सभी को यथोचित आदर, मान-सम्मान के धागे में बांध कर अपने अनुरूप ढाल सकें और उनके साथ अपने सम्बन्धों को और अधिक मजबूती से जोड़ सकें।

पाठकों एवं लेखकों से निवेदन :

'समाज विकास' समाज की ज्वलन्त समस्याओं का एक विवेचक पत्र है।

लेखक-लेखिकाओं, कवि-कवयित्रियों आदि से निवेदन है कि वे अपने लेख, कहानियां, कविताएं, किस्से एवं सच्ची घटनाएं आदि हमें भेजें। देश और समाज की समस्याएं अधिकतर समानधर्मा होती हैं, तथापि उस परिप्रेक्ष्य में समाज का थोड़ा-सा विश्लेषण उचित होगा।

पत्र व्यवहार का पता :- सम्पादक, 'समाज विकास', १५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७

- समृद्ध होना अच्छी बात है किन्तु समृद्धि के साथ सुशील होना और भी अच्छी बात है। हम अपनी समृद्धता को अपने सुशील व्यवहार से जोड़कर रिस्तों में मिठास ला सकते हैं।

- अपने बच्चों में आजकल जो सहनशीलता का अभाव आ गया है उसे दूर करें और उन्हें सहनशील बनाए, उन्हें हमारे घर के पाठ में यह याद कराये कि सहनशील व्यक्तित्व ही एक निश्चित मंजिल को आसानी से पाता है, उतावलापन उनके हाथ हाई मंजिल को भी दूर कर देती है, चाहे वह व्यापारिक क्षेत्र ही हो।

- हमारा लाड़-प्यार, लालन-पालन भी कुछ इस तरह से हो कि वह हमारे बच्चों को जिद्दी और आलसी नहीं बनाये। उन्हें हम हमेशा अच्छी शिक्षा के साथ लाड़-प्यार जताए और लालन-पालन करें।

- हम अपने बच्चों को हमेशा यह शिक्षा दें कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में मिलजुल कर रहना पड़ता है। एक दूसरे के काम आना पड़ता है। केवल स्वार्थवश कोई कार्य नहीं होता।

- समय के अनुसार रिश्तों में भी परिवर्तन करना होगा। पति भी अपनी पत्नी को दासी ना समझ अपनी अर्धांगिनी समझकर व्यवहार करे। सास का जो रूखा व्यवहार है वह भी बदलना चाहिए। सास को मां बन कर अपनी बहू के साथ व्यवहार करना चाहिए, जिससे वे एक-दूसरे से मां-बेटी के प्यार में बंधे रहे और परिवार आसानी से चलता रहे।

- दहेज को सामाजिक बुराई माने, उसके कारण अपने घर में कलह की स्थिति पैदा ना करें।

- लड़की के माता-पिता को चाहिए कि वे अपनी लड़की के ससुराल के मामलों में दखलंदाजी ना करे। उनका हस्तक्षेप ही सबसे बड़ा कारण होता है और वे इन अनावश्यक बातों से बचें।

- पति-पत्नी दोनों एक दूसरे के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए अपने आचार-विचार और व्यवहार में बदलाव लायें। आपसी सम्बन्धों में प्रेम और समर्पण की भी अहम् भूमिका है और वे इसी प्रेम और समर्पण से एक-दूसरे को जीत सकते हैं।

- विवाद की स्थिति में परिवार के मुखिया की भूमिका बहुत अधिक महत्व रखती है। उनकी दूरदृष्टि और सुझबूझ ही सारे मामले का एक सुखद अन्त दिला सकती है।

इन सभी बातों को देखते हुए यह लगता है कि प्यार से परिवार में रहना तलाक लेने से ज्यादा आसान है। बात है कि हम हमारे सारे कर्त्तव्य करते रहें। हमें अपने अधिकार अपने आप ही मिलते-जाते हैं और हमारी जीवन की राह आसान होती जाती हैं। अन्त में मैं हमारे राष्ट्रपति महामहिम ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की बात को रखना चाहता हूं कि ''अभिभावक अपने बच्चों के लिए आदर्श बनने का संकल्प लें'' और राष्ट्र निर्माण में सहयोगी बनें।●

व्यंग

बिचारा मंत्री

✍ नागराज शर्मा, पिलानी

आपणै देस में प्रधानमंत्री एक मंत्रिमंडल रो गठन करै। काम अर जिम्मेदारी रै मुजब न्यारै-न्यारै आदम्यां नै मंत्री पद दिया जावै। आपणै देस में सदा सूं अेक रेल मंत्री हुआ करै। जो अब ताणीं बण तो आ रैयो है। लालबहादुर शास्त्री भी रेलमंत्री बण्योड़ा है। मद्रास में अेक रेल दुर्घयना होवंता ही बै आपरो स्तीफो उण टेम रै प्रधानमंत्री जवाहर लाल जी नै सूंप दियो। लाल बहादुरजी भोळा मिनख था, भावुक था, सो स्तीफो दे दियो। बै स्तीफो क्यूं दियो? मिली-मिलाई कुरसी कइंया छोड़ी? आ बात आज ताणीं गैळै कोनी उतरै। लाल बहादुर जी खुद रेल कोनी चलाता, रेल चलावणिया न्यारा ड्राइवर था। गलती तो बाणा री थी। कोई गैटपैन गलत लेन बदल दे अर दुर्घटना हो जावै तो बिचारै रेल मंत्री रो कांई दोस? पण जद लाल बहादुर जी नै लोगां पूछी कै महाराज आपरो कांई कसूर? तो लाल बहादुर जी बोल्या, ओ म्हारो नैतिक दायित्व है कै जो विभाग मैं संभाळूं अर गलती हुवै, तो म्हनै स्वीकार कर लेवणी चायै। इण आधार पर म्है स्तीफो दियो। लोगां रै बात गळै नीं उतरी कै मंत्री किण भांत जिम्मेदार है। उण रो काम तो योजना बणाणो है। रेल रै फैलाव रख-रखाव रै बारै में चिन्तन करणौ है। काम तो कर्मचारी करता आया है जो आज भी कर रैया है। मंत्री जी आपरै 'एयर कन्डीसन' कमरै में बैठ्या मिटिंगा लिया करै। नित नूवा संदेस प्रसारित करै। दुर्घटना होवतां ही व्यक्तव्य दैवै अर प्रेस रिपोर्टरां नै पूरी जाणकारी देवै। बतावै कै आ 'टैक्नीकल' भूल थी या मानव भूल? अेकर बिना फाटक री पटरी पर एक बस रेल सूं टकरागी, बीस आदमी मरगा बस रो चूरो होगो। मंत्री जी व्यक्तव्य दियो हमारो ड्राइवर सीधो जा रैयो हो। बस ड्राईवर नै इतनी बड़ी रैली कोनी सूंझी-स्यात बस रो ड्राईवर आंधो हो।

रेल मंत्री आगै फरमायो कै जिम्मेदारी तय करी जा री है। जो भी जिम्मेवार होवैगो उण नै बकस्यो नीं जावैगो चाये कितणों ई बड़ो आदमी क्यों नी होवै? एक संवाददाता पूछी, इण घटना में आपरी कोई जिम्मेदारी बणै? मंत्री जी बोल्या, इण में म्है कठै आंवा? पैली बात तो आ है कै दुर्घटना स्थल रो ही म्हनै नीं बेरो। ओ स्थल कठै है, जावांगा जद बेरो पटैगो। फेर हमां दिल्ली में बैठ्या हां, घटनां हजारां किलोमीटर दूर होरी है तो अण में म्हारो कांई दोस ? जो आदमी जिम्मेदार है बो जाणै। दूसरों संवाददाता पूछी पण थे रेल मंत्री हो, थारी भी जिम्मेदारी तो बणंती ही हुवैला। मंत्री जी पोज बणा'र बोल्या, फेर बाई बात। म्हनै ओ कोनी बेरो कै बस पटरी पर क्यूं चढ़ी जद कै पटरी रेल खातर बणी है। अटीबड़ी रेल कोनी दीखै लोगां नै, जाकर खुद भिड़ै अर नाम म्हारो ई में रत्ती भर भी कसूर कोनी। हां मृतकां नै २०-२० हजार देवण री घोसणां कर दी है। घायलां नै अस्पताल में दाखिल करवा दिया है अर तीन-तीन हजार दे दिया है। म्है ओर कै कर सकां हां। म्हारै अधिकार छेत्र में जो बात है वो साफ है अर म्है अेक मिंट री देर भी कोनी करां। अब थे कै चावो हो? बार-बार लाल बहादुर जी रो नांव ल्यो, कै बणां स्तीफो दे दियो। बै भोळा था। पण म्है, भौळा कोनीं? हजारूं तिकड़मा भिड़ा आ गद्दी मिली है, बा थारै कैणै सूं छोड़ द्यां। रेल दुर्घटना तो सदा सूं होवतीं आवै है, विदेसां में भी हुवै है। अण रो मतलब म्है गादी छोड़ द्यां। इसो ना समझ म्है कोनीं। म्हैं स्वतंत्रता संग्राम में भाग लियो, लाठी खाई, गोली खाई। इतणै त्याग रै पछै आ गादी मिली है बा थारै कैवण सूं छोड़द्यां? आ कदै भी कोनी हो सकै। हां जो कर्मचारी जिम्मेदार है उण पर तो एक्सन लेवणौ ही है। म्है एक्सन मास्टर हूं। जठै गलती देखूं तुरंत एक्सन लेवूं। काल ही अेक कर्मचारी रो ट्रांसफर करयो है। बो झांसी में कोयला बेचतो पकड़यो गयो, बीं नै जबलपुर भेज दियो। मिलगी नै तावळी ही सजा। अब जबलपुर में आ ही गड़बड़ करैगो तो ससुरै नै मद्रास पटक द्यांगा। हांडो बिस्तर कांधै पर धरयां।

अब देखो। अर्थ व्यवस्था पटरी पर कोनीं आवै तो अण में वित्त मंत्री रो कांई दोस? गाय कोनी ब्यावै तो इण मैं कृषि मंत्री रो कांई दोस? मेह कोनी बरसै तो विचारो मुख्यमंत्री के करै। बो तो आपरै अमलै खमलै रै सागै दौरा ही तो कर सकै हैं। लोगां नै भासण देवंतो फिरै कै डट्या रैवो। सायत आ'री है। आपणै कनै नाज रो भंडारा भरयो पड़यो है। चूसा खा रैया है। मिनखां री चीज जिनावर खावै आ कईयां होवण द्यांगा। नाज बटैगो, ध्यावस राखो। पीणै रो पाणी भी भिजवा रैया हो, इतणै थूक गिटो। कै कैयो? थूक रैयो ई कोनी। थानै बचा कै राखणौ चाये थो। अब जुलाई है, केन्द्र सरकार बीस हजार बोरयां 'रिलीज' करी है, दिसम्बर ताणीं पूग जावैली। जद ताणी ध्यावस राखो। कोई कैवै छै म्हीना कैयां जीवांगा। तो मंत्री जी उत्तर देवै। अब ताणी भी तो जी रैया हो? देखो जद ताणी जीवण जेवड़ी हैं थानै कोई नीं मार सकै। मौत रो एक दिन तै है। नाज खाणियां के कोनी मरै। एक दिन म्है भी मरांगा थे भी मरोला, मौत कद आवैगी आ तकदीर रै अनुसार तै हुवै। ई में सरकार बिचारी कै करै। सब जणां पूछी नाज पूगणा में छै महीना कैयां लागै? मंत्री जी बोल्या, आछ्या भोळा हो। भई रेल खाली थोड़ी है। डब्बा री मांग करांगा, बैठकां हुवैगी, बण में पास हुवैगी फेर मजूरिया भैळा कारांगा, बै डब्बा मैं लादैगा फेर सारा डब्बा जोड़ैगा जद ही तो रेल चालैगी। टेम तो लागै ला, इतणै थै थारै जीवित रैवणै री जुगत करो। संतोस ही असली धन हुवै, जे राखोगा तो सुख पावोगा।

जनता नै आपणै मंत्रियां पर तरस खावणों चाये जिका रात-दिन आतंकवाद रो मुकाबलो करण नै सारी दुनिया में भाज्या-भाज्या फिरै। आपणां उदार अर स्याणां प्रधान मंत्री ई उमर में भी कदै अमेरिका, कदै रूस, कदै चीन अर कदै छोटै-मोटै देसां में आतंकवाद रो खातमो करण भाज्या फिरै। बै आपणै खातर ही तो भाज्या फिरै हैं। आतंकवादी आवैगा तो ज्यान सूं मार कै चल्या जांगा। प्राण पंखेरु उण टेम ही फर्र सूं उड़ज्यांगा। भूखा तिसाया, उघाड़ा, कच्चै-पक्कै मकानां में पड़या तो हां। इण वास्तै भय भूख अर भ्रष्टाचार नै अेकर छोड़ आतंकवाद रै लारै रात-दिन भाज्या फिरै है। पाकिस्तान सूं दोस्ती चावां अर पाकिस्तान रोजीना दस-बीस निरपराध लोगां नै मार नै भाग ज्यां। बैं आपरी करणीं जागां, आपां आपणी करणी। आपां तो मरांगा जठै ताणीं दोस्ती रो हाथ बढ़ाता रैवांगा।

थारै खातर प्रधानमंत्री जी सड़क योजना लाया है अब अरबां रिपिया सड़कां माथै खरच करया जारया है। सड़क देस री नाड़ी है। सड़क हुयां उबड़-खाबड़ मार्ग सूं मुगती मिलै। भूखो आदमी उबड़-खाबड़ मार्ग पर कदै आखड़ कै नीं पड़ज्या इणां वास्तै सीधी सड़क बणाई जारी है ताकि चालणै में सुभीस्तो रैवै। झटका नीं लागणै सूं भूखो आदमी दूर ताणी रोटी पाणीं री तलास में जा सकै है। गरीबी

रेखा सूं नीचै रैवणियां सड़कां रो ज्यादा फायदो उठासी। बै रोजी-रोटी री तलास में बोळी दूर जा सकें, पैली लोगां री रोटी रो तो प्रबंध करो। आछी भोळी बात करो ! भूखां खातर सरकार लंगर लगावै कै? रै सड़क बणैगी तो लोगां नै रोजगार मिलैगो। पूरी मजूरी नीं तो आधी-पड़दी मजूरी तो मिल ही जासी। आदा ठेकेदार खावैगां। पछै मंत्री-संत्र खावैगा। फेर मनीम-गुमास्ता खावैगा, पछै भी रपिये में आठ-दस पीसा तो लगैगां ही। क्यूं तो लोगां ने मिलैगो ही। हफ्ते में धाप कै रोटी मिल ज्यागी बा कै थोड़ी है। बात आ है कै भूखां नै चायै कितणां ई देद्यो, बणरी भूख तो मिटणै सूं रैई। आ तो सदियां री भूख है जकी मानव सभ्यता रै सागै-सागै चाली है। और देसां में भी गरीबी है। आपणै उरै भी है तो आ कांई इचरज री बात हुई। देखो देस में ओर बड़ा-बड़ा मुद्दा है पैली बै सुलझणा चाये। भूख अर मौत तो आवैगी ही। इण में आज ताणीं नै तो कोई रोक सक्यो है अर नीं रोक सकै। अण सूं पैली अहम मुद्दा तो सलटाण द्यो। ईंब ही ताणी कस्मीर रो मुद्दो कोनी सलट्यो, अयोध्या रो मुद्दो अधर मायं लटकै है। कावेरी जल-विवाद भी चाल रैयो है, मथुरा, कासी, हाळा मामला चाल रैया है। पैली बै तो सलटबा द्यो। कोरी भूख-भूख चिल्लैणै सूं देस तरक्की कैयां करैगो। आज आपणो माल बिकै कोनी? आपणों माल बेचण नै सारा मंत्री प्रधानमंत्री समेत भाज्या फिरै कै आपणों माल बिकै, व्यौपार बधै तो आपणै सेठां नै फायदो मिलै। सेठ पीसां कमावैला तो फेर बै खर्च करैगा बो पीसो जनता में ही तो अवैगो। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च बणैगा लोगां में भगवान रै प्रति आस्था बधैगी। लोग तपस्या करैगा। पुराणै जमानै में अेक-अेक ऋषि बरसां ताणी भूखो-धायो तपस्या करतो। उण रै जटावां में चीड़ी घूंसलो घाल लिया करती, हाडियां री पिंजर हो ज्यातो। कई-कई तो हजारूं बरसां ताणी तपस्या करता। अपणै आप भी भूख रो रोळो स्यांत हो जा सी। सब आस्था बधतां ई तपस्या में लीन होजसी फेर गरीबी रेखा नै कै चाटणों है? तो भाई लोगों धीरज राखो। मंत्रियां रो कोई कसूर कोनी। अै तो बिचापड़ा देस री चिंता में आपरी चरबी बधायां जा रैया है।

थे सोच रैया होसी, मंत्री लोग सुख भोग रैया है अर आपां नारकीय यातनावां में जा पड़्या हां। इसी बात कोनी, मंत्री बिचारा सुखी कठै? आपणां पिछला प्रधानमंत्री दो-दो गोडां अर आख्यां रा आपरेसन करवा लिया। आपरेसन में दर्द तो होवैही है। पण जाड़ भींच दरद सहण करकै सारी दुनियां में भाग्या फिरै है। काया रै कष्ट नै भूल कै माया री सुविधावां सूं सरीर डाट राख्यो है। चाल्यो कोनी जा फेर भी चाल रैया है। ओ त्याग सरावण जोग है। बोळा मंत्री आपरो काया कस्ट भूलर आम जनता रै कस्ट मं भूल रैया है। जनता री सुविधावां खातर रात-दिन चिंतन बैठकां कर रैया है। परिवर्तन यात्रावां निकाळ रैया है। जिकां राजघरानै रा लोग महल सूं बारनै निकल्यां कोनी करता, बै तपतै तावड़ै में परिवर्तन यात्रा कर रैया है। आ गादी बदळणै री परिवर्तन यात्रा है। इण सूं पैली रथ यात्रा रो भोत जोर हो जिण सूं भोत घणां परिवर्तन होयोड़ा है। परिवर्तन सिरफ सत्ता रो ई होवै लोगां में लेस मात्र भी परिवर्तन कोनी होवै। अब भी लुगायां रात-दिन मीणत करकै पूरे परिवार रो पेट भरै है। निखट्टू मरद ठेकै पर बैठयो दारू री चुस्की लेवै है। घरां लुगाई री कुटाई हो'री है। बै बिचारी दिनूगै सूं स्याम ताणी परिवार का फाट्या सीवंती रैवे। पति देव सदा री भांत नसै में धुत रैवै अर ऊपर सूं मरद पणै रो ठसको राखै। इण में कांई परिवर्तन कोनी हुवै बस गादी बदळै है। पैली नागनाथ जी कुरसी पर आ अब सापनाथ जी है। गरीबी हटाओ नारो सै लगावै पण गरीबी तो कदै हटी कोनी। हां धीरे-धीरे गरीब जरूर हटता जा रैया है।

अै विसंगतां सदियां सू चालती रैयी है इण नै विचारा नेताजी कैयां रौके? रामराज्य में भी धोबी हुआ करता आज भी है। फरक सिरफ इतणों है कै पैली राजा लोग धोबी की बात मान बड़ै सूं बड़ो एक्सन ले लिया करता, अब धोबी राजा बणर्‌या है। सारो समाज अण री बातां पर गौर कर तो जा रैयो है। पैली राज शाही चाल्या करती। राजा री सवारी निकळती तो खुले बाजार सूं निकळती। राजा खुळो हाथी पर या घोड़े पर बैठकर लोगां रै बीच सूं निकळतो। आपरो दमकतो चैरो दिखातो, लोग दर्शन कर'र धन्य होता। अब आज रा राजा कारां रै काफिलै में 'बूलैट प्रूफ' गाड़ियां में निकळै है। बै आपरो चैरो जनता नै कोनी दिखावै कारण म्हारा भाग्य विधाता शरमीला है। इण वास्तै कारां रै काफिलै में फुर्र देणीं उड़ज्या। जनता बिचारी जाती कार रै टायरां नै ई प्रणाम कर'इ रैयजा। जै किणी स्वागत, उद्घाटन समारोह पर कोई नेताजी सूं मिलणौ चावै तो ब्लेक-कमाण्डो बानै उणा कनै आवण ईकोनी देवै। जनता री ज्यान रो कांई, बा तो कीड़ा-मकोड़ा दांई सस्ती है। अेक मरै दो जन्मै। कोई मार ज्यावो भलाई। पूरी रेल में दस-पांच सिपाई हजारूं आदमियां री रक्षा रो भार लियां फिरै पण एक नेता की जीवन री सुरक्षा खातर हजारूं सिपायां अर कमाण्डोज री ड्यूटी लगावणी पड़ै, कारण अण रो जीवन बहुमूल्य है, जो अै भाग्य विधाता नी रैवैला तो पन्द्रा अगस्त पर झण्डो कुण फहैरावैला। नये भवन रो उद्घाटन कुण करैला? लेखक लोग पुस्तक विमोचन समारोह खातर तरस ज्यावैला। हजारूं लोग बेरोजगार रैय ज्याणां। ई वास्तै अण री सुरक्षा खातर बिसेस ध्यान राख्यो जावै है। कारण जनता रै पीसै रो पूरो उपयोग होवणों चायै। बिचारी जनता खून पसीनो एक करकै पीसा कमावै, सै फालतू- फण्ड में नीं जावै। आपणै भाग्य विधतावां री रक्षा खातर पीसा लागै तो आम जनता रो जीवन धन्य मान्यो जावै।

राजतंत्र में एक राजा जनता नै लूट्या करतो पण बदळै में बो कुआ, बावड़ी, धर्मशाला वगैरह बणाया करतो। आज रा राजा अकेला नीं पण पार्टी बणा'र जनता में लूट खसोट करै पण बै कुआ, बाबड़ी री बात तो दूर एक धर्मशाला तक कोनी बणावै। बै आपरो सारा पीसा बेनामी संपत्ति खड़ी कर परिवार रो पालण-पोसण करै, कै सारो पीसो स्वीस बैंक में मोल देवै, कै विदेसी कंपनियां में लगा दे ताकि जनता में त्यागी बण्या रैवे। जो जितणां पीसां आळो हुवैगो, बो उतणो ई त्यागी बाजैगो।

बात रो सार ओ ई है। गरीबी पैली भी थी, ईंब भी है। सड़का शेरसाह सूरी री टेम भी फूट्योड़ी थी बा आज भी है। ठेकेदार पैली भी राख मिलाया करता बै आज भी मिलावै है। सरकारी काम करवावण में सुविधा शुल्क पैली भी लाग्या करतो आज भी लागै है। रक्षा सौदां में कमीसन पैली भी लियो जातो आज भी लियो जावै है। नौकरी खातर पैली भी पीसा चुकता आज भी चुकाया जा रैया है। रेल पैली भी भिड़ती आज भी भिड़ै है। चोरी पैली भी होती आज भी हुवै है। लूट-खसोट, गुण्डागर्दी पैली भी चाल्या करती आज भी चालै है। पैली भी पेट्रोल पम्पा अर गैस एजेन्सियां रै आवंटन पर धांधली हुआ करती बा आज भी हुवै है। नेतावां रा बेटा नेता पैली भी हुआ करता आज भी हुवै है। सो पैली अर आज में कांई फर्क है? सिरफ एक ही फर्क है कै पैली लोग गलत काम करकै आपरो मुंह छिपाणै रो प्रयास करता, शर्म महसूस करता पण आज बै ई लोग चौड़े-धाड़ै बेशर्मा हुआ जनता नै लूटण लाग रैया है और औ काम स्वागत समारोह री साख सूं कर रैया है। सिक्का सूं तुल रैया है... और कै? जनता तो भेड़ है उण पर सूं ऊंन कुण छोड़े ?●

धर्म और 'रिलीजन'

✍ श्री नन्दलाल सिंघानिया, कलकत्ता
उपाध्यक्ष, पश्चिम बंगाल मारवाड़ी सम्मेलन

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति द्वारा संसद भवन में संविधान की स्वीकृति के समय मत प्रकाशित- ''इस तरह धर्म समाज और संस्कृति के लिए आधारभूत गुण हो गया। इसका मतलब प्राचीन काल से विस्तृत दर्शन शास्त्र जो शान्ति एवं सुखमय जीवन के लिए जो दूसरे रिलीजन में विश्वास करते हैं विकसित हुआ।

धर्म और रिलीजन दोनों शब्दों में बहुत बड़ा फर्क है। संस्कृत में धर्म शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है। धर्म 'रिलीजन' नहीं है। वास्तव में संसार की किसी भी भाषा में धर्म शब्द का कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है। सभी क्षेत्रों के मनुष्यों के क्रियाकलाप व आधिकारिक आचरणों के वे सभी नियम जो इस देश में समयानुसार विकसित हुए हैं अविस्मरणीय है एवं धर्म शब्द इसी परिभाषा के अन्तर्गत आते हैं। रिलीजन का अर्थ भगवान को अपने-अपने नाम एवं अपने अलग-अलग तरीकों से मनाने व पूजने का अपना ढंग है।

रिलीजन कई प्रकार के हो सकते हैं किन्तु धर्म सिर्फ एक ही है और यह सभी मानवों पर लागू होता है। यह मानव जीवन का सहारा है। यह किसी में भी भेदभाव पैदा नहीं करता है। धर्म शब्द की परिभाषा नहीं हो सकती है। इसकी सिर्फ व्याख्या की जा सकती है।

धर्म का उद्‌गम स्रोत है वेद जो धर्म के कुछ मौलिक नियमों को बतलाता है एवं इन नियम कानूनों का आज वर्तमान के जूरियों एवं दार्शनिकों द्वारा समय-समय पर व्याख्या की जाती है। समानता का आधारभूत नियम वेद में निहित है। (ऋगवेद ५-६०-५)

न तो कोई बड़ा है न कोई छोटा है सभी भाई-भाई हैं। यदि सभी सामूहिक रूप से कड़ी मेहनत करें तो सामूहिक रूप से सभी की उन्नति होगी।

दिल और दिमाग से किसी एक को अपने प्रस्ताव में लाइए और आप सभी दृढ़ निश्चय कर उसे जीने की शक्ति दीजिए। (ऋग वेद)

सभी में समानता और बराबरी के अधिकार की घोषणा के अलावा सभी व्यक्तियों को बोलें कि वे सच बोलें, किसी को चोट नहीं पहुंचावे, माता-पिता एवं गुरू को भगवान के समान पूजे और इस तरह का काम करें जो धर्म के नियमानुसार भुलाया न जा सके।

धर्म संसार के सभी मामलों में नींव जैसा कार्य करता है। वे लोग जो धर्म को मानते उसमें विश्वास करते हैं, इस संसार में जो कुछ भी है वह धर्म का स्वरूप है इसी लिए उनको उच्च समझते हैं।

धर्म इस संसार में सब लोगों की भलाई, उन्नति में सहारा एवं चेतना देता है और दूसरी दुनिया में आशीर्वाद है।

'धर्म' शब्द बहुत व्यापक है। धर्म के मौलिक अधिकार सभी मनुष्यों के लिए समान है जो इस तरह बताये गये हैं :-

अहिंसा, सच्चाई, दूसरों के धन को प्राप्त करने की चाह न रखना, सादा जीवन एवं उच्च विचार - ये सभी धर्म में सबके लिए आधार है।

भोजन, निद्रा, भय, कामोत्तेजना आदि मनुष्यों एवं जानवरों में एक समान पाई जाती है। लेकिन धर्म का विशिष्ट योगदान है। धर्मरहित मनुष्य जानवर के समान है।

धर्म उसको संरक्षण देता है जो धर्म की रक्षा करता है। जो धर्म का विनाश करता है वह स्वयं बर्बाद हो जाता है। इसलिए धर्म का कभी विनाश नहीं करना चाहिए ताकि हम स्वयं नष्ट न हो जाए। याने ''धर्म राजाओं का राजा है, धर्म से उत्तम कुछ भी नहीं है।''

रिलीजन शब्द संविधान में कहीं भी परिभाषित नहीं किया गया है और किसी भी तरह की कोई परिभाषा बिना संदेह के नहीं हैं।

भारत वर्ष में 'बुद्ध रिलीजन' और 'जैन रिलीजन' बहुत ही प्रसिद्ध है जो भगवान में विश्वास नहीं करते।

रिलीजन में विश्वास का तरीका और उसका सिद्धांत ही उसका आधार है। जो उनके द्वारा सम्मानित किया जाता है जो विश्वास करते हैं कि रिलीजन उनके जीवन में सदाचार की भावना लायेगा लेकिन यह कहना उचित नहीं है कि रिलीजन कुछ नहीं सिर्फ एक सिद्धांत और विश्वास है।

रिलीजन में विश्वास करने वालों और मानने वालों को सिर्फ नैतिक नियमों की ओर नहीं ले जाता बल्कि रिलीजन मान्यताओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों और पूजन के तरीकों को सम्बोधित करता है जो रिलीजन का ही एक हिस्सा है और ये प्रारूप और मान्यताएं भोजन एवं पोशाकों को बृहत रूप देते हैं।●

जातिवाद की महाव्याधि

✍ यशपाल जैन

आज के युग में हमारे राष्ट्र की काया को जिन महाव्याधियों ने बुरी तरह जर्जरित कर रखा है, उन में एक व्याधि जातिवाद की है। इस देश की १०५ करोड़ की आबादी अनगिनत जातियों-उपजातियों, मत-मतान्तरों, पंथों और सम्प्रदायों में बंटी हुई है। उन सब के अपने-अपने विश्वास है, अपनी अपनी मान्यताएं है और अपने-अपने आचार हैं। दुर्भाग्य से वे अपने दायरे में इतनी जकड़ गयी है कि व्यापक हित की दृष्टि से देख ही नहीं पाती। इतना ही नहीं, दूसरों के प्रति उनके दुराग्रह, विद्वेष आदि का विष इतना तीव्र है कि उससे समूचे राष्ट्र का स्वास्थ्य खतरे में पड़ गया है।

जातियों के उद्भव का इतिहास बड़ा पुराना है। इतिहास के पाठक जानते हैं कि उत्तर वैदिक काल में आर्यों ने अपने कार्य की सुविधा की दृष्टि से अपने समाज को चार भागों में विभक्त कर दिया था। बौद्धिक कार्य जिन्हें सौंपा, वे ब्राह्मण कहलाये, सैनिक और साहसिक कार्यों के करने वाले क्षत्रिय, व्यापार करने वाले वैश्य और सेवा करने वाले शूद्र। लेकिन स्मरण रहे कि ये चार वर्ण बन जाने पर भी तत्कालीन समाज एक बना रहा। प्रत्येक वर्ण अपना-अपना काम करता था, लेकिन उनके खान-पान, रहन-सहन आदि में कोई अन्तर न था। अंतर तो बाद में पैदा हुआ, जब कि ब्राह्मण अपने को श्रेष्ठ मानने लगे और चारों वर्णों में शूद्र हेय दृष्टि से देखे जाने लगे। कार्य की सुविधा के लिए बने वर्ण जातियों के रूप में परिवर्तित हो गये और जैसे-जैसे समय बीतता गया, इन जातियों में से शाखाएं-प्रशाखाएं फूटती गई और उनका स्वतंत्र अस्तित्व होता गया।

जातियों के साथ जातिवाद का विकास होना ही था और आज हम उसे अपने विकास की चरम सीमा पर पाते हैं। संसार के अन्य देशों में भी अनेक जातियाँ है, अनेक धर्म है, लेकिन हमारे यहां की सी विषक्तता अन्यत्र शायद ही मिले। यहां छोटे-छोटे दायरे है, उनके भीतर और तंग दायरे है। मानव मानव के बीच उसने चौड़ी खाई पैदा कर दी है और हम लोगों के सारे विचार और व्यवहार विकृत जैसे हो गये हैं। जातिवाद की व्याधि का सबसे भयंकर रूप हमें आज राजनीति में दिखाई दे रहा है। जब चुनाव होते हैं तो सारा वायुमंडल इतना दूषित हो उठता है कि लोकतंत्र का प्रयोजन ही धूल में मिल जाता है। वस्तुतः चुनाव जातिवाद को इतना उग्र बना देते हैं कि सही और निष्पक्ष निर्णय असंभव हो जाता है और जब आरंभ में ही दो और दो पांच हो जाते हैं तो आगे का सवाल ठीक कैसे हो सकता है? हमारे लोकतंत्री राज्य के लिए घोषणा की गई है कि वह सेक्यूलर स्टेट-धर्मनिरपेक्ष राज्य है अर्थात् उसमें किसी भी धर्म अथवा जाति के लिए पक्षपात या विरोध नहीं है, पर व्यवहार में हो इसके विपरीत रहा है। ब्रह्मण की भावना उकसाई जाती है कि वह ब्राह्मण को ही वोट दें, भले ही वह उम्मीदवार कितना ही अयोग्य और निकम्मा क्यों न हो, जैन जैन को वोट दें, भले ही वह कितना ही शोषक क्यों न हो, आदि आदि।

सबसे बड़े संताप की बात यह है कि जातिवाद का विष अब हमारे गांवों में फैल रहा है। पिछले कुछ वर्षों तक ग्रामों में विभिन्न जातियां तथा धर्मावलम्बी होते हुए भी वहां का जीवन एक विशाल परिवार की तरह था। वहां के निवासियों का रहन-सहन, आचार विचार और पारस्परिक व्यवहार कुछ इस ढंग का था कि बाहर से आने वाले व्यक्ति को यह जानना कठिन हो जाता था कि कौन व्यक्ति किस जाति का है। हिन्दू मुसलमानों को 'चांचा', ताऊ, भाई आदि जैसे आत्मीयता भरे शब्दों से संबोधित करते थे तो मुसलमान हिन्दू त्यौहारों में हिन्दुओं जैसी उमंग और उछाह से भाग लेते थे, लेकिन शहरों का यह रोग अब वहां भी पहुंच रहा है और वहां के जीवन में भी साम्प्रदायिक विद्वेष व्याप्त होता जा रहा है।

हमारे देश की मिट्टी को देखते यह आशा करना व्यर्थ होगा कि सारे धर्म मिट जायेंगे, जातियां नहीं रहेंगी और सारे पंथ और सम्प्रदाय एक हो जाएंगे। नहीं, उनका अस्तित्व हजारों वर्षों से रहा है और आगे भी रहेगा, पर जरूरत इस बात की है कि इस अनेकता के बीच एकता प्रतिष्ठित हो। उद्यान की शोभा एक ही वर्ण और प्रकार के पुष्पों से नहीं, उनके वैचित्र्य से होती है। यही बात धर्मों के साथ है। लेकिन इस संसार रूपी उद्यान से महक तब उठेगी जब उसके विविध धर्मरूपी पुष्पों से 'सर्वधर्म समभाव' की सुगंधि निकलेगी, अर्थात् कोई भी धर्म अपनी श्रेष्ठता का मिथ्या अहंकार दूर रखकर विनम्रतापूर्वक मानेगा कि सभी धर्म श्रेष्ठ है।

पर यह दृष्टि तब प्राप्त होगी जब कि धर्मों और जातियों में बुरी तरह से प्रविष्ट पाखण्डों को, रूढ़ियों को, अंध विश्वासों को, मिथ्याचारों को और विघातक विधि विधानों को तिलांजलि देकर धर्म और जातियों को निर्मल रूप प्रदान किया जाए। उनकी दृष्टि व्यापक और उदार हो और उनकी बुनियाद में किसी प्रकार का मताग्रह न रह कर मानव का हित साधन सर्वोपरि हो।

अपने मूल रूप में प्रत्येक धर्म का आदर्श मानव का कल्याण ही है, लेकिन झाड़ झंखाड़ों में उलझ जाने के कारण आज धर्मों की आत्मा तिरोहित हो गई है और उनका स्थान बाह्याचारों ने ले लिया है। यही कारण है कि धर्मों की अधोगति हो रही है और जातिवाद का दानव समाज की इस दुर्दशा पर अट्टहास कर रहा है।

यदि हम चाहते हैं कि हमें स्थायी सुख और शान्ति मिले, यदि हम चाहते हैं कि हमारा समाज नीतियुक्त हो और यदि हम चाहते हैं कि हमारे स्वतंत्र राष्ट्र की नींव पक्की हो तो अन्य व्याधियों से लड़ने के साथ-साथ हमें जातिवाद की महाव्याधि से सबसे पहले संघर्ष छेड़ना होगा, क्योंकि यह वह रोग है जो समाज की जड़ को बड़ी तेजी से खोखला कर रहा है।

हम किसी भी धर्म, सम्प्रदाय या पंथ के अनुयायी हो और रहे, लेकिन हमारी एक ही नीति होनी चाहिए- मानव नीति, हमारा एक ही उद्देश्य होना चाहिए, मानव हित, और एक ही घोष होना चाहिए- मानव की जय !●

वह तेज वह लावण्य- रूपक अलग अलग

✍ श्रीमती सरला अग्रवाल

स्टेशन के लिए रवाना होने से पूर्व मैंने कई बार रेलवे इन्क्वायरी को फोन करके ट्रेन के आने का समय पूछा था। हर बार ही उत्तर मिला 'ट्रेन राइट टाइम पर आ रही है।'

मुझे विस्मय हुआ था कि अक्सर ही विलम्ब से आने वाली गाड़ी उसी दिन सही समय से कैसे आ रही है... जल्दी-जल्दी कर घर का आवश्यक कार्य समेट, भइया-भाभी के लिए लंच पैक कर, मैं ड्राइविंग व्हील पर जा बैठी। बच्चे स्कूल जा चुके थे और अनिमेष अपने कार्यालय।

हमारे घर से स्टेशन की दूरी बीस किलोमीटर के लगभग है, अतः अच्छी स्पीड से गाड़ी दौड़ाती मैं समय पर स्टेशन जा पहुंची। कुली से सामान उठवा कर, सीढ़ियाँ चढ़कर, ब्रिज पार कर प्लेटफार्म नं. चार पर हमें पहुंचना था।

कुली ने हमारी कोच नं. एस टू के हिसाब से प्लेटफार्म पर सामान रखा ही था कि एनाउंसमेंट होने लगा.. दिल्ली से आने वाली देहरादून एक्सप्रेस आधा घंटा विलम्ब से चल रही है। निर्धारित समय से आधा घंटा लेट आने की संभावना है।

'लीजिए भइया, इतनी दफा इन्हें फोन कर-करके पूछा था, तब नहीं बताया कुछ इन लोगों ने और अब एनाउंस कर रहे कि ट्रेन आधा घंटा लेट आयेगी। मैं सारा घर यूँ ही बिखरा हुआ छोड़ कर आई हूं।'

भईया के मुख पर लाचारगी स्पष्ट थी... फिर भी उन्होंने अपनी खोजी निगाहें चारों ओर दौड़ाई.. एक खाली बैंच दिखाई देते ही कहा, 'चलो वहां चल कर बैठते हैं।'

बैंच सामान से अधिक दूर नहीं थी... सामान भी हल्का-फुल्का ही था, आजकल तो सभी लोग कम सामान के साथ यात्रा करना पसंद करते हैं। पर भईया-भाभी की आयु और गिरे स्वास्थ्य के कारण ही कुली करना पड़ा था... वैसे भी सीढ़ियों पर सामान लेकर चलना अब उनके वश की बात नहीं रही थी... सबने एक-एक अदद उठाया और उस खाली पड़ी बैंच को आबाद कर दिया। एक मिनट की भी देरी हो जाती है तो वह बैंच हमारे हाथ नहीं आनी थी, क्योंकि गाड़ी के विलम्ब से आने की बात सुनते ही सभी यात्रियों ने बैठने की जगह ढूंढनी आरंभ कर दी थी।

ट्रेन आने का समय हो जाने के कारण प्लेटफार्म पर मची अफरातफरी और भीड़ में होती हलचल धीरे-धीरे शान्त होने लगी। फल, मैगजीन, पूड़ी-सब्जी आदि के ठेले चुपचाप किनारे से लगने लगे.. अचानक आया भूचाल मानों ठहर गया हो। आसपास बिखरे सामान को अपने पास खिसका कर मैं भइया-भाभी के बीच में बैठ गई।

'इतने कम समय के लिए आए हैं आप लोग जी भर कर बातें तक नहीं हो पाई... हां, सुदेश के कैसे हाल चाल है? काफी समय से उससे मिलना नहीं हो पाया... पत्र तो वह कभी लिखती ही नहीं है... मैं कभी लिख भी दूं तो जवाब तक नहीं मिलता।

'अरे, बहुत ही व्यस्त रहती है वह तो... एज यूजुअल.. कभी लंदन तो कभी पेरिस;. कभी चाइना तो कभी थाईलैंड ! महीने दो महीने में कहीं बाहर का ट्रिप लग ही जाता है... विदेशी फ्रैंड्स भी खूब आकर ठहरते हैं उनके यहां... दोनों के ही।' भाभी ने गर्व से कहा, पर स्वर में करारापन नहीं, शिथिलता थी.. लगा, कहीं कोई शूल चुभ रहा हो जैसे।

'और बच्चे?' मैंने उनके चेहरे पर अपनी खोजी निगाहें जमा दीं।

'बच्चे ठीक है... लड़कियां बड़ी हो गई हैं, स्कूल जाती हैं... संजीव बहुत संभालते हैं भइया', भाभी ने ऐसे कहा मानों इसमें भी कुछ राज छुपा हो.. मुझे लगा कि मैंने भाभी की दुखती रग पकड़ ली है.. वह बहुत कुछ उगलना चाहती थी पर कह नहीं पा रही थी।

'वैसे भाभी, आज के समय में जब स्त्री और पुरुष दानों ही कमाने लगे हैं और पत्नी को भी इस कार्य के लिए कई घंटे के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता है.. यह बहुत जरूरी हो गया है कि पति पत्नी के घरेलू कार्यों में भी पूरा या आंशिक सहयोग करे, क्यों?' अपनी बात का समर्थन पाने के लिए मैंन अपनी निगाहें भी के चेहरे पर डाली...

'बात तो तुम सही कह रही हो सौम्या, पर कितने प्रतिशत पति यह सोच पाते हैं? मनु महाराज ने स्त्री-पुरुष को काम बांटते समय अनिवार्य कार्य गन्दगी और झंझट वाले तो सभी स्त्रियों के हिस्से जो डाल दिये हैं। दिन में दस बार चाय-नाश्ता बनाना हो तो सब स्त्री के सिर, चाहें वह अपने घरों मेंहो या कहीं अतिथि बन कर भी जाये... बच्चे पालने हैं तो स्त्री के सिर, घर की सफाई करनी हो तो स्त्री के सिर..। पति के साथ-साथ बड़े होते बच्चों को भी मां का सहयोग करना जरूरी है.. अब देखो उनके मात्र चार सदस्यों के परिवार में भी काम को लेकर हर समय तनातनी बनी रहती है। सुदेश की लड़कियां उसे तनिक भी सहयोग नहीं देती.. बड़ी लड़की तृप्ति तो पूरी खंका है.. सुदेश से उसकी तनिक भी नहीं बनती।'

'वजह ?' मैंने भाभी से पूछा, मुझे सच में आश्चर्य हो रहा था यह सुनकर। अक्सर बेटियाँ मां के कहने में रहती है और घर के कामों में माँ का हाथ भी बाँटाती हैं। पुत्रियों की बनिस्बत पुत्र उच्छृंखल होते हैं।

'अरे वजह कोई एक हो तो बताई जाए..वह तो बहुत ही तेज लड़की है... घर का काम-वाम नहीं होता उससे। वैसे काम की इतनी बात नहीं है, शुरू से ही उसकी अपनी मां से कभी नहीं बनी।

मेरी आंखों में प्रश्नों की लड़ लहराती देखकर भाभी बोली, 'अब तुम्हें कैसे समझाऊँ.. हर समय ही महाभारत मचा रहता है उनके घर में। भगवान का दिया सब कुछ है, किसी चीज की कमी नहीं है, नौकर वह रखना नहीं चाहती। आजकल

के जमाने में दो-दो किशोरियाँ घर में हो और खुद पूरे दिन दोनों को ही बाहर रहना हो तो नौकर कैसे रखे?'

'बाई क्यों नहीं टिकती?' मेरा सहज प्रश्न था।

'वहीं... उनका समय पर नहीं आना, हर तीसरे दिन छुट्टी पर बैठ जाना, कई-कई दिनों की छुट्टियाँ बिना पहले पहले से बताये मार लेना, फिर तनख्वाह से एक पैसा भी नहीं कटने देना। तनिक-सा भी कुछ समझाओ या डाँटों तो नौकरी छोड़ने की धमकी देना। उनकी बेवजह धौंस-पट्टी सुदेश को बर्दाश्त नहीं होती.. वह कहती है ये चोरी और सीनाजोरी नहीं चलेगी मेरे साथ। समय पर आओ, पूरा काम करो और पूरे पैसे लो.. सप्ताह में एक दिन छुट्टी लो, पर पहले से ही तय करके जैसे हर रविवार या अन्य किसी एक दिन ... यह नहीं कि जब मन आया लगाचार चार-पांच दिन के लिए घर बैठ गई बिना खबर भिजवाये। आजकल सभी के यहाँ टेलीफोन हैं, तुम भी पास के किसी बूथ से फोन करके इत्तला कर दो। पर ये लोग इतनी बातें कहां समझते हैं... पैसे काटे और बाई अगले दिन से गायब। फिर नये सिरे बाई ढूंढों, उसे अपने साँचे में ढालों, काम बताओ, सिखाओ। ऐसे में काम का भार तो बच्चों पर भी आता है। माँ-बाप तो चले जाते हैं अपने-अपने कार्यालय। बच्चे ज्यादा देर घर में रहते हैं। सुदेश बड़ी पुत्री तृप्ति को जो-जो काम दिन में करने के लिए बता कर जाती है, या स्लिप पर लिख कर छोड़ जाती है, वह शाम को घर आने पर किये हुए नहीं मिलते तो घर में घमासान मचता है।

'लड़कियाँ कहती हैं हमें मां न तो कुछ पढ़ाती है न बताती हैं, ऊपर से घर का काम और करवाती हैं। हम अपने स्कूल में दिया होमवर्क पूरा करें या घर में बर्तन मांजे, कपड़े धोयें और खाना बनाये? एक दिन तो मेरे सामने ही सुदेश ने तृप्ति की खूब धुनाई की... गालियाँदीं। मैंने उसे खूब समझाया कि लड़की अब सयानी हो गई है.. पर वह कहाँ मानने वाली थी, चीख कर गुस्से से बोली, मम्मी आप बीच में मत पड़िए। अब ऐसी बच्ची नहीं है यह, कैसे पटर-पटर जवाब दे रही है? जरा-सी कोई बात नहीं सुनती, जरा-सी हैल्प नहीं करती किसी काम में भी। संजीव को नाश्ता तक बना कर नहीं दे सकती क्या यह? ऊँट सी बढ़ती जा रही है। हम नहीं काम करते थे इसकी बराबर की उम्र के थे तब, बताओ आप?'

'बेटा, हमारे और तुम्हारे समय में जमीन-आसमान का फर्क आ गया है। तब तुम्हारी माँ नौकरी पर जाती थी क्या? वह तो हर समय घर में तुम्हारे पास रहती थी और हर समय तुम्हारा मुंह जोहती रहती थी। नहलाना-धुलाना, नाश्ता, चाय, दूध, खाना, फल सब तुम्हारी माँ समय पर तैयार करके खुद ही तुम्हें दे देती थी। तब तुम्हारे मन में छुट्टी वाले दिन, माँ के बीमार होने पर या कहीं बाहर जाने पर इस बात का चाव-सा रहता था कि अपने मन से घर का कोई काम करके हम बड़ों की प्रशंसा पाएँ। पर आज के जमाने में माँ के नौकरी पर घर से अधिकांश समय बाहर रहने के कारण बच्चों पर घर का उत्तरदायित्व एक मजबूरी बन कर खड़ा हो गया है। ये नन्हें कोमल फूल हर समय स्वयं को असुरक्षित, उपेक्षित-सा महसूस करते है... उन्हें अपने स्नेह से सींचने की अपेक्षा तुम उनसे आशा करती हो कि हर दिन, हर समय, हर काम में वह तुम्हारी हैल्प करें।'

'तो नौकरी छोड़ दूं' - उसने तैश में आकर पूछा था।

'मैं यह नहीं कह रही हूं... अब एक जने की कमाई से गुजारा ही कहाँ है बेटा.. महानगरों के जीवन में, आज के उच्च रहन-सहन के स्तर को बनाये रखने के लिए पति-पत्नी दोनों को ही कमाना होगा।'

'यही तो बात है मम्मी, अब यह ढोल तो औरत के गले में पड़ ही गया है।' वह कुछ स्वर को नीचा करके बोली।

'उसने खुद ही डाला है.. और विकल्प ही क्या था उसके पास, अपनी अस्मिता को बचाये रखने के लिए? शिक्षित और आत्मनिर्भर बने बिना वह पुरुष की निगाहों में 'ठीकरा' जो बन गई थी।' मैंने उससे कहा था।

'घर में हर समय मार-डाँट खाती तृप्ति सचमुच इतनी ढीठ बन गई थी कि तुम्हें क्या बताऊँ सौम्या। मेरा मन तो उन दोनों माँ-बेटी को लेकर बेहद व्यथित और तनावग्रस्त रहने लगा था, पर मैं कर भी क्या सकती थी? जब भी वहाँ जाती हर समय घर में युद्ध जैसा वातावरण रहता। 'तूने यह नहीं किया, तूने वह नहीं किया।' आप मेरी माँ नहीं हो, आपने मुझे जन्म नहीं दिया... आप वर्षा को प्यार करती हो, वर्षा आपकी बेटी है, मैं नहीं' - तृप्ति कहती।

'माँ-बेटी की तू-तू मैं-मैं से संजीव भी परेशान हो उठे थे। पिछले वर्ष तो तृप्ति के हर विषय में मार्क्स बहुत ही कम आये। तब गुस्से में सुदेश ने कहा, मैं अब तुम्हें होस्टल में भर्ती कराऊँगी तृप्ति, तेरी यही सजा है। वहां पर तुझे घर का कोई काम नहीं करना पड़ेगा.. न ही मेरी तरह कोई मारने-डाँटने वाला होगा। तब देखूंगी कि तू कितने मार्क्स लाती है। अभी मार्क्स कम आने पर तूने मुझे दोषी ठहरा दिया.. घर के काम का तो बहाना है तेरा, जबकि एक पत्ता भी इधर से उधर नहीं करती तू, महा कामचोर लड़की।

'बस साहब ! जुलाई आते ही उसे उन्होंने पिलानी के बढ़िया स्कूल में भर्ती करा दिया। आठवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में मार्क्स और डिवीजन कम होने के कारण उसे एडमिशन मिलने में कुछ दिक्कत तो हुई, पर एक तो संजीव का शिक्षा विभाग में अच्छा प्रभाव, दूसरे उसके एडमिशन टैस्ट में अच्छे अंक आने के कारण भी दाखिला मिल ही गया।

तृप्ति को पिलानी भेज कर सुदेश ने चैन की साँस ली। कहती थी, 'बहुत वर्षों के बाद मैं चैन की नींद सोई मां, उस नालायक लड़की के रहते तो कभी ठीक से सोना नसीब नहीं हुआ... आफिस से आते ही कोई न कोई ऐसी गड़बड़ कर बैठती थी कि आराम हराम हो जाता था।

'बहुत शान्ति हो गई है घर में उसे होस्टल में भेजने के बाद से... यह तो सच है।' संजीव ने भी कहा था तब।

जब तृप्ति को भेजे दो तीन माह व्यतीत हो गये तो संजीव ने कहा था, 'अरे सुदेश, खूब हो तुम तो ! लड़की को होस्टल भेज कर भूल ही गई, जाकर कभी-कभी उसे संभालो तो.. वह भी खूब है, वहां जाकर न कभी फोन किया, न चिट्ठी-पत्री ही दी। उसने भी सोचा होगा कि चलो अच्छा हुआ पिण्ड छूटा इन मारने-डाँटने वाले माँ-बाप से।'

बड़ी हिम्मत जुटाकर तीन महीने के बाद

संजीव पहली बार डरते-डरते तृप्ति की स्कूल आचार्य से मिलने पिलानी पहुंची। उन्हें भय था कि वहां पहुंचते ही उन्हें प्रिंसिपल से लड़की के बारे में न जाने क्या-क्या सुनना पड़ेगा। हो सकता है कि कहीं वे उसकी बदतमीजियों और शैतानियों के कारण उसे स्कूल और होस्टल से निकाल ही दें, पहले भी उसके मार्क्स अच्छे नहीं थे.. और वापसी में उन्हें उसे अपने साथ घर वापस लाना पड़े। सुदेश तो इसी भय के कारण उनके बहुत कहने पर भी साथ जाने के लिए तैयार ही नहीं हुई थी, 'बोली, कौन जाये उस दुष्ट, असभ्य चुड़ैल के लिए... जहां जायेगी वहां से उसकी शिकायतें और बदनामी आयेगी।'

संजीव ने अपना कार्ड चपरासी द्वारा अंदर प्रिंसिपल के पास भिजवाया... और बाहर खड़े होकर बुलावे की प्रतीक्षा करने लगे। उनके मन में उस समय असीम उद्वेलन चल रहा था... अनेक विचार आ रहे थे और जा रहे थे। वह स्वयं को हर स्थिति के लिए तैयार कर रहे थे ताकि आने वाले तूफान का सामना धैर्यपूर्वक बिना घबराहट के कर सकें... न जाने कितनी शर्मिन्दिगी उठानी पड़े, क्या-क्या सुनना पड़े उन्हें.. पर जब ओखली में सिर दे ही दिया है तो मूसलों का क्या डर। वह यह सब सोच ही रहे थे कि तुरंत चपरासी वापस आ गया, 'चलिए सर मैडम आपको बुला रही है।'

'ओफ ! लगता है उधार खाये बैठी है उगलने के लिए सब कुछ, तभी तो उन्होंने तुरंत ही बुला भेजा', संजीव ने सोचा और कदम आगे बढ़ा दिये।

संजीव के अन्दर पहुंचते ही प्रिंसिपल एकदम उठकर खड़ी हो गयी मानों उन्हें वे स्टैडिंग ओवेशन दे रही हों और गर्मजोशी से स्वागत करते हुए मुस्कुरा कर बैठने के लिए संकेत किया- 'अच्छा तो आप हैं मिस्टर संजीव कुमार, तृप्ति के पिता?' 'पिछली बार तृप्ति के एडमीशन के समय जब आप यहां आये, तब मेरी आपसे भेंट नहीं हो पाई, मैं आउट ऑफ स्टेशन थी।'

इतना सुनते ही संजीव तो हक्का-बक्का सा रह गया कि न जाने अब क्या-क्या सुनने को मिलेगा उन्हें उनकी नालायक पुत्री के विषय में। यहां आकर भी न जाने क्या-क्या गुल खिलाये होंगे उसने ! रोष में आकर होस्टल की न जाने कितनी साथियों की चोटियाँ पकड़-पकड़ कर खींची होगी, कितने कप-प्लेट चाय बेस्वाद लगने के कारण फेंक तोड़े होंगे और कितनी ही बार भोजन खराब लगने के कारण वह गुस्से में बुड़बुड़ करती भूखे पेट सो गई होगी। बाथरूम में नहाने जाती होगी तो उसे घंटा भर तक बंद करके अन्दर बैठी रहती होगी, लड़कियां द्वारा खटखटा-खटखटा कर उसे बाहर निकलने के लिए खुशामद करती रही होगी। खाना खाती होगी तो मिर्चों वाला या अधिक या कम नमक वाला खाना बनाने के लिए होस्टल के मैस के कुक को सौ-सौ बार कोसती रही होगी। कभी क्लास में झगड़ती होगी तो कभी होस्टल में ! इतनी बदमिजाज लड़की को निभाना क्या कोई हंसी-खेल है? वे प्रिंसिपल की भर्त्सना सुनने के लिए मानसिक रूप से स्वयं को तैयार कर ही रहे थे कि उधर से स्वाभविक स्वर में (व्यांगात्मक नहीं) अप्रत्याशित रूप से कहा गया प्रशंसात्मक वाक्य सुनकर एकदम ही चौंक पड़े ! मुख उठा कर ऊपर देखा तो प्रिंसिपल सहजभाव से मुस्कुरा रही थीं... उनका चेहरा प्रसन्नता और सराहना के आनंद से पुलिकत था.. जो वातावरण को सुवासित कर रहा था...

'बड़े सौभाग्याली पिता है आप मिस्टर संजीव कुमार।' उन्होंने कहा था।

'जी?' वह अप्रत्याशित रूप से सकपका उठे... कहीं यह व्यंग्य तो नहीं.. मन में संशय के बादल फिर से घिर आये थे।

'जी हां ! तृप्ति जैसी हंसमुख मेधावी बालिका मेरी इन्स्टीच्यूट में आज तक नहीं आई थी।'

'जी ! सच कह रही हैं क्या आप ?' वे सचमुच विस्मित थे। क्या सचमुच यह सत्य हो सकता है ? तृप्ति और हंसमुख। जो हर समय घर में मां, छोटी बहन और नौकरानी के साथ झगड़ती रहती है। तृप्ति और मेधावी ? जिसने पिछली वार्षिक परीक्षा में इतने कम अंक प्राप्त किये थे ? वैसे भी कभी कोई भी बात उसके भेजे में आसानी से घुसी है क्या ? उन्होंने मन ही मन सोचा था।

'मिस्टर संजीव ! आपकी पुत्री ने आपका ही नहीं हमारे स्कूल का नाम भी रोशन किया है। उसका लिखा और खुद ही डायरेक्ट किया हुआ 'प्ले' आजादी की स्वर्णजयन्ती पर यहां सभी स्कूलों में दिखाया गया- अब उसकी वीडियो रिकार्डिंग हो रही है- आगामी २६ जनवरी को वह दूरदर्शन से प्रसारित होगा। गजब की कवयित्री, गजब की नाटक लेखिका और होनहार नाटक निर्देशिका है वह ! उसकी कविताएं इतनी भावपूर्ण हैं कि उन्हें सुनकर श्रोता के नेत्रों में अश्रु छलछला आते हैं। हंसमुख और विट्टी इतनी है वह कि सभी उसके साथ वार्तालाप करके स्वंय को धन्य समझते हैं। इस बार के टेस्ट्स में उसके हर विषय में सर्वोच्च अंक आये हैं। इतनी मेधावी, योग्य और गुणी पुत्री पाने के लिए आप हमारी बधाई के पात्र हैं। सच तो यह है कि ये सब गुण उसमें आपने ही तो विकसित किये हैं।'

'नहीं, नहीं... हमने कुछ भी नहीं किया, यह चमत्कार तो आपने ही किया है।' संजीव के मुख से अनायास ही निकल पड़ा था।

'ओह बिलीव मी मिस्टर सिंह, योर डॉक्टर इज ए जीनियस, शी इज ऑलराउण्डर, आई हैव नॉट सीन सच ए लवली ओबीडियन्ट जीनियस चाइल्ड इन माई होल लाइफ ! एवरी बडी इन द स्कूल स्टॉफ एण्ड होस्टल लव्स हर।'

मंत्र-मुग्ध से संजीव अवाक् होकर आचार्याजी की बातें सुनते रहे और सोचते रहे कि सचमुच उनके पास रहकर तो देश के भावी कर्णधार का शोषण ही हो रहा था। हमने उसे डाँट, मार, घूंसों, कान पकड़ कर मुर्गा बनाने के अतिरिक्त और दिया ही क्या था ? उसकी प्रतिभा, उसके गुण, उसकी मेधा को हम लोगों ने समझा ही कहां था, जो उसे निखारने का प्रयास करते ! उस समय उनके नेत्रों के समक्ष तृप्ति के यहां आने से कुछ समय पूर्व की घटना साकार हो उठी... उस दिन संध्या साढ़े छह बजे के प्लेन से लंदन से कुछ अतिथि घर में आने वाले थे। उसी संध्या सुदेश की उसके कार्यालय में एक महत्वपूर्ण मीटिंग बुलाई गई थी। वह लंच में घर आई तो / इस विषय में काफी चिन्तित थी। दोनों पुत्रियों के स्कूल से आने पर उसने अपनी यह समस्या उनके सम्मुख रखी और उन्हें

हिदायत दी कि वह अतिथियों का ध्यान रखें। उन विशिष्ट अतिथियों को विशेष रूप से चाय-नाश्ता स्वयं करवायें तथा बाई से खाना बनवाकर आदरपूर्वक परोसें।

बाई पार्टटाइम थी। वह खाना बनाकर चली जाती थी। इस पर तृप्ति एकदम उबल पड़ी थी। 'मम्मा आपके गेस्ट्स को यह कैसे विदित होता है कि कल तृप्ति का टेस्ट है। कल मेरा फिजिक्स का टेस्ट है, होमवर्क भी ढेर सारा मिला है, टेस्ट के लिए पढ़ाई भी करनी है।' वह मचल पड़ी थी।

'अब जब गेस्ट आ रहे हैं तो उन्हें अटेण्ड तो करना ही है न? मेरी आज एक अर्जेन्ट मीटिंग रखी गई है, बहुत ही जरूरी, उसे बीच में छोड़कर तो मैं आ नहीं पाऊंगी... हो सकता है कि मुझे आने में रात के दस-बारह बज जायें... छः-सात बजे तो मीटिंग शुरू ही होगी। बाहर से कई लोग आ रहे हैं, कर लेना बेटी... प्लीज!'

'मां, आपके तो रोज ही कोई न कोई गेस्ट आते हैं और आप सारा काम मुझ पर ही छोड़ देती हैं। मेरी स्कूल की रिपोर्ट हर बार बिगड़ जाती है।' वह भुनभुना पड़ी।

सुदेश ने आव देखा न ताव, झट से एक झन्नाटेदार तमाचा उसके कोमल गालों पर रसीद कर दिया। 'कितना भी प्यार से बात करो, रिक्वेस्टिंग मैनर में कहो तब भी यह लड़की अपनी ही चलाती है, बड़ी आई.ए.एस. की पढ़ाई कर रही है न?'

'पढ़ाई तो पढ़ाई है! चाहें जिस भी कक्षा की क्यों न हो! आप हमेशा मुझे ऐसे ही दबाती रही हैं। मुझे कभी प्यार नहीं करतीं, बस नौकरानी की तरह ट्रीट करती हैं... बल्कि इससे भी खराब! उसे थोड़ा न तमाचा मार सकती हैं, वह तो कल से आना ही बन्द कर देगी पर मैं तो यहीं रहूंगी न इसी घर में... इसलिए मुझसे मनचाहा काम कराती हो, डांटती-डपटती हो। देख लेना एक दिन मैं भी घर छोड़कर चली जाऊंगी। नहीं करूंगी मैं आज तुम्हारा कोई काम, कर ले क्या करोगी। खुद की मीटिंग छोड़ो न?' वह रो-रोकर कहती रही थी।

उस दिन अच्छा-खासा हंगामा हो गया था उनके घर में। यों ऐसी बातें नयी नहीं थी। अक्सर ही यह सब होता था और अंत में तृप्ति को ही पढ़ाई छोड़कर घर के काम की बागडोर संभालनी पड़ती थी। उस बार भी तृप्ति के साइंस में काफी कम अंक आये थे। वह रात को ग्यारह बजे तक अतिथि-सत्कार में लगी रही थी। सुबह छः बजे तो उनकी स्कूल बस लेने आ ही जाती थी।

तभी उन्हें यहां आने से पूर्व की बात भी स्मरण हो आई। यहां आने का कार्यक्रम बनाते समय उन्होंने सुदेश से कहा था, तुम भी चलो अपनी बेटी को देख-संभाल आओ, पुत्रियों को मां से अधिक प्रेम होता है। वहां पर उसकी सहेलियों, होस्टलर्स एवं अध्यापिकाओं से मिलकर यथार्थ का पता तुम ज्यादा अच्छी तरह लगा पाओगी। इस पर सुदेश ने तुनक कर बेरुखी से कहा था, न बाबा न! मुझे पहले से ही मालूम है कि वहां जाकर क्या होना है... सारी की सारी होस्टलर्स, वॉर्डन और टीचर्स जली-भुनी बैठी होंगी... बर्र के छत्ते में हाथ देने चलूं? उस ढीठ और कामचोर लड़की ने जो ख्याति अर्जित की होगी, मुझे सब विदित है।'

काश! वह मेरे साथ यहां आई होती और अपने कानों से प्रिन्सिपल की बातें सुनी होतीं!

तभी 'मे आई कम इन मैडम', एक विश्वासभरा स्वर कमरे के बाहर से उभरा।

'कम इन, कम इन! माई स्वीट चाइल्ड!' प्रिन्सिपल ने मुस्कुराते हुए बड़ी गर्मजोशी के साथ कहा। संजीवकुमार के वहां आते ही प्रिन्सिपल ने चपरासिन को तृप्ति को बुलाने के लिए भेज दिया था।

तृप्ति कमरे में आकर प्रिन्सिपल के सामने खड़ी हो गई, 'यस मैडम, आपने मुझे बुलवाया?' उसने अत्यन्त नम्रतापूर्वक पूछा। प्रिन्सिपल ने संकेत से उसका ध्यान उसके पिता की ओर खींचा। तृप्ति ने आश्चर्य से देखा कि उसके सामने वाली कुर्सी पर तो वहां उसके पापा बैठे हैं।

'पापा!' वह उनके पास आकर सटकर खड़ी हो गई। संजीवकुमार ने उठकर पुत्री को गले से लगा लिया। 'कैसी है?' उन्होंने प्यार से पूछा।

'अच्छी!' तृप्ति मुस्करा पड़ी।

'तृप्ति अपनी कक्षा की मॉनिटर और प्राक्टर भी है' प्रिन्सिपल ने संजीव को बताया।

'सच!' उन्होंने खुश होकर तृप्ति की ओर देखा।

'अत्यन्त प्रतिभाशाली है आपकी पुत्री, सर्वगुणसंपन्न!'

सच ही तृप्ति की तो वहां आकर दुनिया ही बदल गई थी। उसके मुख पर गजब का तेज, आत्मविश्वास, लावण्य और प्रसन्नता का महासागर लहराने लगा था। इतनी ताजगी, सौम्यता और प्रसन्नता इससे पूर्व उन्होंने कभी तृप्ति के मुख पर नहीं देखी थी... वह जन्नत का फरिश्ता लग रही थी... छोटी-सी, प्यारी-सी परी... कहीं वह अपने परिलोक को उड़ तो नहीं जायेगी? कितना परिवर्तन आ गया है इन चंद महीनों में ही, उनकी पुत्री में, वे हैरान थे।

इतना कह कर भइया और भाभी तृप्ति के प्रति गर्वान्वित हो मुस्कराने लगे थे।

'तो यह हुआ', भाभी ने ठहाका लगा कर कहा।

'कमाल हो गया' मैंने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी।

तभी शोर मच उठा था... ट्रेन आ गई, ट्रेन आ गई। प्लेटफार्म पर हलचल मच गई.. बैठे हुए, लेटे हुए लोग उठ कर खड़े हो गये और अपना सामान संभालने लगे... भइया-भाभी ने मुझे अपने गले से लगाते हुए कहा, 'अच्छा, खूब ही आनन्द आया तुम्हारे पास आकर... अब तुम आना समय निकाल कर, ठीक है न?'

'हां! भइया-भाभी आप जाते ही फोन अवश्य कर दीजिएगा, मुझे चिन्ता बनी रहेगी। चिट्ठी भी लिखिएगा। चिट्ठी का अपना महत्व है... उसे सहेज कर रखा जा सकता है।'

'अच्छा, बाय!' कह कर वे सामने खड़ी ट्रेन में अपना कम्पार्टमेंट ढूंढने लगे।●

आफिस में काम करण हाळी रीता पर एक कर्मचारी फिदा होगो।

रीता रै घर रो पतो कर कै बो रीता रै मुहल्ले में पूंचगो।

अेक सज्जन सूं पूछयो- रीता कठै रेवै है?

सज्जन - आपनै कै काम है रीता सूं?

कर्मचारी- म्है उण रो भाई हूं, मिलणो है...

सज्जन- फरमाओ में रीता रो पति हूं।

रूपकुँवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला

✍ देवी प्रसाद बागड़ोदिया, डिब्रूगढ़

ज्योति प्रसाद का जन्म सन् १९०३ के १७ जून को उस सन्धिक्षण में हुआ जब असमीया संस्कृति तथा सभ्यता अपने मूल रूप से विच्छिन होती जा रही थी। प्रगतिशील विश्व की साहित्यिक और सांस्कृतिक धारा से असम का प्रत्यक्ष संपर्क नहीं रह गया था। यहां का बुद्धिजीवी वर्ग अपने को उपेक्षित समझकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रहा था। अंग्रेजों के आने के पश्चात भारतीय साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान आदि क्षेत्र में एक अभिनव परिवर्तन आने लगा था। असम इस परिवर्तन से उचित लाभ उठाने में अक्षम हो रहा था। ज्योतिप्रसाद ने अपनी प्रतिभा से, अपने विशाल वाङ्मय से असम की जनता को नई दृष्टि देकर विश्व की प्रगतिशील विशाल सांस्कृतिक धारा के साथ असम की सांस्कृतिक धारा को एकाकार कर दिया। जिन महानुभावों की अथक प्रचेष्टा से आज के असम ने आधुनिक शिल्प-कला, साहित्य आदि के क्षेत्र में प्रगति की है, उनमें सबसे पहले ज्योतिप्रसाद अगरवाला का ही नाम गिनाया जायेगा।

ज्योति प्रसाद के पूर्वपुरुषों का मूल स्थान राजपूताना के जयपुर राज्य के अन्तर्गत केड़ नामक गाँव है। कालान्तर में वे वहाँ से टाँई जाकर बसे। ज्योतिप्रसाद के प्रपितामह नौरंगराम अगरवाला का जन्म टाँई में ही हुआ था। उनके जन्म के दस ग्यारह वर्ष बाद ही यह परिवार बीकानेर रियासत के चुरू नगर में आकर बस गया। बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु हो जाने के कारण उनके परिवार का जीवन कष्टमय हो गया, अत: छोटी उम्र में ही नौरंगराम जीविका की तलाश में उत्तर-पूर्व के राज्यों का भ्रमण करते हुए असम के ग्वालपाड़ा नगर पहुंचे जो उस समय इस क्षेत्र का प्रमुख व्यावसायिक केन्द्र था। कुछ समय नौरंगराम ने रतनगढ़ के पोद्दार परिवार की फर्म में मुनीम का काम किया। उन्हें तेजपुर के पास विश्वनाथ (वर्तमान विश्वनाथ चारआली) में स्थित दुकान का कार्यभार सौंपा गया। आगे चलकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी तथा वहां से सैंतीस किलोमीटर दूर गमीरी में अपनी दुकान कर ली। व्यवसाय चल निकला और गमीरी उनका स्थायी निवास बन गया। नौरंगराम ने स्थानीय असमीया कन्याओं से दो विवाह किये। उनसे नौरंगराम को तीन पुत्र हुए- हरिविलास, थानुराम और काशीराम।

हरिविलास अगरवाला ने वाणिज्य-व्यवसाय में सराहनीय प्रगति की। व्यावसायिक प्रतिभा के साथ कला, साहित्य तथा संस्कृति के प्रति भी उनकी अभिरूचि थी। उन्होंने महापुरूष शंकरदेव तथा उनके पट्टशिष्य माधवदेव द्वारा रचित कीर्तन, दशम तथा नामघोषा आदि पुस्तकों का प्रथम मुद्रण तथा प्रकाशन करवाया। हरिविलास के पाँच पुत्र थे- विष्णुप्रसाद, चन्द्रकुमार, परमानंद, कृष्णप्रसाद तथा गोपालचन्द्र।

परमानन्द अगरवाल संगीत के प्रेमी थे। इनका विवाह किरणमयी देवी से हुआ था। उसी दम्पति की प्रथम सन्तान हुए ज्योतिप्रसाद अगरवाला, जिनकी सतरंगी ज्योति से असमीया संस्कृति का नवालोक प्रारंभ हुआ।

ज्योतिप्रसाद का जन्म डिब्रूगढ़ अंचल के तामुलबाड़ी चाय-बगीचे में हुआ। उन्होंने हाईस्कूल की शिक्षा डिब्रूगढ़ तथा तेजपुर में प्राप्त की। सन् १९२१ में वे तेजपुर सरकारी उच्च विद्यालय से प्रवेशिका निर्वाचन परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, दूसरे साल कलकत्ता में चित्तरंजन दास द्वारा स्थापित राष्ट्रीय विद्यापीठ से प्रवेशिका परीक्षा में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। वह समय था महात्मा गाँधी द्वारा संचालित असहयोग आन्दोलन का। ज्योतिप्रसाद उच्च शिक्षा से मुँह मोड़कर आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने लगे। असहयोग आन्दोलन धीमा पड़ने पर कलकत्ते के नेशनल कालेज में दो साल तक अध्ययन कर कुछ दिन अपने ताऊ चन्द्र कुमार अगरवाला द्वारा स्थापित न्यू प्रेस के संचालन में सहयोग दिया। सन् १९२६ में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे इंग्लैंड गये। वहां एडिनबरा विश्वविद्यालय में कुछ दिनों तक अध्ययन करने के बाद वे लंदन से जर्मनी गये।

जर्मनी में ज्योतिप्रसाद ने प्रसिद्ध भारतीय चलचित्र निर्माता-निर्देशक हिमांशु राय की सहायता से सात महीने चलचित्र-कला के सम्बन्ध में प्रशिक्षण प्राप्त किया। वहीं पर उन्होंने अपने शोणित कुंवरी नाटक के अंग्रेजी संस्करण को चलचित्र रूप देने का प्रयास किया, पर सफल नहीं हो पाये। सन् १९३० में ज्योति प्रसाद भारत की ओर चल पड़े। रास्ते में यूरोप के अनेक देशों का भ्रमण करते हुए टर्की पहुंचे। टर्की से बगदाद, बेबिलोन आदि स्थानों को देखते हुए वे भारत लौट आये। उन देशों का भ्रमण करते समय उन्हें वहां की कला तथा संस्कृति को निकट से अध्ययन करने का एक अच्छा अवसर मिला।

ज्योति प्रसाद भारत आने पर पूरी शक्ति के साथ राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़े, लेकिन कुछ महीने बाद गाँधी-इरविन समझौता होने के फलस्वरूप आन्दोलन में कुछ शिथिलता आ गई। वे उस समय तेजपुर कॉंगेस सेवादल का नेतृत्व कर रहे थे। वे गिरफ्तार हुए और उन्हें पन्द्रह महीने कारावास तथा पांच सौ रुपये जुर्माने की सजा भुगतनी पड़ी। कारागार से निकलने के पश्चात उन्होंने अपनी सारी शक्ति शिल्प-कला, संगीत तथा साहित्य के अभ्युत्थान में केन्द्रित कर दी। सर्वप्रथम उन्होंने कलकत्ता के भवानीपुर अंचल में 'एग्रो पिक्चर्स कॉरपोरेशन' नामक संस्था की स्थापना कर असमीया चलचित्र के निर्माण की कोशिश की, पर असफल रहे। तत्पश्चात उन्होंने १९३४ में 'कलंगपुर भोलागुरि' चाय-बगीचे में 'चित्रलेखा मुविटोन' की नींव डाली, 'चित्रवन' नामक स्टूडियो का निर्माण किया।

दैववशात् उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। श्रद्धादि कर्म से निवृत्त होकर ज्योतिप्रसाद पुनः अपनी साधना में जुट गये। सन् १९३५ के १० मार्च को कलकत्ता में जयमती चलचित्र का विमोचन हुआ। असम में उस समय न तो उपयुक्त अभिनेता थे, न अभिनेत्रियां थी। उस जटिल परिस्थिति में, अनेक विघ्न, बाधाओं से जूझते हुए, जयमती चलचित्र का सफलतापूर्वक निर्माण करना ज्योतिप्रसाद की दृढ़ता, उनके अटूट आत्मविश्वास तथा शिल्पकला के प्रति उनके अनन्य प्रेम का ज्वलंत उदाहरण है। ज्योति प्रसाद ही असमीया चलचित्र के प्रथम आदर्श और अनुकरणीय शिल्पी थे।

सन् १९३६ में ज्योतिप्रसाद का डिब्रूगढ़ में देवयानी भूजा के साथ शुभ परिणय सम्पन्न हुआ। इस विवाह से उन्हें दो पुत्र और पाँच कन्याओं की प्राप्ति हुई।

सन् १९३६-३७ में विष्णुप्रसाद राभा के सहयोग से जयमती और शोणित कुंवरी नाटकों का असमीया में प्रथम ग्रामोफोन रेकॉर्ड तैयार किया। तेजपुर (बाण रंगमंच) पर भारतीय और पाश्चात्य वाद्य-यंत्रों का समन्वयात्मक ऑर्केस्ट्रा बजवाकर असमीया रंगमंच एवं विशेषकर असमीया वाद्य खोल ताल आदि का प्रयोग कर उनको मर्यादा की। जयमती चलचित्र निर्माण में करीब पचास हजार रुपये खर्च हुए। बदले में उन्हें पच्चीस हजार भी नहीं मिल पाये, फिर भी १९३९ में कम खर्च में (करीब पंद्रह हजार में) सामाजिक चलचित्र इन्द्रमालती का निर्माण किया। यह उन दिनों की बात है जब भारतीय सवाक् चलचित्र अपने प्रथम चरण में था। ज्योतिप्रसाद ने चलचित्र के साथ-साथ प्रदर्शन की व्यवस्था के महत्व को भी समझा, अतः १९३७ में तेजपुर में 'जोनकी' प्रेक्षागृह का निर्माण किया। संगीत-कला के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से उन्होंने सन् १९४० में 'तेजपुर संगीत विद्यालय' की स्थापना की।

सन् १९४२ के आन्दोलन में ज्योति प्रसाद की भूमिका विशेष उल्लेखनीय रही। ज्योति प्रसाद उस समय तेजपुर शान्तिसेना वाहिनी के परिदर्शक थे। असम के अधिकतर नेता गिरफ्तार हो चुके ते। अमियकुमार दास के परामर्श के अनुसार त्यागवीर हेमचन्द्र बरुवा की सहायता के लिए ज्योति प्रसाद को गुवाहाटी जाना पड़ा। पारिवारिक असुविधाओं के होते हुए भी वे गुवाहाटी पहुंचे। यह वह समय था जब द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका असम के चतुर्दिक व्याप्त थी। हेमचन्द्र बरुवा के निर्देशानुसार ज्योति प्रसाद ने असम के कोने-कोने में स्वाधीनता की अलख जगानी शुरू की। गुप्तचर उनका पीछा करने लगे। ज्योति प्रसाद कलकत्ता जाकर भूमिगत हो गये और वहीं से पूरे जोर-शोर से आन्दोलन चलाते रहे। उस समय समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण, अच्युत पटवर्धन आदि महात्मा गांधी की अहिंसा नीति के विरुद्ध आक्राम नीति का समर्थन कर रहे थे। ज्योति प्रसाद, महात्मा गांधी की अहिंसा नीति के प्रबल समर्थक थे। अतः ज्योति प्रसाद उन समाजवादियों से अलग होकर कलकत्ता में ही अहिंसक आन्दोलन चलाते रहे। सन् १९४३ के अगस्त महीने में महात्मा गांधी के निर्देशानुसार अज्ञातवास त्याग कर उन्होंने तेजपुर अदालत में आत्मसमर्पण कर दिया। उनके खिलाफ किसी प्रकार का अपराध सिद्ध न होने के कारण उन्हें रिहा कर दिया गया।

सन् १९४४ में सात महीने तक गुवाहाटी से प्रकाशित दैनिक असमीया के वे सम्पादक रहे। उसके बाद असम में विश्वविद्यालय की स्थापना के हेतु आन्दोलन में वे सक्रिय भूमिका निभाने लगे। उन्होंने विश्वविद्यालय स्थापना के लिए एक नक्शा भी बनाया था। शारीरिक अस्वस्थता के कारण सम्पादक पद से अवकाश लेकर वे डिब्रूगढ़ अंचल के तामुलबारी चाय-बगीचे में स्थायी रूप से रहने लगे। अस्वस्थता के बावजूद उनकी लेखनी क्रियाशील रही।

ज्योतिप्रसाद पर असाध्य रोग कैंसर का आक्रमण हो चुका था। वह अत्यधिक पीड़ित रहा करते थे। अन्त में १७ जनवरी सन् १९५१ को यह दिव्य ज्योति अनन्त परमज्योति में चिरकाल के लिए एकाकार हो गयी।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

ज्योतिप्रसाद अगरवाला का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहु आयामी था। वे एक ही समय कवि, शिल्पकार, कथाकार, नाट्यकार, संगीतकार, अभिनेता, दार्शनिक, स्वतंत्रता सेनानी तथा चाय-बगीचे के प्रबंधक थे। इतना होने पर भी उनकी कार्य-प्रणाली में कही विरोधाभास नहीं था। प्रत्युत समन्वय की साधना ही प्रबल रही। यही कारण है कि उनके व्यक्तित्व का एक पक्ष कभी दूसरे पक्ष के विकास में बाधक नहीं बना।

ज्योति प्रसाद की बहुमुखी प्रतिभा के विकास में उनका पारिवारिक परिवेश सहायक बना। उन्हें पितामह हरिविलास अगरवाल का असमीया साहित्य तथा संस्कृति के प्रति प्रेम, पितामह आनन्दचन्द्र अगरवाला की काव्य-प्रतिभा, एवं पिता परमानन्द का संगीत प्रेम विरासत में मिला, ताऊ चन्द्रकुमार अगरवाला की साहित्यिक प्रतिभा तथा कला साधना का प्रत्यक्ष प्रभाव उन पर पड़ा।

चन्द्रकुमार अगरवाला ने प्रतिमा तथा वीण- वैरागी नामक दो काव्य ग्रन्थों के सृजन के अतिरिक्त कई निबन्ध लिखे। हेमचन्द्र गोस्वामी तथा लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा के सहयोग से कलकत्ता से जोनाकी नामक असमीया पत्रिका का प्रकाशन किया। असमीया साहित्य के विकास में इस पत्रिका का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। ज्योतिप्रसाद ने स्वाधीनता आन्दोलन के दिनों में चन्द्रकुमार अगरवाला के साथ इस पत्रिका के लिए कार्य किया था। इस काल में उनका साहित्यिक पक्ष प्रभावित हुआ। पिता परमानन्द की संगीत साधना से प्रेरणा पाकर ही ज्योतिप्रसाद ने शोणित कुँवरी नाटक के गीतों को असमीया लोकगीतों से समन्वित कर उनकी स्वर-रचना तैयार की।

सीमाबद्ध सुयोग तथा सुविधा का उपयोग कर ज्योतिप्रसाद ने असम के सांस्कृतिक क्षेत्र में जो अवदान दिया, उसकी तुलना नहीं की जा सकती। नाटक, अभिनय, संगीत, चलचित्र, कविता शिशु-साहित्य, नृत्य आदि सभी दिशाओं में इनकी सृजनात्मक प्रतिभा और उनके अपने दृष्टिकोण, चिन्तन तथा सौन्दर्य-

बोध के दर्शन होता हैं, ज्योति प्रसाद सृजनात्मक क्रान्तिकारी प्रतिभा के धनी थे। नूतन एवं पुरातन की समयोपयोगी समन्वय-साधना के माध्यम से रचना का मार्ग प्रशस्त करने के पक्षधर थे।

ज्योतिप्रसाद मूलत: कवि थे। उनका नाट्यकार का रूप उनके कवित्व का प्रसारण मात्र है। उनके नाटकों में नाट्य-धर्म के साथ काव्य-गुण का माणिकांचन संयोग हुआ है। शोणित कुँवरी नायक की रचना उन्होंने १४ वर्ष की उम्र में की थी। इसे करीब आठ बार सुधार कर सन् १९२५ में प्रकाशित किया गया। इस नाटक के गीतों में ज्योतिप्रसाद ने असमीया लोकगीत के आधार पर स्वर देकर असमीया संगीत के नये इतिहास की रचना की आधारशिला रखी। जिस प्रकार उदय शंकर ने भारतीय नृत्य को नवरूप प्रदान कर 'ओरियेन्टल नृत्य' तैयार किया, उसी प्रकार ज्योतिप्रसाद ने असमीया 'बिहु नृत्य' तथा 'भाउना-नृत्य' का समन्वय कर पदुमकली' नाम से एक नवीन नृत्य विद्या का विकास किया। इस प्रकार असमीया नृत्य को प्रथम बार रंगमंच पर लाने वाले ज्योतिप्रसाद ही थे। शोणित कुँवरी के अतिरिक्त इन्होंने आठ और नाटक लिखे, उनमें से चार सम्पूर्ण नहीं कर पाये।

ज्योतिप्रसाद ने कहानियां भी लिखी हैं। इनका कथाकाल किशोरावस्था तक सीमित रहा। इनकी नौ कथाएँ प्रकाशित हुई हैं। रूपही उनकी पहली कहानी है, यह एक प्रेम कथा है। बगीतरा तथा सतीर सोवरणी पाश्चात्य कथा के आधार पर लिखी गयी हैं, किन्तु इनका स्वरूप स्थानीय-सा लगता है और यही इनकी विशेषता है। जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने आमार गांव नामक उपन्यास लिखना प्रारम्भ किया जो उनकी अकाल मृत्यु के कारण अधूरा रह गया।

ज्योतिप्रसाद ने अपने नाटकों में करीब पचास गीत दिये हैं। इन गीतों से नाटक की कथा में कहीं बाधा नहीं आयी, प्रत्युत उसके सौन्दर्य में वृद्धि हुई। सुदक्ष सुरकार, संगीतज्ञ तथा रंगकर्मी होने के कारण ज्योति प्रसाद ने अपने नाटकों में अपनी सूझबूझ से गीतों को समुचित तथा प्रभावोत्पादक संयोजन सफलतापूर्वक किया है। उनके गीतों के सुर में असम की आत्मा के संयोग है। 'ज्योति संगीत' के जानकारों तथा उनके निकट सूत्रों के अनुसार ज्योति प्रसाद ने लगभग सात सौ गीतों की रचना की। इनमें से करीब ३५९ गीत प्रकाश में आए हैं। ज्योति प्रसाद ने कुछेक गीतों के लिए स्वयं स्वरलिपि तैयार की थी, जिसकी अपनी कुछ विशेषताएं हैं। इसी कारण असम के संगीत प्रेमियों ने इस संगीत को 'ज्योति संगीत' की संज्ञा दी। जिस प्रकार 'रवीन्द्र संगीत' में भाव, भाषा, स्वर और कल्पना का समन्वय हुआ है, उसी प्रकार ज्योतिप्रसाद के गीतों में भी इस समन्वय के दर्शन होते हैं। असमीया संगीत के मूल रूप को अक्षुण्ण रखते हुए, पाश्चात्य संगीत का समावेश कर ज्योति प्रसाद एक पथ-प्रदर्शक के रूप में उसे एक नितान्त निराली गति प्रदान कर गये।

ज्योति प्रसाद प्रकृतित: कवि थे। उनके गद्य में भी उनके कवित्व की सुषमा और सौरभ व्याप्त है। संख्या की दृष्टि से उनकी कविताएँ कम हैं। उनकी ४९ सम्पूर्ण कविताएँ एवं १२ शिशु-कविताएँ प्रकाशित हुई हैं, किन्तु काव्य, भाव एवं शिल्प की दृष्टि से वे अनुपम हैं। इसी कारण असमीया काव्य-साहित्य में उन्हें शीर्ष स्थान प्राप्त है। कवि के रूप में ज्योति प्रसाद में कुछ विशेष गुण हैं। उनकी कविता में असमीया जातीयता के भाव की प्रधानता होने पर भी भारतीय तथा विश्वजनीन भाव के साथ कहीं विरोध नहीं है। जातीयता के प्रति निष्ठा रखते हुए, उससे दृढ़तापूर्वक जुड़े रहते हुए भी वे संकीर्ण जातीयता से ऊपर उठने में सक्षम हैं।●

सपनो टूट ग्यो

कवि : श्री अटल बिहारी वाजपेयी
रूपान्तरकार : श्री रामनिवास लखोटिया

हाथां री हळदी है पीळी
पैरां री मेंहदी कुछ गीली
पलक झपकबा सूं पहलां ही सपनो टूट ग्यो।

दीप बुझाया रची दिवाळी
पण कटी नीं अमावस काळी
बिरथा हुयो आवाहन सोना रो सबेरो रूठ गयो।
सपनो टूट ग्यो।
नियंता नटणी री लीला न्यारी
सो क्यूं स्वाहा री तैयारी
अबार चला द्यो कदम कारवां साथी छूट ग्यो।
सपनो टूट ग्यो।

यादें

जब रात गये तेरी याद आई,
सौ तरह से जी को बहलाया।
कभी अपने दिल से बातें की,
कभी तेरी याद को समझाया।
जब पहले पहल तुम्हें देखा था,
दिल कितनी जोर से धड़का था।
वो लहर न फिर दिल में जागी,
वो वक्त न लौट के फिर आया।
यूं ही वक्त गंवाया चांदी-सा,
यूं ही उम्र गंवाई सोने-सी।
सच कहते हो तुम तो यारो,
हमने करके वफा भी क्या पाया।

साभार : साहित्य सौरभ

अनन्त कृपामूर्ति गुरुदेव

✍ पं. रमेश मोरोलिया, कानपुर
पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन

श्री गुरुदेव अनन्तकृपा स्वरूप हैं। हमारा समर्पण और श्रद्धा ही इस दिव्य अनुभव को प्राप्त कर सकता है। जब हमारा तार इस परम शक्ति से जुड़ता है, तो हमें अपने सुख-दुख के क्षणों में इनकी कृपा की अनुभूति हो जाती है। भले ही हम उनके निकट हो अथवा दूर। गुरु बाह्य रूप से तो साधारण मानव ही दिखते हैं, उनकी क्रियायें और व्यवहार भी सर्व साधारण सा ही लगेगा, लेकिन इस स्थिरप्रज्ञ देव का दर्शन, समर्पित शिष्य ही कर पाता है। गुरु की आवश्यकता और कामना को अंतर्मुखी शिष्य, उनके आदेश के पूर्व ही जान लेता है और उसी क्षण वह श्री गुरु कृपा का अधिकारी बन जाता है।

संत गुरु बालवत, सरल एवं स्वैच्छिक होते हैं। ये भेदभाव से परे होते हैं, ये अपनी समस्त कामनाओं का विध्वंस कर चुके हैं, अत: ये विशाल हृदयी सबके प्रति प्रेम प्लावित होते हैं, सबके प्रति स्नेह सिक्त होते हैं, उनके लिए सभी अपने होते हैं, परन्तु वे किसी एक के न होकर सबके होते हैं। ध्यान देने योग्य बात यही है जो परिवार, मां-बाप छोड़कर संन्यासी हो गया, वह हममें से किसी एक से कैसे बंध सकता है। वह तो अपना सा ही लगना चाहिए, क्योंकि वह स्नेह का अबाध-निर्झर है जितना अमृत पान करना चाहो कर लो।

संत की कृपा, जिसे आपने गुरु स्वीकारा है, साधक की आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनिवार्य है। अब प्रश्न यह उठता है कि इस कृपा प्रसाद को कैसे प्राप्त करें। मुख्य गुण जो साधक को ग्रहण करना है, वह है अंतर में स्थापित परमात्मशक्ति के प्रति पूर्ण समर्पण और स्व-परिचय। इस प्रक्रिया से आपमें सम-भाव का प्राकट्य होगा। दूसरी मुख्य बात है कि ऐसे जीना और आचरण करना कि जिससे गुरु अपने शिष्य पर अति प्रसन्न हों, तो गुरुकृपा अवश्यम्भावी हो जाती है।

संत गुरु दिव्यता का साकार स्वरूप है, उसकी दृष्टि सार्वभौमिक होती है, उसका हृदय सभी प्राणियों के प्रति प्रेम तथा करुणा से परिपूर्ण होता है। उसकी बुद्धि अविनाशी प्रज्ञा द्वारा प्रबुद्ध है। जैसे ही जिज्ञासु साधक ऐसे संत के सादृश्य विकसित होता है, वह संत वैभव शक्ति एवम् कृपा का उत्तराधिकारी बन जाता है। एक सच्चे साधक को अपनी जीवन प्रणाली, गुरु के उपदेशों के अनुरूप ढाल कर उसे प्रसन्न रखना चाहिए, तभी वह अत्यधिक आनन्दित होते हैं।

एक सामान्य भूल जो साधक से प्राय: हो जाती है कि वह संत के व्यक्तित्व की उसके बाह्य स्वरूप की तथा अन्य संत जनों से तुलनात्मक श्रेष्ठता की स्तुति करके उन्हें प्रभावित करना चाहता है। लेकिन सद्गुरु की दिव्य दृष्टि से यह दोष छिप नहीं पाता। आध्यात्मिक साधक के लिए इस तरह की अभिवृत्ति उसकी प्रगति में बाधक हो जाती है जब आप अपने अभिमान-अहंकार को एक ओर हटा देते हैं तो अपने गुरु को सर्वत्र परिलक्षित करते हैं। संत गुरु के साथ चिपके रहने से, उसका अनावश्यक अत्यधिक सम्मान प्रदर्शन से तथा अपने संगी साथियों के प्रति घृणा एवं प्रतिकूल व्यवहार द्वारा उनकी उपेक्षा करने से आप पर कृपा-अवतरण की प्रक्रिया में विलम्ब हो जाता है। जितना ही अधिक आप अस्वस्थ विपदाग्रस्त और व्यथित मानव के प्रति दयालु, सहायक तथा करुणावान होंगे, उतने ही उस महान स्वरूप के समीप पहुंच जायेंगे। संत गुरु वास्तव में तभी प्रसन्न होते हैं और अपना ज्ञान-प्रकाश और अपनी कृपा की वर्षा आप पर करने लगते हैं।

साधक ने जिसे अपना गुरु स्वरूप पथ प्रदर्शक एवं स्वामी स्वीकार किया है वह उसके हृदय का ज्योति पुंज इष्ट देव ही है। यद्यपि आरम्भ में गुरु उसे बाहर से आने वाला ही व्यक्ति दिखाई देता है, लेकिन गुरु सर्व व्यापक सत्य है, वास्तविकता है, तत्व है तथा सभी साधकों का आंतरिक प्रबोधक एवं प्रेरक है। जब साधक सतत् साधना द्वारा मन को लांघने में प्रयत्नशील होता है, तत्व से प्रथक करने वाले आवरण को विच्छिन्न करने में तत्पर होता है, तब वह अपने भीतर अंतरंग में प्रवेश करता है और उसे अनुभूति होने लगती है कि अंतस्थ में आसीन गुरु ही उसका शासक (नियंत्रक), प्रोत्साहक, संरक्षक एवं सर्वस्व है।

सत्गुरु शिष्य से कहता है- ''मुझे अपने भीतर खोजो और पावो, मुझे हर व्यक्ति एवं वस्तु में निहारो, मैं सभी प्राणियों के हृदय में आसीन हूं अत: उनसे प्रेम करना तथा उनकी सेवा करना, मुझसे प्रेम करना तथा मेरी सेवा करना है। ऐसा कभी न सोचो कि अपने हृदय को कोमल बनाये बिना, अपनी बुद्धि को प्रबुद्ध किये बिना तथा संसार के कल्याण हेतु जीवन समर्पित किये बिना, मेरी कृपा ग्रहण कर सकोगे।'' अर्थात् ये सब किये बिना गुरु कृपा सम्भव नहीं। सभी परिस्थितियों में चाहे वे कितनी भी कठिन एवं जटिल हों आप उस अंतर्यामी से अचूक संरक्षण एवं दिशा-निर्देश प्राप्त कर सकते हो। उनकी सूक्ष्म उपस्थिति का आप स्पष्ट अनुभव कर सकेंगे और वे आपका पथ-प्रदर्शन करेंगे तब, जबकि आप अपने आप को उनके हाथों में सौंप देंगे तथा अनवरत स्मर्ण द्वारा उनके साथ अपने मन को एक स्वर-लय में कर लेंगे। आप कहीं भी किसी भी अवस्था में हैं, आप सहायतार्थ अंतर्मन से पुकारें, आपका मार्ग निर्बाध हो जाएगा और सुरक्षित अनुभव करेंगे। भरोसा करेंगे तो भरम मिट जाएगा और श्री गुरु कृपा का साक्षात्कार हो जाएगा। सद्गुरु वह है जो साधक की आध्यात्मिक भूख को तृप्त करता है। यहां तर्क और निजी विचारों (रायों) का स्थान नहीं है, अन्यथा अविश्वास और संशय उस पर प्रहार करेंगे और विश्वास को नष्ट कर देंगे।

गुरुसेवा और गुरुकृपा ग्रहण करने का ढंग एक ही है कि हम गुरु के निर्देशानुसार चलें और हमारा आचरण ऐसा हो जिससे गुरुदेव प्रसन्न हों। वे केवल एक ही आदेश देते हैं कि बताई गई साधना पद्धति और गुरुमंत्र का श्रद्धा-समर्पण के साथ जप-ध्यान करो। यदि आप वैसे ही करते हो जैसा बताया गया है तब आप गुरु की सर्वोत्तम सेवा करेंगे। यही गुरुकृपा प्राप्ति का सहज, सुलभ और श्रेष्ठ मार्ग है।

ॐ श्री गुरुवे नम: ! ॐ श्री गुरुवे नम: !! ॐ श्री गुरुवे नम: !!!

मुरारीलाल डालमिया की कुछ कविताएं

गीत

जीवन के अन्तिम- पड़ाव में, कर लें कुछ विश्राम।
जाने-अनजाने में हमने,
जो भी पाप किये वो धो लें।
कुछ तुम बोलो, कुछ मैं बोलूँ
मन की पीड़ा-व्यथा टटोलें।
याद करें वह प्रथम मिलन,
नयनों का वह ठहराव-

फिर बाहों में बंध जाओ तुम, कर लें नमन, प्रणाम।
जीवन के अन्तिम पड़ाव में, कर लें कुछ विश्राम।।

तेरे नयनों का हर आँसू
गीतों का आधार बनेगा।
तेरे अधरों का आलिंगन-
सुखद प्रेम का द्वार बनेगा
आओ सहलायें पीड़ा को
दुलरायें मन-प्राण।

एक दूसरे के हो जाएं, अमर करे यह शाम।
जीवन के अन्तिम पड़ाव में, कर लें कुछ विश्राम।

घुटन भरा घर-द्वार छोड़ दें
नया नीड़ निर्माण करें हम।
पियें हलाहल दुनिया वाले-
मिलकर अमृत पान करें हम।
चलों चलें हम स्नान करें-
जमुना के शीतल जल में।

मन पावन हो जाये, सबको राम राम राम।
जीवन के अन्तिम पड़ाव में, कर लें कुछ विश्राम।।

मुक्तक

(१)
अन्तिम बेला में तुम मुझको करुणा से नहला देना,
कल्पवृक्ष की शीतल छाया में तन को सहला देना,
अमर बेल की सतरंगी चादर तो भली लगे मुझको-
सभी मित्र, परिवारजनों से, गंगाजल पिलवा देना।

(२)
बहुत सहज है गाँठ लगाना, गाँठ खोलना बहुत कठिन है,
बहुत सहज है झूठ बोलना, सत्य बोलना बहुत कठिन है,
मैंने देखा इस दुनिया में, पाप कहीं तो पुण्य कहीं है-
बहुत सहज है पाप जोड़ना, पुण्य जोड़ना बहुत कठिन है।

(३)
आज किसी की मौत हो गयी, उसका खेल तमाम हो गया,
अर्थी लगा उठाने आए, राम सत्य, सतनाम हो गया,
चिता जल गयी, कहा किसी ने, बड़ा भला था मुक्ति मिल गयी-
मैंने देखा वह तो कवि था, अमर हो गया, नाम हो गया।

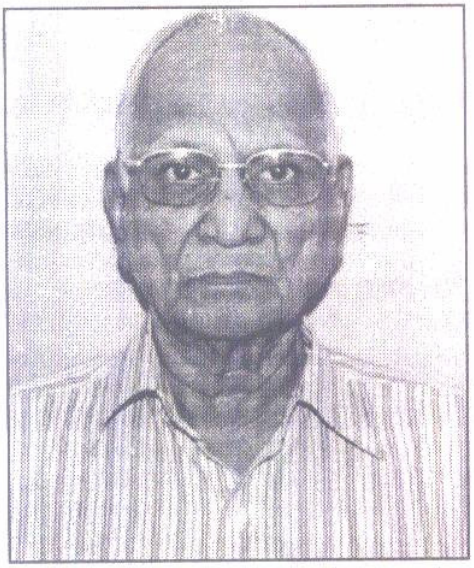

श्री मुरारीलाल कविताए आछे
भालवासार गानेर सुर।
मूल हिन्दी कविताए सुललित
कण्ठस्वर तर्जमाय कतटुकुइ बा
प्रतिध्वन्नित करा जाय।
तबु तार द्युति मेघेर फाँके थेके थेके
झलसे उठे।

- सुभाष मुखोपाध्याय
सुप्रसिद्ध कवि, कोलकाता

मंजिल

ध्यान लगाकर चलने वाला मंजिल पा जाता है
मोहजाल में फंसा हुआ, पग-पग पर रूक जाता है
पथ पर मायाजाल बिछा है, दलदल भी पाओगे
जिसका मन गंगाजल होता, पार उतर जाता है।

थाल हाथ में लिए, पुजारी मन्दिर में जाता है
दुआ माँगने कोई मुल्ला मस्जिद में जाता है
सब की अपनी-अपनी ढपली, अपनी-अपनी राग
पीने वाला दर्द भुलाने मदिरालय जाता है।

नयनों की भाषा पढ़ना आसान नहीं है
आशा और निराशा का अवसान नहीं है
प्रेम अमर है, पूजा और समर्पण मेरा
जो न समझ पाए वह तो इन्सान नहीं है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कोलकाता : सुप्रसिद्ध कवि श्री मुरारीलाल डालमिया का अभिनंदन

युग पथ चरण

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा ४ जुलाई को भारतीय भाषा परिषद में सुप्रसिद्ध कवि मुरारीलाल डालमिया को हिन्दी साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह का उद्घाटन करते हुए जयपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति **प्रो. कल्याणमल लोढ़ा** ने कहा- कवि केवल कविता की रचना ही नहीं करता, बल्कि कविता को जीता है। कवि का जीवन ही कवितामय होता है। भारतीय आचार्यों ने कवि को प्रजापति माना है, लेकिन मैं कवि कवि सभी का मार्ग प्रशस्त करता है और लोगों के जीवन को परिवर्तित करता है।

बायें से : सर्वश्री भानीराम सुरेका, मुरारीलाल डालमिया, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, मोहनलाल तुलस्यान, ओमप्रकाश अश्क।

को स्वास्तिक भी मानता हूं। श्री मुरारीलाल डालमिया की कविताओं में भविष्य की उज्ज्वलता दिखाई पड़ती है, इनकी कविताएं केवल शब्दों का प्रवाह नहीं है। आजकल कवियों का संस्कारशील होना बहुत आवश्यक है और श्री डालमिया संस्कारशील कवि हैं। कविता का जन्म हृदय से होता है और उसका सम्बन्ध लय और संगीत से भी होता है। श्री डालमिया का कवि अतीत से जुड़ कर वर्तमान की ओर जाता है। श्री डालमिया की आकृति और प्रकृत्ति में ही कविता है। हृदय ही सारी संवेदनाओं का मूल है और आज संवेदना की सबसे अधिक आवश्यकता है।

समारोह की मुख्य अतिथि महानगर की उप-महापौर **श्रीमती मीनादेवी पुरोहित** ने कहा- कवि की तुलना नहीं की जा सकती, क्योंकि जो काम रवि नहीं कर सकता वह कवि कर सकता है।

समारोह के मुख्य वक्ता 'प्रभात खबर' के स्थानीय सम्पादक **श्री ओमप्रकाश अश्क** ने कहा- जब हृदय का कोई भाग मनुष्य को उद्वेलित करता है तो वही कविता बनती है। कोई साहित्य तभी सफल माना जाता है जब उसे पढ़कर पाठक उसमें अपनी पीड़ा और अपना मनोभाव देखता है। वरिष्ठ पत्रकार **श्री विश्वम्भर नेवर** ने कहा- कविताएं अमर होती है। कविताओं की तुलना नदियों से की जाती है। नदियां विलुप्त हो जाती हैं लेकिन कविताएं कभी लुप्त नहीं होती।

समारोह में उपस्थित आई.जी. (सी.आई.डी.) **श्री आर.के. जौहरी** ने कहा- कवि कालातीत होता है। वह केवल सत्य और संवेदना प्रेषित करता है। आमलोग अपनी संवेदनाओं को वाणी नहीं दे पाते हैं। कवि समाज में जिस चीज का अभाव देखता है उसे अपनी कविता में व्यक्त करता है।

समारोह एवं सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री मोहनलाल तुलस्यान** ने कहा- श्री मुरारीलाल डालमिया मारवाड़ी समाज के नीरज हैं। इन्हें तीन ही नहीं कम से कम एक दर्जन पुस्तक लिखनी चाहिए।

समारोह में **श्री मोहनकिशोर दीवान** द्वारा परिचय पाठ के उपरांत श्री डालमिया को पुष्प माल्य, राजस्थानी पगड़ी, शॉल और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सैंकड़ों संस्थाओं ने श्री डालमिया को पुष्पहार पहनाकर अभिनंदित किया।

अभिनंदन के पश्चात् **श्री डालमिया** ने कहा कि उन्हें दिया गया सम्मान सिर्फ उनका नहीं बल्कि पूरे मारवाड़ी समाज, पूरे डालमिया परिवार का अभिनंदन है। इस अवसर पर उन्होंने अपनी पत्नी स्व. सत्यभामा डालमिया की स्मृति में ५१ हजार रुपये के एक न्यास बनाने की घोषणा की तथा कहा कि इस न्यास से प्रतिवर्ष मारवाड़ी समाज के किसी एक श्रेष्ठ कवि को सम्मानित किया जाएगा। न्यास के चेयरमैन के रूप में आचार्य श्री कल्याणमल लोढ़ा के नाम की घोषणा की गई एवं अन्य सदस्यों में स्वयं श्री डालमिया के अलवा श्री मोहनलाल तुलस्यान, श्री विश्वम्भर नेवर एवं श्रीमती अलका बांगड़ को शामिल किया गया।

महामंत्री **श्री भानीराम सुरेका** ने स्वागत भाषण दिया एवं कार्यक्रम का संचालन किया।

पश्चिम बंगीय प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा-कोष

पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन हर वर्ष छात्रों को शिक्षा-वृत्ति देता है। इस वर्ष ता: १७ जुलाई के कार्यक्रम में ६२ विद्यालयों के १६० छात्र-छात्राओं को लगभग २।। लाख रुपये की छात्रवृत्ति दी गई।

पश्चिम बंगाल के भूतपूर्व राज्यपाल एवं मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्यामल कुमार सेन ने कहा कि समाज के कमजोर लोगों के लिए मानवाधिकार शब्द का कोई औचित्य नहीं है। उनका कहना था कि लोग जीवन की बुनियादी सुविधाओं तक से मरहूम हैं उनके लिए न तो मानवाधिकार आयोग के पास कोई कार्यक्रम और न ही उनके लिए मानवाधिकार की कोई उपयोगिता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के अभाव में लोगों को न तो अपने कानूनी अधिकारों की समझ है और उत्पीड़ित होने पर अशिक्षित लोगों को न्याय भी कदाचित मिलता है।

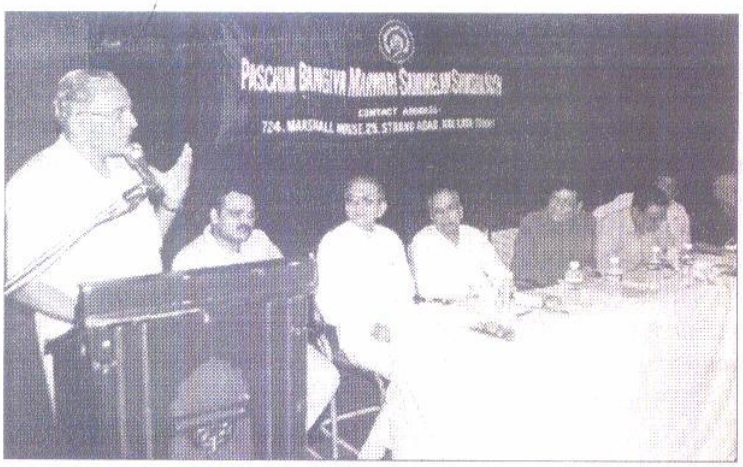

पश्चिम बंगीय मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा काष द्वारा आयोजित छात्रवृत्ति वितरण समारोह के अवसर पर मंचस्थ हैं सर्वश्री प्रकाश चण्डालिया (संपादक : राष्ट्रीय महानगर), न्यायमूर्ति श्यामल कुमार सेन, मामराज जी अग्रवाल, हरिप्रसाद जी बुधिया, अर्जित सी. मजुमदार, प्रमोद शाह एवं श्रीकिशन खेतान। माईक पर हैं शिक्षाकोष के महामंत्री श्री बाबुलाल जी अग्रवाल।

भारतीय भाषा परिषद में आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों के विकास में मीडिया का दायित्व विषय पर बोलते हुए राय विश्वविद्यालय के डीन अर्जित सी मजुमदार ने कहा कि मीडिया में टीवी माध्यम विद्यार्थियों के चिन्तन की दिशा को सबसे ज्यादा प्रभावित करता है ऐसे में जरूरी है कि विद्यार्थियों को वही विषय टीवी पर दिखाये जायें जो शुद्ध विचारों को जन्म दे और इसका पूरा दायित्व अभिभावकों का होता है। अभिभावकों का नियंत्रण ही विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर सकता है।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रमोद साह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मीडिया में आज अपराध और भोग प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है, रचनात्मक विषयों में कमी आयी है। इसका मुख्य कारण मीडिया का व्यवसायीकरण है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के लिए सबसे जरूरी बात है राष्ट्रीय चेतना और अखण्डता को बनाये रखना लेकिन मीडिया का ध्यान इस ओर काफी कम है।

पत्रकार प्रकाश चंडालिया ने हिन्दी पत्रकारिता को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा कि पाठक हिन्दी समाचार पत्रों से संतुष्ट नहीं हैं क्योंकि यहां दक्ष पत्रकारों की कमी है, इसी वजह से युवा वर्ग अंग्रेजी माध्यमों के साथ अधिक जुड़ना चाहते हैं। कार्यक्रम में ६२ विद्यालयों के १६० छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इसमें कुछ ढाई लाख रुपये की राशि दी गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री हरिप्रसाद बुधिया ने की। धन्यवाद ज्ञापन कृष्ण कुमार लोहिया ने किया। श्री मामराज अग्रवाल, घनश्याम शर्मा, विश्वम्भर नेवर, सीताराम शर्मा, गौरीशंकर कांया, रतन शाह, सतीश देवड़ा, किशनलाल बजाज सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

मुजफ्फरपुर : जिला मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित अभिनंदन समारोह

"नरसंहार कर चुनाव जीतना हमारा चरित्र नहीं होना चाहिए। अगर कुछ नुकसान उठाना पड़े तो बेसक उठायें परन्तु सार्वजनिक जीवन में चरित्रहीनों और अपराधिक तत्वों का विरोध अवश्य करें।" ये बातें कांग्रेस के नवनिर्वाचित सांसद एवं दिल्ली के पूर्व पुलिस कमिश्नर श्री निखिल कुमार ने १५ जून २००४ को अपने नागरिक अभिनंदन समारोह में राजनीति के अपराधीकरण पर नियंत्रण विषय पर कही। अखिल भारतीय अग्रसेन सेवा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि बिहार को एक स्वच्छ सही राजनीतिक दिशा निर्देशन की जरूरत है जो श्री निखिल कुमार जैसे ईमानदार कर्मठ व्यक्तित्व ही दे सकता है। समारोह को मुजफ्फरपुर जिला मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण तुलस्यान, पूर्व विधायक केदार प्रसाद, डॉ. भगवानलाल सहनी, चौधरी श्याम सुन्दर, मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय सहायक मंत्री चौधरी संजय अग्रवाल, राकेश चाचान, मनोज अग्रवाल, शंकरलाल शर्मा, राजकुमार पाण्डे आदि ने भी सम्बोधित किया।

पटना : कार्यकारिणी समिति की बैठक सम्पन्न

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन पटना के प्रादेशिक कार्यालय में कार्यकारिणी समिति की बैठक दिनांक ४.७.०४ को हुई। बैठक की अध्यक्षता प्रांतीय अध्यक्ष श्री रमेश कुमार केजड़ीवाल ने की। उन्होंने बताया कि अभी तक चार बार कार्यकारिणी की बैठक हो चुकी है। ८० शाखाओं के नये सत्र के अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों की नियुक्ति कर दी गई है जिसमें सर्वश्री जयदेव प्र. नेमानी, किशोरीलाल अग्रवाल, राम भरतिया, सीताराम बाजोरिया आदि लोगों ने काफी सहयोग दिया है जिससे की शाखाओं के गठन का कार्य तेजी से सम्पन्न हो सका। जितनी भी शाखाओं के गठन करने, दौरा करने बाकी हैं उसे भी पूरा करने की कोशिश जारी है। माननीय अध्यक्ष ने इस सत्र में सदस्यता अभियान को काफी तेजी से आगे बढ़ाने की अपील की जिसमें आजीवन सदस्य तथा वंशानुगत सदस्य अधिक से अधिक हों। उद्देश्य ही है कि समाज को संगठित तथा जिस स्तर से सम्भव हो सामाजिक विकास किया जा सके। प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जगनानी ने सत्र का आय-व्यय का विस्तृत विवरण दिया तथा एक नया बजट जो अगले सत्र के लिए हो विचार-विमर्श के लिए रखे। उन्होंने कहा कि सम्मेलन संवाद पत्रिका के अगले अंक में बजट विवरण प्रकाशित की जाएगी। दरभंगा मंडल के उपाध्यक्ष श्री निरंजनलाल केडिया ने सम्मेलन को फायदा में चलता देख खुशी प्रकट की। डॉ. केजड़ीवाल ने सदस्यता अभियान के लिए समिति बनाने की बात कही जिसमें एक संयोजक हो तथा ग्यारह सदस्यीय कार्यकारिणी सदस्य हो। श्री सुनील खण्डेलवाल को संयोजक चुना गया तथा ११ सदस्यों में सर्वश्री जयदेव प्र. नेमानी (मुजफ्फरपुर), सीताराम बाजोरिया तथा शेष लोगों की नियुक्ति का प्रभार श्री सुनील खण्डेलवाल को सौंपा गया। तीन सदस्यीय चुनाव समिति गठित हुई। मुख्य चुनाव पदाधिकारी श्री बद्रीप्रसाद भीमसरिया को मनोनीत किया गया। श्री रामवतार पोद्दार (महामंत्री) तथा रामलाल खेतान का मनोनयन किया गया। चुनाव कार्यक्रम इस प्रकार है-

१. निर्वाचक मंडल की अंतिम सूची का प्रकाशन - १५ अगस्त २००४ तक
२. नामांकन पत्र का दाखिला - १ अगस्त १० सितम्बर २००४ तक
३. नामांकन पत्रों की जांच - ११ सितम्बर २००४ तक
४. वैध नामांकन की घोषणा - १२ सितम्बर २००४ तक
५. नामांकन वापसी - २० सितम्बर २००४ तक
६. उम्मीदवारों की अंतिम सूची का प्रकाशन - २१ सितम्बर २००४ को
७. मतदान (आवश्यक होने पर) - ३ अक्टूबर २००४ को
८. चुनाव परिणाम की घोषणा एवं नवनिर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत - ३ अक्टूबर २००४ को

सर्वश्री काशीनाथ हिसारिया, कैलाश प्रसाद झुनझुनवाला ने बैठक में संविधान में बदलाव, कार्यकुशल अध्यक्ष के कार्यकाल की अवधि में वृद्धि, शाखाओं द्वारा बेरोजगारों, गरीबों की सहायता पर अपने विचार रखें।

बैठक में होम स्कूल प्रोजेक्ट समिति बनायी गयीं जिसका कार्य गांवों, कस्बों में निर्धन छात्रों को चिह्नित कर उनके शिक्षा को बढ़ावा देना। इस समिति के संयोजक श्री सीताराम छापरिया बनाए गए। अठ सदस्यों में श्री किशोरीलाल अग्रवाल (सं. मंत्री) मुज., श्री सीताराम बाजोरिया (उपाध्यक्ष, तिरहुत प्रमंडल) आदि लोगों को चुना गया।

बैठक में सुरक्षा समिति बनायी गयी जिसमें श्री प्रह्लाद शर्मा को संयोजक तथा अन्य सदस्यों में सर्वश्री महेश जालान, विनोद तोदी, काशी हिसारिया, डॉ. रामनिरंजन केडिया, जयदेव प्रसाद नेमानी, नागरमल बाजोरिया चुने गए।

बैठक को श्री किशोरीलाल अग्रवाल (सं. मंत्री) ने भी सम्बोधित किया। श्री बादलचंद अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मधेपुरा शाखा के नये चुनाव की सूची

मधेपुरा शाखा का नया चुनाव दिनांक ११.०७.०४ को हुआ। नये कार्य समिति की सूची निम्नवत है-

सर्वश्री लखी प्रसाद प्राणसूखका- अध्यक्ष, शिव प्रसाद सर्राफ - उपाध्यक्ष, शम्भु नाथ चौधरी- उपाध्यक्ष, कैलाश प्रसाद सुल्तानिया - उपाध्यक्ष, पशुपतिनाथ सुलतानिया - सचिव, आनन्द प्राणसुखका - उपसचिव, ओम प्रकाश सर्राफ - संयुक्त सचिव, मनीष सर्राफ - कोषाध्यक्ष, सन्तोष प्राणसूखका - संगठनमंत्री, घनश्याम माहेश्वरी - उत्सवमंत्री, अनिल चौधरी - प्रादेशिक समिति सदस्य। साधारण सदस्य- सर्वश्री विनोद कुमार प्राणसूखका, लड्डू सुलतानिया, राजेश सर्राफ, प्रो. गिरधारी प्रसाद नेवटिया, अशोक सोमानी, अशोक सुलतानिया, विनोद महेश्वरी, दामोदर लड्ढा, राम भगत सर्राफ, रविकान्त शर्मा एवं रतन कुमार महिवाल को चुना गया।

पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

राहा शाखा : पुनर्विवाह सम्पन्न

शाखा के कार्यवाही अध्यक्ष श्रीमहावीर प्रसाद अग्रवाला एवं मुख्य संचालक श्री नरसिंहलाल अग्रवाला के

सद्प्रयास से सम्मेलन के छापरमुख के सदस्य श्री मातुराम शर्मा का पुनर्विवाह श्रीमती कविता शर्मा से १९ जून को विधि विधान के साथ एक मंदिर में सम्पन्न कराया गया। कैंसर रोग में तीन वर्ष पूर्व अपने पति के निधनोपरांत श्रीमती कविता शर्मा अपने पिता के घर रहकर गुजारा कर रही थी। पुनर्विवाह के अवसर पर काफी संख्या में उपस्थित पदाधिकारियों, सदस्यों व समाजबंधुओं ने वर-वधू को आशीर्वाद व शुभकामनाएं दीं।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन

पटना : नौवां वार्षिक उद्योग मेला ७ अक्टूबर से ११ अक्टूबर २००४ तक

बिहार महिला उद्योग संघ की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा चोपड़ा द्वारा प्राप्त सूचनानुसार संघ द्वारा नौवां वार्षिक उद्योग मेला इस वर्ष ७ अक्टूबर से ११ अक्टूबर तक ५ दिनों के लिए मिलर स्कूल ग्राउण्ड में लगाया जाएगा। इस मेले में ९X१० साइज के ३०० स्टाल होंगे जिनका दो टेबुल, दो कुर्सी, दो पंखा के साथ चार्ज मात्र २५०० रु. रखा गया है। लघु कुटीर एवं घरेलू उद्योगों के विकास तथा उत्पादित वस्तुओं को विस्तृत बाजार दिलाने के उद्देश्य से आयोजित इस मेले में बिहार के अतिरिक्त तमिलनाडु, मुंबई, छत्तीसगढ़, भोपाल, झारखण्ड आदि जगहों से उद्यमी भाग लेने आ रहे हैं। इच्छुक व्यक्ति बिहार महिला उद्योग संघ, चोपड़ा भवन, नेहरू सभागार, पटना-१३, फोन : २२६३३८२, २२६३९६६, फैक्स : ०६१२-२६७४५४३ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

खेतराजपुर, सम्बलपुर : कैरियर मार्ग दर्शन पर सेमिनार आयोजित

मारवाड़ी युवा मंच, खेतराजपुर, सम्बलपुर के तत्वावधान में कैरियर मार्गदर्शन पर एक सेमिनार अनुष्ठित किया गया। सेमिनार का उद्देश्य था दसवीं तथा बारहवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को उनके भविष्य के मार्ग दर्शन करवाना। शिक्षा के विभिन्न क्षेत्र से विशेषज्ञ आमंत्रित किए गए जिससे वाणिज्य, विज्ञान, डाक्टर, इंजीनियर, चार्टड एकाउन्टेड, एम.बी.ए., कम्प्यूटर, आर्किटेक्ट, विज्ञान, सेना, कोचिंग सेन्टर, प्राध्यापक एवं अन्य लोगों ने छात्रों को दिशा दर्शन दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सम्बलपुर शाखा के अध्यक्ष श्री दिनेश अग्रवाल ने दीप प्रज्वलित कर किया। श्री अशोक अग्रवाल ने काउनसीलिंग की महत्ता के विषय में बताया, जो विशेषज्ञ मौजूद थे उनमें डॉ. अशोक सिंघल, चार्टर्ड एकाउन्टेंट ललित अग्रवाल, आक्षी एफ.ए. विश्वविद्यालय के सुनीलकांत पंडा, कला विशेषज्ञ शर्मिष्ठा मेहर, वाणिज्य के प्रो. श्री धनीराम अग्रवाल, एड वर्ल्ड के अभिषेक केजड़ीवाल, भारतीय सेना से कारगिल के आपरेशन में भाग लेने वाले प्रभाकर सिंह, जे.डी. कम्प्यूटर के दिनेश प्रधान, साफ्टवेयर इंजीनियर अब्दुल वारिस, आर्किटेक्ट अनिन्दत दास सबने अपने अनुभव का तथा क्षेत्र की विशेषताओं का ज्ञान अभी उपस्थित छात्रों एवं अभिभावकों को कराया। सभा का संचालन श्री उत्तम गर्ग एवं श्री मनोज अग्रवाल ने किया तथा श्री अनिल ओझा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सर्वश्री गणेश पालीवाल, पराग अग्रवाल, दिनेश शर्मा, सुरेश अग्रवाल, किशन भालोटिया, राजू अग्रवाल ने कार्यक्रम की सफलता के लिए अथक प्रयास किया।

अन्य संस्थाएं

उमेर खेद : महेश नवमी पर्व सम्पन्न

२८ मई को माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति दिवस के रूप में महेश नवमी पर्व हर्षोल्लासपूर्वक आयोजित किया गया। इस अवसर पर 'समाज चेतना' बैठक का तीन दिवसीय आयोजन भी किया गया जिसमें संगठन मजबूत बनाने, एकल व संयुक्त परिवार पर चर्चा एवं अनेक सामाजिक विषयों पर चिंतन मंथन भी किये गये। इसके अतिरिक्त प्रदूषण एक समस्या एवं उपाय विषयक निबन्ध व महेश्वरी महिला संगठन की ओर से डिजाइन वाली रंगोली स्पर्धा, पारितोषिक वितरण, ओम् नमः सिवाय के १०८ मंत्रोचार एवं लोक कल्याणार्थ प्रार्थनाएं की गयीं।

शैक्षणिक क्षेत्र में समाज के बच्चों की रूचि बढ़े, प्रगति करे, इसलिए के.जी. १ से १२वीं तक के राजस्थानी समाज के सर्वोच्च गुण प्राप्त विद्यार्थियों को पारितोषक व सम्मानित किया गया।

समारोह को सम्बोधित करने वालों में प्रमुख थे सर्वश्री हनुमानदास बजाज, लक्ष्मीनारायण तोला, लक्ष्मीनारायण भंडारी, सुरेशचंद्र माहेश्वरी, दीपक तेला आदि। इन्होंने ग्रामीण दिगड़ समाज में पंचन्याय व्यवस्था तथा संगठन मजबूत किस तरह रहता यह बताया। समाज में संगठन तथा प्रेम एवं प्रगति तथा स्थिरता आयेगी ऐसा प्रतिपादित किया। अखिल भारतीय महेश्वरी महासभा से

चल रहे समाजोपयोगी बहुत सी योजनाएं है उसका यथोचित लाभ समाज बंधुओं ने लेने बावत विचार प्रकट किया।

मंच का संचालन श्री ओमप्रकाश सारडा एवं आभार प्रदर्शन श्री विनोद सारडा ने किया।

कोलकाता : 'बातां राजस्थान री' साप्ताहिक प्रसारण

कोलकाता का एकमात्र सम्पूर्ण हिन्दी चैनल 'ताजा टीवी' अब प्रति सप्ताह राजस्थानी भाषा में 'बातां राजस्थान री' प्रसारित कर रहा है। मंगलवार को रात ८ बजे एवं बुधवार को सुबह ७.३० बजे आधा घंटे के इस कार्यक्रम में राजस्थान में सांस्कृतिक आयोजन, विविध कार्यक्रम व प्रदेश के समाचार प्रसारित किये जाते हैं। यह कार्यक्रम कोलकाता के दैनिक अखबार 'छपते छपते' द्वारा जोधपुर से प्रकाशित 'माणक' के संयुक्त तत्वावधान में प्रारम्भ किया है।

नई दिल्ली : वार्षिक चुनाव सम्पन्न

माहेश्वरी क्लब २००४-२००५ का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य चुने गये :-

सर्वश्री अनिल जाजू - सभापति, नन्दलाल चाण्डक - उपसभापति, रमेश बांगड़ - उपसभापति, प्रभाकर काबरा - मंत्री, श्रीमती मधुरिका मूंधड़ा - उपमंत्री, ओमप्रकाश बाहेती - कोषमंत्री, श्रीमती मंथू मूंधड़ा - सांस्कृतिक मंत्री, श्रीमती सरिता डागा - सांस्कृतिक उपमंत्री, श्रीमती सुधा डागा - तीज त्योहार मंत्री, श्रीमती सजल डागा - तीज त्योहार उपमंत्री, डॉ. के.के. अग्रवाल - समाज कल्याण मंत्री, गोविंद मूंधड़ा - समाज कल्याण उपमंत्री, संदीप मुराडिया - खेलमंत्री, सौरभ तापड़िया - उप खेलमंत्री, श्रीमती सारिका बाहेती - भंडार मंत्री, श्रीमती सुमन मूंधड़ा - भंडार उपमंत्री।

सम्मान / बधाइयां

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आजीवन सदस्य व सम्मेलन के भवन क्रय करने में एक लाख की राशि प्रदान करने वाले, चार दर्शकों से बांगड़ प्रतिष्ठान से जुड़े श्री जगदीश चन्द्र एन मूंदड़ा ने समाज सेवा के लिए स्वेच्छा से अवकाश लिया। इस असाधारण कार्य हेतु अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के अध्यक्ष श्री चुन्नीलाल सोमानी ने उनका सभा के पदाधिकारियों के समक्ष माल्य प्रदान कर स्वागत किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के नवनिर्वाचित सांसद श्री गांधी, महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री रघुनाथ सोमानी, सभा के संयुक्त मंत्री श्री अशोक द्वारकानी आदि कई लोग उपस्थित थे।

बलांगीर : श्री अभिषेक चौधरी टॉपर (Topper) हुए

इस साल O.J.E.E में बलांगीर के श्री अभिषेक चौधरी पूरे प्रांत में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त किये हैं। हमारी हार्दिक बधाई। वे I.I.T. में भी १४० रैंक में है। श्री चौधरी श्री दिलीप कुमार चौधरी के सुपुत्र और विशिष्ट समाज सेवी स्वर्गीय रूढ़मल चौधरी के पौत्र हैं। श्री चौधरी उत्कल मारवाड़ी समाज के गौरव हैं। भगवान से प्रार्थना है वे आगे चलकर और उन्नति करें।

कोलकाता : सुश्री वंदिता सहारिया अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में

सुश्री वंदिता सहारिया को २५ जुलाई से ५ अगस्त के बीच वाशिंगटन डी.सी. एवं न्यूयार्क सिटी में होने वाले ग्लोबल यंग लीडर्स कान्फ्रेंस (जी.वाई.एल.सी.) में हिस्सा लेने के लिए चुना गया है। जी.वाई.एल.सी. विश्व भर के सेकेन्डरी स्कूल के उन छात्रों के लिए एक अनोखा नेतृत्व विकास कार्यक्रम है जिन्होंने नेतृत्व की क्षमता तथा मेधा का प्रदर्शन किया है। सहारिया के साथ ही इस सम्मेलन में विश्व भर के ३५० मेधावी छात्र हिस्सा लेंगे। जी.वाई.एल.सी. का उद्देश्य वंदिता सहारिया जैसे मेधावी छात्रों को अध्ययन तथा विश्वव्यापी विवाद पर दुनिया भर में छात्रों के साथ सम्पर्क स्थापित करने का अवसर प्रदान करना है। वंदिता सहारिया की हमेशा से ही बहुआयामी गतिविधियों में दिलचस्पी रही है। लोमार्टिनियर फार गर्ल्स की छात्रा वंदिता ने इस वर्ष ८९ प्रतिशत अंकों के साथ आईएससी की परीक्षा उत्तीर्ण की है। कोलकाता चेम्बर आफ कामर्स के पूर्व अध्यक्ष श्री महेश सहारिया की पुत्री वंदिता १४ जुलाई को न्यूयार्क के लिए रवाना हुई।

श्रद्धांजलि / शोक सभा

कोलकाता : श्रीमती पुष्पा चोटिया का निधन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सदस्य एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री घनश्याम शर्मा की छोटी बहन श्रीमती पुष्पा चोटिया का ४६ वर्ष की अवस्था में ३ जुलाई को निधन हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करें।●

With best compliments from

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Exporters & Manufacturer of Sponge-Iron

RUNGTA HOUSE
Chaibasa – 833 201
Jharkhand, India
Phone: (06582) 256861,256761, 256661
Cable: Rungta
Fax : 91-6582-256442
E-mail : rungtas@satyam.net.in
Website:http://www.rungtamines.com

Mines Division :

Barajamda – 833 221
Dist. Singhbhum (W)
Jharkhand, India
Phone : (06596) 262221, 262321
Fax: 91 – 6596 – 262101
Cable : Rungta

Regd. Office:

8A, Express Tower
42A, Shakespeare Sarani
Kolkata – 700 017, India
Phone : 033 - 2281 6580, 22813751
Fax : 91-33- 2281 5380
E-mail : rungta_cal@sify.com

Sponge –Iron Division

Main Road,
Barbil – 758 035
Dist. Keonjhar
Orissa, India
Phone : (06767) 276891
Telefax : 91- 6767- 276891

Makesworth Industries Ltd.

"KAMALALAYA CENTRE"
Suite 504, 5th Floor
156A, Lenin Sarani, Kolkata-700 013
Phone : 2237-8600/4776/1130, Fax : 2225-1793

MACO GEL is a high profile product of **Makesworth Industries Ltd. (MIL),** a part of the Makesworth group that excels in distribution of Industrial oils, rubber hoses, plastics and allied products in eastern India.

MACO GEL in its various grades is formulated by employing the most modern technology. This ensures total compatibility with cable polymers and coatings. It has excellent water blocking property as well as processibility for case and minimising down time during cable production.

The **MIL** plant located on the outskirts of Kolkata on Diamond Harbour Road, has state of the art technology and R & D facilities.

MACO GEL—THE PRODUCT

Category : Cable filling compounds. Soft pasty, hydrophyllic gel formulated from high quality base oil and other hi-tech ingredients which provide superior water blocking capacity over a wide temperature range.

Application : The ideal water resistant material for filling the interstices in Multipair Polyethylene insulated and sheathed telephone cables, ingress of moisture into cable sheath damage occurs.

Features : A homogeneous compound and containing a suitable antioxidant. Easy removal by wiping from insulated conductors.

Transparent, so does not obscure the colour identification of the polyethylene insulation.

Fully compatible with polyethylene of medium and high density.

No unpleasant odour. No toxic or dermatic hazards.

Stable without migration.

FILL LONG LIFE INTO YOUR CABLE

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700007
Phone : 2268-0319

To,